नि:शुल्क वितरण हेतु

मल्हार

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

सत्र 2026-27

0771

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय सम्पत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ, चित्रांकन एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, राजेंद्र सिंह ठाकुर, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन, दक्षता विकास एवं 21वीं सदी के उन्नत कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक के रोचक विषयवस्तु से राज्य के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति एवं संदर्भों को समझने के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, वैश्विक नागरिक निर्माण एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित किए जाने हेतु स्वीकृति दी है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. के विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिए गए समुचित मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं।

हम 'छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति' को पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में उनके सक्रिय योगदान के लिए तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से जुड़े समस्त विद्वतजन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सर्वदा भविष्य के लिए बनी रहती हैं इसलिए पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं उपयोगिता के संबंध में राज्य के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं अन्य जनों से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुझाव राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ के लिए स्वागत योग्य होगा। हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य को शिक्षा के क्षेत्र में अग्र पंक्ति में स्थापित करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

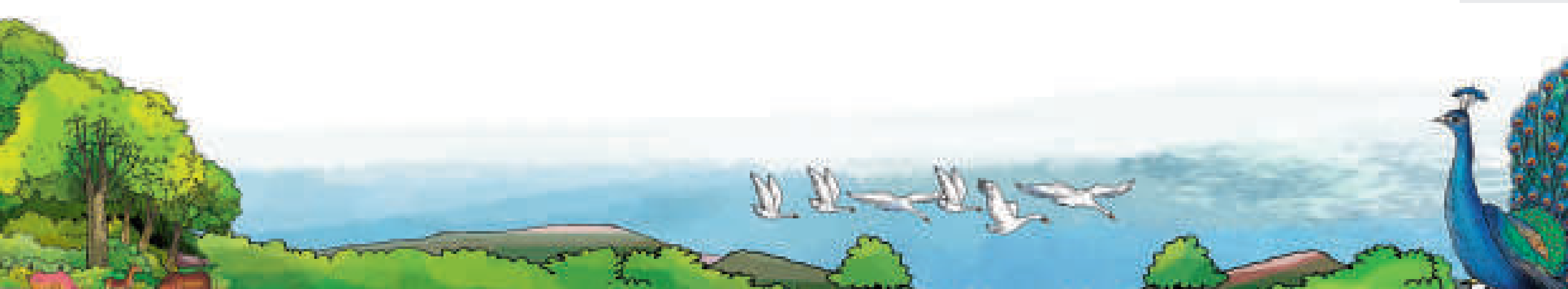

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा सन्निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। यह दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सभी स्तरों और पाठ्यचर्या क्षेत्रों में समाहित है। बुनियादी और आरंभिक स्तर मानवीय अस्तित्व के पाँचों आयामों को स्पर्श करते हुए विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं के संपोषण के साथ पंचकोश उनके अधिगम प्रतिफलों की मध्य अवस्था में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है— विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करें। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषय सम्मिलित किए गए हैं जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के मध्य इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी; ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में सम्मिलित किया जाता है। कक्षा 7 के लिए निर्मित *मल्हार* पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। इन विधाओं के अंतर्गत चयनित रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

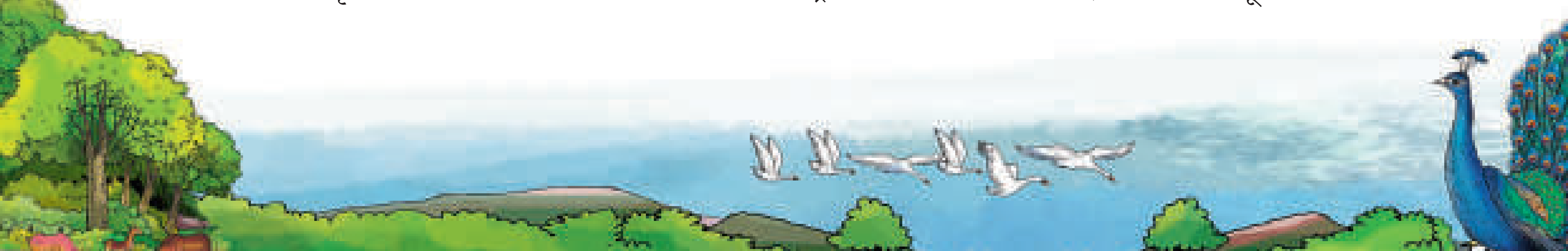

इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियाँ और प्रश्न-अभ्यास विद्यार्थी स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है, अपितु यह अत्यंत महत्वपूर्ण भी है, क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है। इसके साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त इस स्तर पर विद्यार्थियों को अन्य विभिन्न शिक्षण संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने हेतु वचनबद्ध है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जो भावी संशोधनों में सहायक हो सकते हैं।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
24 मार्च 2025

यह पुस्तक

संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता, ज्ञान परंपरा और प्रयोग, स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें, अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और उसका वर्तमान संदर्भ में प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग सम्मिलित है जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ, वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय संबद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण व आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए। भाषा का सीखना-सिखाना सभी विषय क्षेत्रों के प्रति समझ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थी के भावात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो और वे भाषिक, प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश, पर्यावरण, खेल, कला, विज्ञान, पर्यटन और नीति के प्रति सचेत हों।

कक्षा 7 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* आपको सीखने-सिखाने की एक अनोखी और आनंददायक यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आसपास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को समझ सकें। भारत की लोकतांत्रिकता, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम, शांति और सहिष्णुता की हजारों वर्ष पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, विविध परिवेशों का भी समावेशन किया गया है।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें। कक्षा 7 के लिए निर्मित इस पुस्तक में साक्षात्कार विधा भी सम्मिलित की गई है। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण-क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना उपयोगी रहेगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे— विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग किया जा सके।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने में आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में यथास्थान दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ में व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। भाषा संबंधी अवधारणाओं को और गहन स्तर पर समझने के अवसर इस पुस्तक में दिए गए हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है ताकि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक साथी, मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए यह पुस्तक अनेक स्थानों पर पाठकों से वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देते हुए पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर, विज्ञापन आदि सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंक इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में चार से आठ विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (चुनौतीपूर्ण सहित) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 7 में भी हिंदी शब्दकोश का उपयोग करने के कौशल का विकास जारी रखें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 7 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

पाठ की संरचना

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। कहीं-कहीं निबंध या पाठों में आवश्यकतानुसार पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का चार-पाँच पंक्तियों में स्तरानुरूप सरल और सरस सृजनात्मक परिचय दिया गया है। यह परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों के औपचारिक (लिखित) आकलन की प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें 'सीखने की प्रक्रिया' के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषायी कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर हो सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और कक्षा में उनकी सराहना की जाए।

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को दो-तीन बहुविकल्पी प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों के प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषायी कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए, 'माँ, कह एक कहानी' कविता में गौतम बुद्ध तथा यशोधरा के संदर्भ आए हैं। यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दें तो वे पाठ को भली प्रकार समझ सकेंगे। इसलिए इस अभ्यास में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी व्याख्या भी दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस गतिविधि में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। हो सकता है, इसके लिए उन्हें पाठ को एक बार पुन: ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिखेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक-दो उदाहरण दिए गए हैं।

अनुमान या कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिलेंगे। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा और शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव अधिक प्रबल हो सकेगा। यह प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम है।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक एवं लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। पहेलियाँ बच्चों को भाषा का सार्थक संदर्भों में उपयोग करने के अद्‌भुत और रोचक अवसर देती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और सम्पदा उपलब्ध है। इसी सम्पदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से प्रत्येक पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक विद्यार्थियों को साहित्य की झलक दिखाने का अपने आप में एक माध्यम है। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है 'झरोखे से'। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

साझी समझ– झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। गतिविधियों का भाग 'साझी समझ' यह अवसर देता है। इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

खोजबीन के लिए— पाठों से जुड़ी कुछ सामग्री (ऑडियो, वीडियो या प्रिंट के रूप) के लिंक खोजबीन के लिए दिए गए हैं ताकि विद्यार्थियों के पठन का विस्तार हो सके और साथ ही रचनाओं के प्रति उनकी समझ समृद्ध हो।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तीव्रता से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा

केवल चहारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है, बल्कि घर-परिवार, परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी सम्मिलित हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
सदस्य-समन्वयक, पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह-हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, *संगीत विशेषज्ञ*, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विजिटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई. ए. एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

अध्यक्ष

सुरेन्द्र दुबे, *उपाध्यक्ष*, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

अक्षय कुमार दीक्षित, *टी.जी.टी.* हिंदी, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, *पी.जी.टी.* हिंदी (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (अवकाश प्राप्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

श्याम सिंह सुशील, *लेखक*, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

शिव शरण कौशिक, *प्रोफेसर* हिंदी (अवकाश प्राप्त), राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान

सरिता चौधरी, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (डी.ई.पी.एफ.ई.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (भाषा विज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक*, गवर्मेंट सेकेण्डरी स्कूल कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

संयोजक:	कौस्तभ चटर्जी, डॉ.डी.के.बोदले
संपादन सहयोग:	दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)
विषय समन्वयक:	नरेन्द्र कुमार जांगड़े
सहयोग:	विनय शरण सिंह, भूषण कुमार साहू, हितेंद्र कुमार साहू, पोखन लाल जायसवाल, देवेन्द्र कुमार यदु, हिमोनी बघेल

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

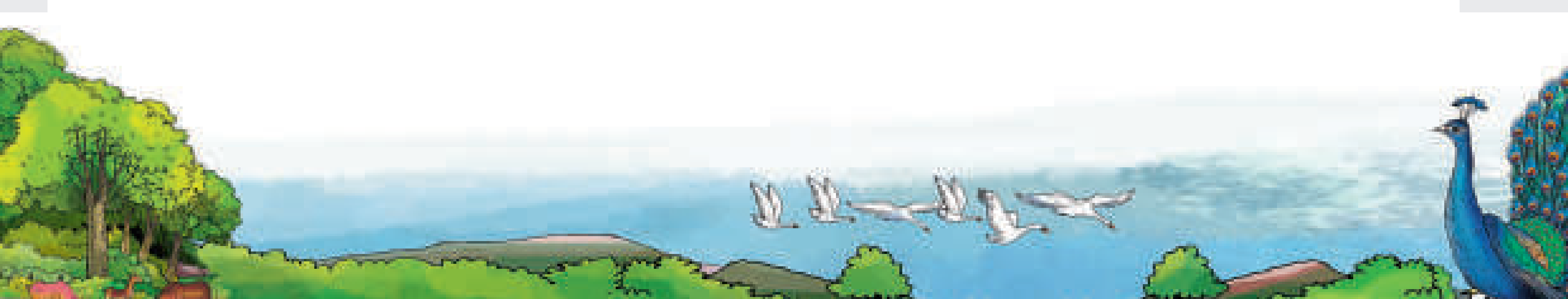

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (भाषा) के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान; *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही इन विभागों के सदस्यों का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के अंत:संबंध को सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है। साथ ही 'बिरजू महाराज से साक्षात्कार' शीर्षक रचना के लिए रत्न सागर प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली का बहुत-बहुत आभार।

परिषद्, स्वस्ति शर्मा, *परामर्शदाता,* कार्यक्रम कार्यालय, *एन.एस.टी.सी.*; सुनीत मिश्र, *वरिष्ठ शोध सहायक*; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* प्रिया, सत्यम सिंह, शुभम सिंह और अरुण कुमार; *प्रूफरीडर* सोनम सिंह; तकनीकी सहयोग हेतु *डी.टी.पी. ऑपरेटर* फरहीन फातिमा, सगीर अहमद और शारदा कुमारी का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग में संविदा पर कार्यरत दिनेश वशिष्ट, *संपादक;* कहकशा, *सहायक संपादक*; अतुल कुमार गुप्ता, *सहायक संपादक* और प्रूफरीडिंग के लिए प्रियंका, *प्रूफरीडर*; अलका, *प्रूफरीडर*; राहिल अंसारी, *प्रूफरीडर*; आफरीन, *प्रूफरीडर* के प्रति आभार व्यक्त करती है और इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* मोहन सिंह, विवेक मंडल, पूनम डोबरियाल एवं अमजद हुसैन के प्रति भी आभार व्यक्त करती हैं।

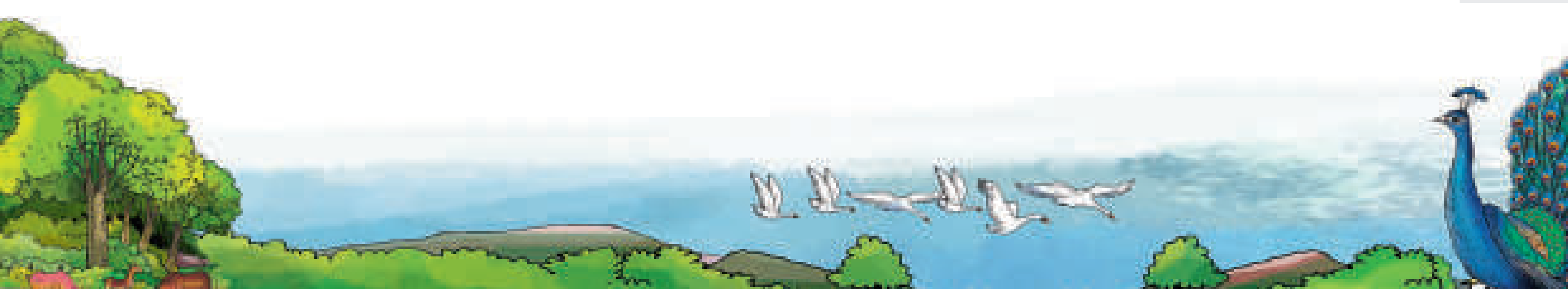

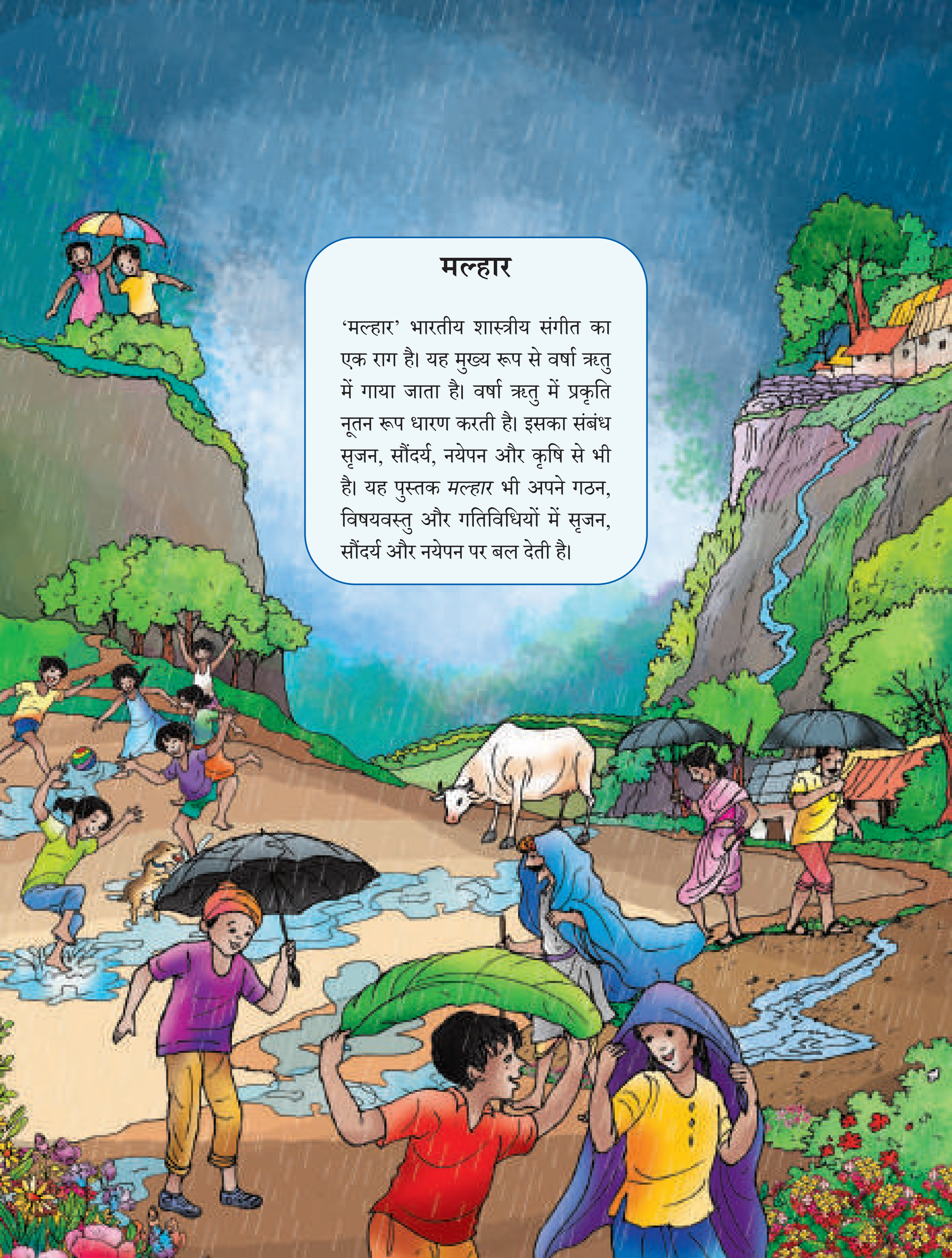

मल्हार

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इसका संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक *मल्हार* भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

विषय-क्रम

प्राक्कथन			*iii*
आमुख			*iv*
यह पुस्तक			*vi*
भाषा संगम (बांग्ला कविता का हिंदी अनुवाद)			*xx*
1.	माँ, कह एक कहानी (कविता)	*मैथिलीशरण गुप्त*	1
2.	तीन बुद्धिमान (लोककथा)		14
	मितानी (छत्तीसगढ़ लोककथा) *(पढ़ने के लिए)*		
3.	वर्षा-बहार (कविता)	*मुकुटधर पांडेय*	31
	करिया बादर *(पढ़ने के लिए)*		
4.	पानी रे पानी (निबंध)	*अनुपम मिश्र*	45
	विश्वेश्वरैया *(पढ़ने के लिए)*		
5.	नहीं होना बीमार (कहानी)	*स्वयं प्रकाश*	61
6.	गिरिधर कविराय की कुंडलिया (कविता)	*गिरिधर कविराय*	77
7.	फूल और काँटा (कविता)	*अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*	87
8.	बिरजू महाराज से साक्षात्कार	*विद्यार्थियों द्वारा*	99
	नृत्यांगना सुधा चंद्रन *(पढ़ने के लिए)*		
	पंडवानी गायिका- पद्मविभूषण श्रीमती तीजनबाई *(पढ़ने के लिए)*		
9.	चिड़िया (कविता)	*आरसी प्रसाद सिंह*	121
10.	मीरा के पद (पद)	*मीरा*	133
	स्वामिभक्त सुमुख *(पढ़ने के लिए)*		
	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा *(पढ़ने के लिए)*		
	सड़क चिन्ह एवं सड़क संकेत		149
	शब्दकोश		151
	'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती		*158*
	पहेलियों के उत्तर		*159*

फूलों का स्कूल

आकाश में बादल छा जाने पर
आषाढ़ में वर्षा होने पर
खेतों की मेंड़ उलांघती गीली गीली पुरवाई आकर
बाँस-वन में शहनाई बजाती है,
न जाने सहसा कहाँ से
झुंड के झुंड फूल आकर नाचने लग जाते हैं
हरी घास पर
बड़ी उमंग से।

माँ, मुझे लगता है
इन फूलों का स्कूल शायद
कहीं लुकी छिपी जगह पर है, मिट्टी के नीचे
जहाँ दरवाजे बंद करके वे लोग
पढ़ाई की किताबें पढ़ते हैं और
समय होने से पहले
बारिश हुई तो उनके
स्कूल की छुट्टी हो जाती है।

जंगल में पेड़ों की टहनियाँ टकराती हैं
पागल हवा से पत्ते काँपते हैं
बारिश अपने विशाल हाथ ठोंककर
गड़गड़ाहट फैलाती है
और पीले, नारंगी, सफेद
रंगों की पोशाकें पहन
निकल आते हैं बच्चे।

मालूम है मुझे
किसके लिए नाच रहे हैं वे हाथ उठाए
क्योंकि उनकी भी माँ है
जैसी मेरी है माँ।

—रवींद्रनाथ टैगोर

1 माँ, कह एक कहानी

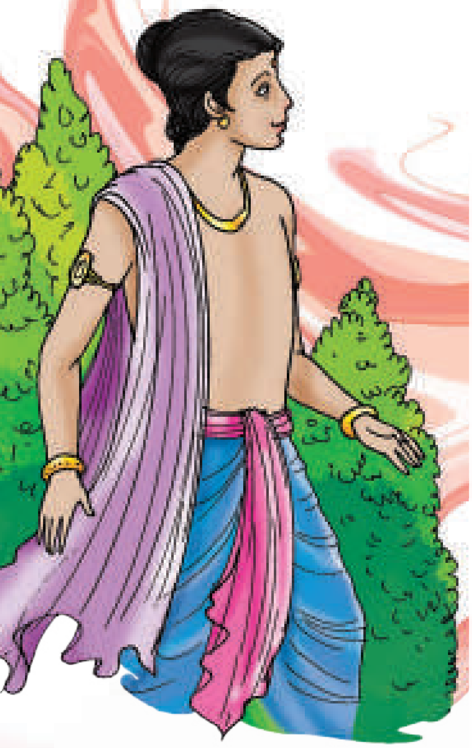

"माँ, कह एक कहानी।"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?"

"कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी!
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,

राजा था या रानी?
राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी।"

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,

0771CH01

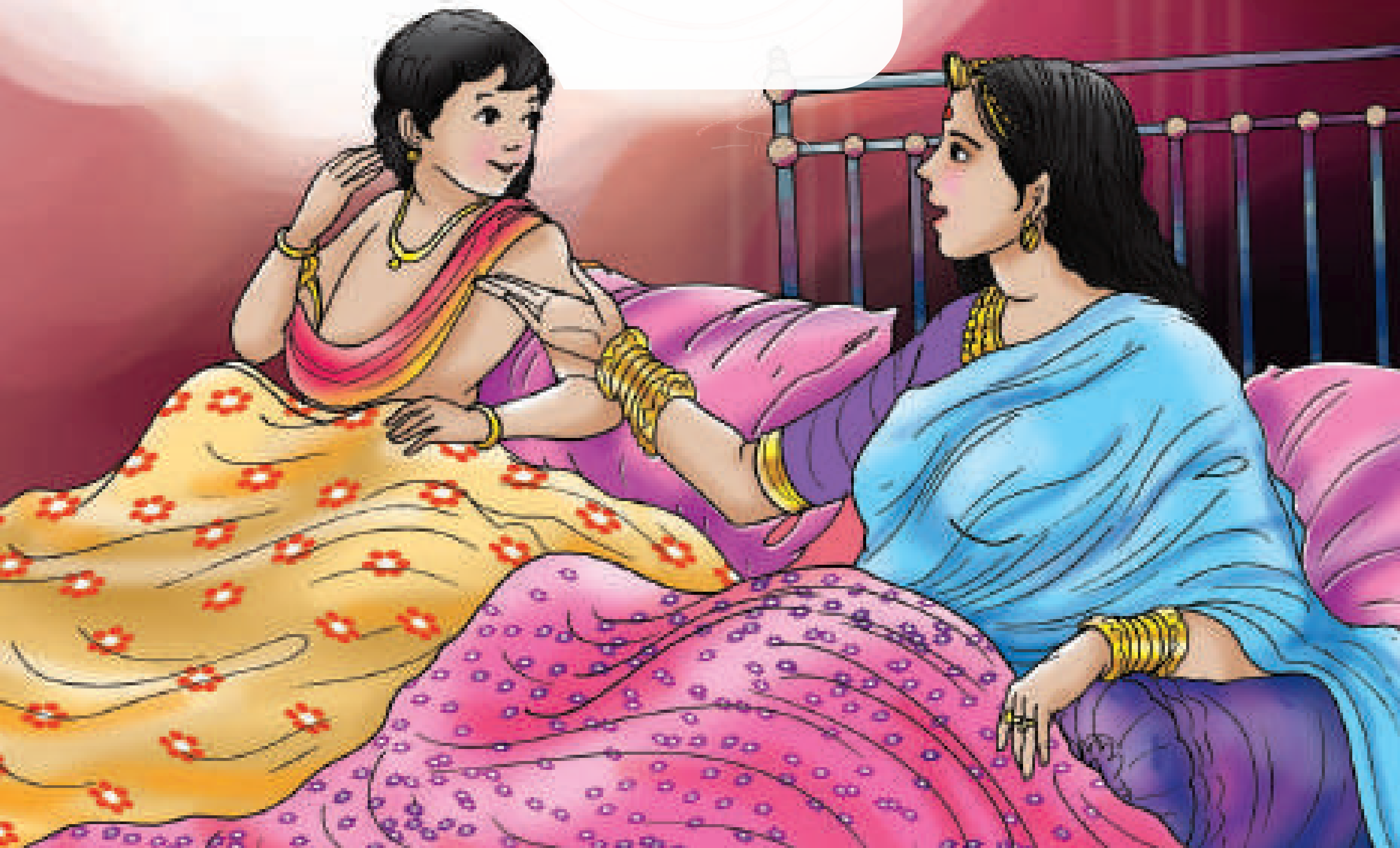

जहाँ, सुरभि मनमानी।"
"जहाँ सुरभि मनमानी?
हाँ, माँ, यही कहानी।"

"वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,

लहराता था पानी।"
"लहराता था पानी?
हाँ, हाँ, यही कहानी।"

"गाते थे खग कल कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से,

हुई पक्ष की हानी!"
"हुई पक्ष की हानी?
करुणा-भरी कहानी!"

"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया।
इतने में आखेटक आया,

लक्ष्य-सिद्धि का मानी।"
"लक्ष्य-सिद्धि का मानी?
कोमल-कठिन कहानी।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी।
तब उसने, जो था खगभक्षी–

हठ करने की ठानी।"
"हठ करने की ठानी?
अब बढ़ चली कहानी।"

"हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,

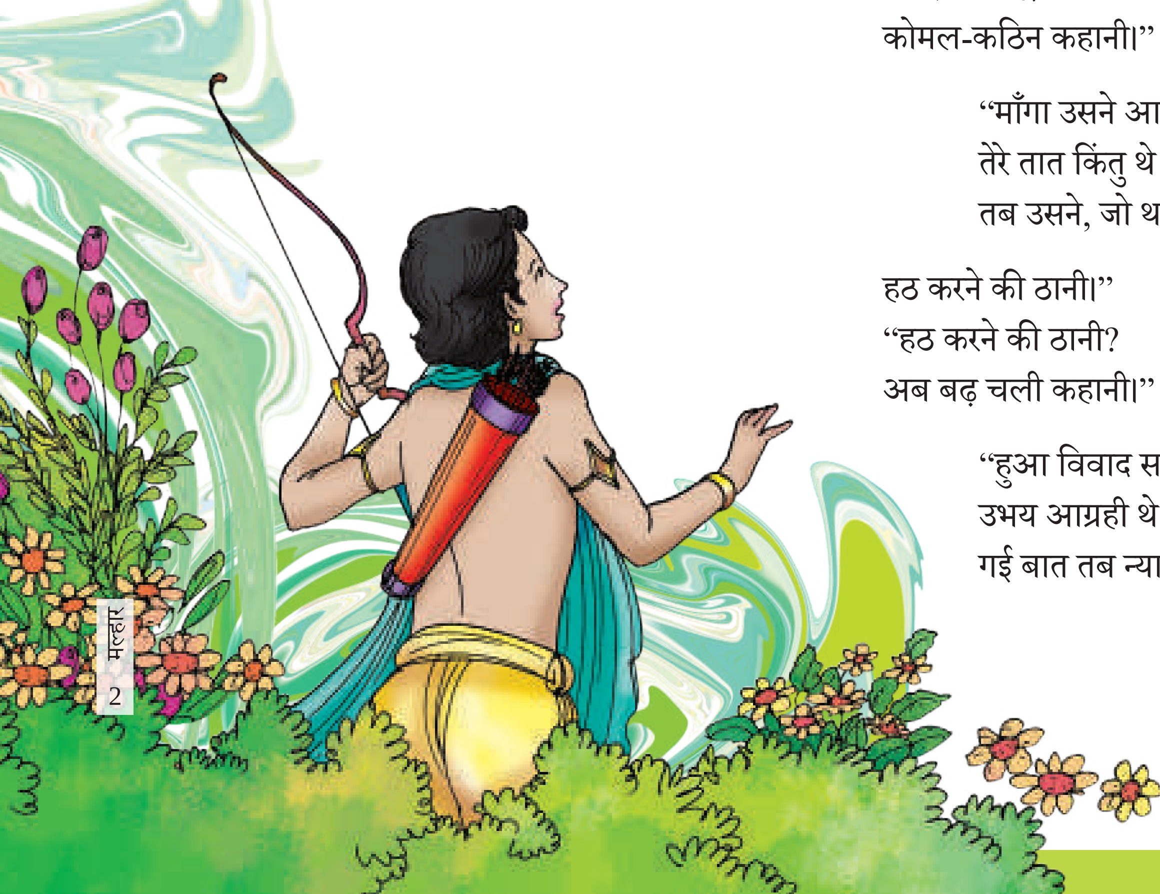

सुनी सभी ने जानी।”
“सुनी सभी ने जानी?
व्यापक हुई कहानी।”

“राहुल, तू निर्णय कर इसका–
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।

सुन लूँ तेरी बानी।”
“माँ, मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।

कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी!”
“न्याय दया का दानी?
तूने गुनी कहानी।”

— मैथिलीशरण गुप्त

कवि से परिचय

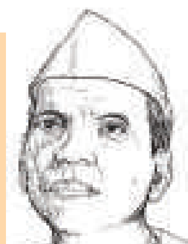

(1886–1964)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता का यह अंश— ‘माँ, कह एक कहानी’ उनकी काव्य-कृति *यशोधरा* से लिया गया है। यह माँ यशोधरा और बेटे राहुल के बीच संवाद शैली में रचा गया है। मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, झाँसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। पंद्रह-सोलह वर्ष की आयु में ही वे कविता करने लगे थे। प्रारंभ में ब्रज भाषा में और फिर हिंदी में आजीवन लेखन कार्य करते रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी रचनाओं ने लोगों में देशप्रेम की भावना जगाने का काम किया। राष्ट्रकवि के रूप में इनकी ख्याति सर्वविदित है। इनकी अधिकांश कृतियों में भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना के स्वर हैं। *साकेत*, *भारत-भारती* और *यशोधरा* उनकी काव्य-कृतियाँ हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) माँ अपने बेटे को करुणा और न्याय की कहानी क्यों सुनाती है?

- राजाओं की कहानियों से उसका मनोरंजन करने के लिए।
- उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए।
- उसे परिवार की विरासत और पूर्वजों के बारे में बताने के लिए।
- उसे प्रकृति और जानवरों के बारे में जानकारी देने के लिए।

(2) कविता में घायल पक्षी की कहानी का उपयोग किस लिए किया गया है?

- निर्दोष पक्षी के प्रति आखेटक की क्रूरता दिखाने के लिए।
- पिता की वीरता और साहस पर ध्यान दिलाने के लिए।
- करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए।
- मित्रता और निष्ठा के महत्व को उजागर करने के लिए।

(3) कविता के अंत तक पहुँचते-पहुँचते बच्चे को क्या समझ में आने लगता है?

- न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए।
- निर्णय लेते समय सदैव निडर रहना चाहिए।
- आखेटकों का सदैव विरोध करना चाहिए।
- जानवरों की हर स्थिति में रक्षा करनी चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

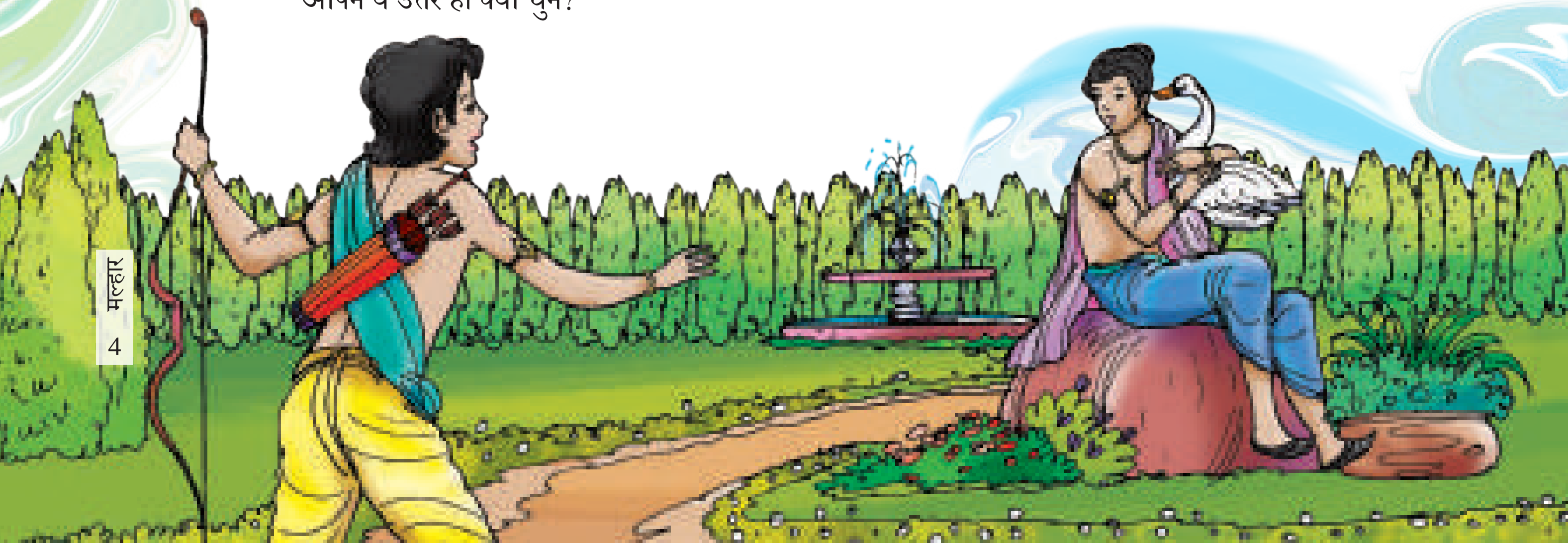

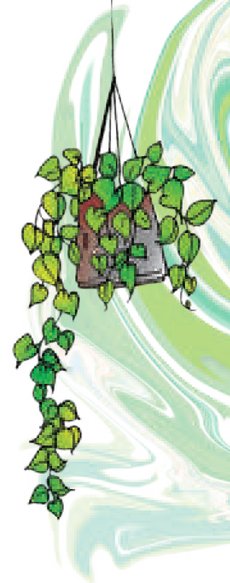

मिलकर करें मिलान

इस पाठ में आपने माँ और पुत्र के बीच की बातचीत को एक कविता के रूप में पढ़ा है। इस कविता में माँ अपने पुत्र को उसके पिता की एक कहानी सुना रही हैं। क्या आप जानते हैं कि ये माँ, पुत्र और पिता कौन हैं? अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और उन्हें पहचानकर सुमेलित कीजिए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

पात्र	ये शब्द किनके लिए आए हैं
1. बेटा	1. यशोधरा, एक राजकुमारी, सिद्धार्थ की पत्नी
2. माँ	2. सिद्धार्थ, एक राजकुमार जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए
3. तात (पिता)	3. सिद्धार्थ और यशोधरा के पुत्र राहुल

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी!"

(ख) "हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।"

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) आपके विचार से इस कविता में कौन-सी पंक्ति सबसे महत्वपूर्ण है? आप उसे ही सबसे महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं?

(ख) आखेटक और बच्चे के पिता के बीच तर्क-वितर्क क्यों हुआ था?

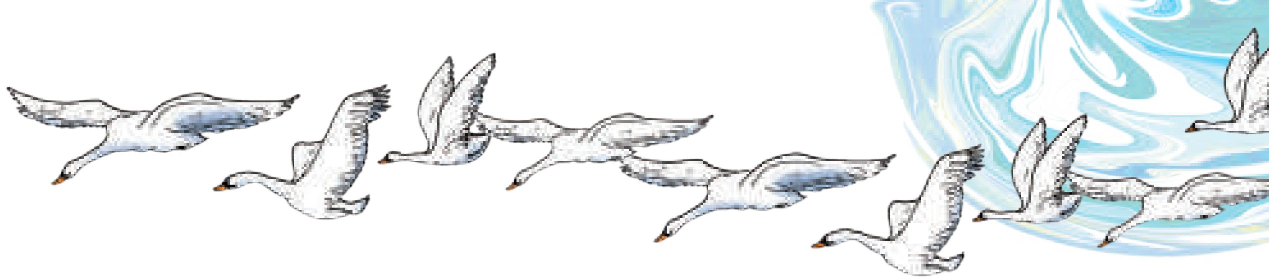

(ग) माँ ने पुत्र से "राहुल, तू निर्णय कर इसका" क्यों कहा?

(घ) यदि कहानी में आप उपवन में होते तो घायल हंस की सहायता के लिए क्या करते? आपके अनुसार न्याय कैसे किया जा सकता था?

(ङ) कविता में माँ और बेटे के बीच बातचीत से उनके बारे में क्या-क्या पता चलता है?

(संकेत — कविता पढ़कर आपके मन में माँ-बेटे के बारे में जो चित्र बनता है, जो भाव आते हैं या जो बातें पता चलती हैं, उन्हें भी लिख सकते हैं।)

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) माँ ने अपने बेटे को कहानी सुनाते समय अंत में कहानी को स्वयं पूरा नहीं किया, बल्कि उसी से निर्णय करने के लिए कहा। यदि आप किसी को यह कहानी सुना रहे होते तो कहानी को आगे कैसे बढ़ाते?

(ख) मान लीजिए कि कहानी में हंस और तीर चलाने वाले के बीच बातचीत हो रही है। कल्पना से बताइए कि जब उसने हंस को तीर से घायल किया तो उसमें और हंस में क्या-क्या बातचीत हुई होगी? उन्होंने एक-दूसरे को क्या-क्या तर्क दिए होंगे?

(ग) मान लीजिए कि माँ ने जो कहानी सुनाई है, आप भी उसके एक पात्र हैं। आप कौन-सा पात्र बनना चाहेंगे? और क्यों?

- तीर चलाने वाला
- पक्षी
- पक्षी को बचाने वाला व्यक्ति
- न्यायाधीश
- कोई अन्य पात्र जो आप कहानी में जोड़ना चाहें

संवाद

इस कविता में एक माँ और उसके पुत्र का संवाद दिया गया है लेकिन कौन-सा कथन किसने कहा है, यह नहीं बताया गया है। आप कविता में दिए गए संवादों को पहचानिए कि कौन-सा कथन किसने कहा है और उसे दिए गए उचित स्थान पर लिखिए। उदाहरण के लिए, माँ और पुत्र का एक-एक कथन दिया गया है।

पुत्र द्वारा कहे गए कथन	माँ द्वारा कहे गए कथन
1. "माँ, कह एक कहानी।"	1. "बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?"

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में प्रकृति से जुड़े शब्द कविता में से चुनकर लिखिए—

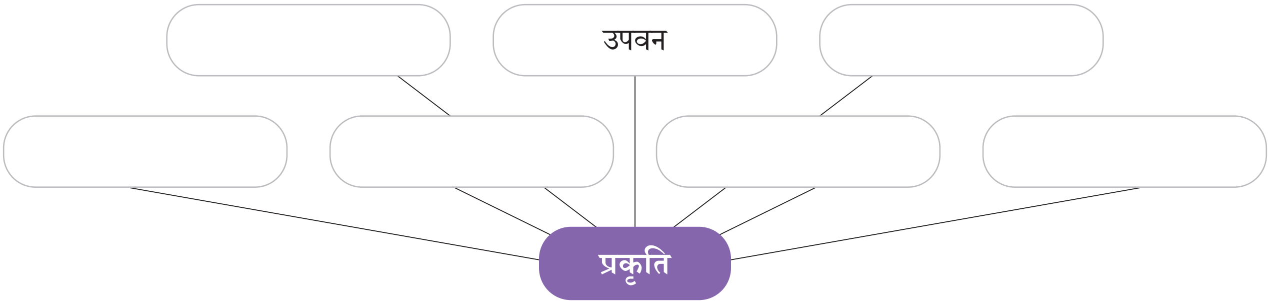

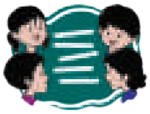

पंक्ति से पंक्ति

नीचे स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलती-जुलती पंक्तियों को रेखा खींचकर मिलाइए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. कहती है मुझसे यह चेटी	1. दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे।
2. तू है हठी मानधन मेरे	2. तू बिना डरे कह दे कि जीत किसकी होनी चाहिए।
3. झलमल कर हिम-विंदु झिले थे	3. दयालु और निर्दयी व्यक्ति में झगड़ा हुआ।
4. गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से	4. न्याय में दया सम्मिलित होती है, न्याय मारने वाले के स्थान पर बचाने वाले का पक्ष लेता है।
5. हुआ विवाद सदय-निर्दय में	5. हिम-कण/ओस की बूँदें झिलमिला रही थीं।
6. कह दे निर्भय, जय हो जिसका।	6. तूने कहानी को समझ लिया है।
7. तूने गुनी कहानी।	7. यह सेविका मुझसे यह कहती है।
8. उभय आग्रही थे स्वविषय में	8. तेज धार वाले तीर से घायल होकर गिर गया।
9. तब उसने, जो था खगभक्षी– हठ करने की ठानी।	9. हे मेरे पुत्र, तू बहुत हठ करता है।
10. रक्षक पर भक्षक को वारे न्याय दया का दानी!	10. तब उस तीर चलाने वाले ने हठ करने का निश्चय कर लिया।

कविता की रचना

"राजा था या रानी?
    राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी।"

इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों की तरह इस पूरी कविता में अनेक स्थानों पर कुछ पंक्तियाँ दो बार आई हैं। इस कारण कविता में पाठक को माँ-बेटे की बातचीत और अच्छी तरह समझ में आ जाती है। इससे कविता के सौंदर्य में भी वृद्धि हुई है।

आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी (जैसे— कविता में माँ-बेटे का संवाद दिया गया है जिसे 'संवादात्मक शैली' कहते हैं; प्रकृति और कार्यों आदि का वर्णन किया गया है जिसे 'वर्णनात्मक शैली' कहा जाता है)।

(क) इस कविता को एक बार पुन: पढ़िए और अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ दिखाई देती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। आप कविता की पंक्तियों में एक से अधिक विशेषताएँ भी ढूँढ़ सकते हैं।

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. संवाद दिए गए हैं।	1. हुआ विवाद सदय-निर्दय में
2. पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है।	2. हुई पक्ष की हानी।
3. कुछ शब्द दो बार और साथ-साथ आए हैं।	3. बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी? कहती है मुझसे यह चेटी, तू मेरी नानी की बेटी!
4. कुछ विपरीतार्थक शब्द साथ-साथ आए हैं।	4. तू है हठी मानधन मेरे, सुन, उपवन में बड़े सबेरे
5. प्रकृति का वर्णन किया गया है।	5. कोमल-कठिन कहानी।
6. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं।	6. वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम-विंदु झिले थे, हलके झोंके हिले-मिले थे, लहराता था पानी।
7. प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं।	
8. शब्द की वर्तनी बदलकर उपयोग किया गया है।	

रूप बदलकर

"सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,"

कविता की इन पंक्तियों को निम्न प्रकार से बदलकर लिखा जा सकता है—

"सुनो! आपके पिता एक उपवन में बहुत सवेरे भ्रमण किया करते थे... "

अब आप भी पाठ के किसी एक पद को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।

कविता में विराम चिह्न

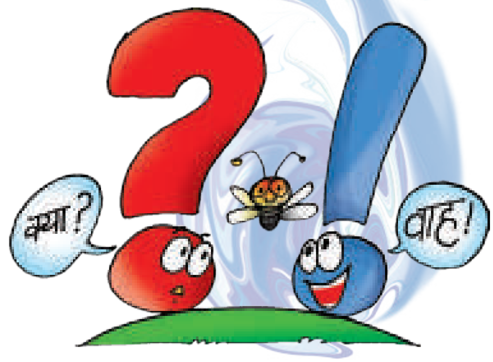

"माँ, कह एक कहानी।"

इस पंक्ति में आपको अनेक विराम चिह्न दिखाई दे रहे हैं, जैसे—

- अल्प विराम (,)
- पूर्ण विराम (।)
- उद्धरण चिह्न (" ")

इस कविता में विराम चिह्नों का बहुत अच्छा प्रयोग किया गया है। विराम चिह्न इस कविता में अनेक कार्य कर रहे हैं, जैसे यह बताना कि—

- कविता पाठ करते समय कहाँ थोड़ा रुकना है (,), कहाँ अधिक रुकना है (।)
- कौन सी पंक्ति किसने कही है? पुत्र ने या माँ ने (" ")
- कहाँ प्रश्न पूछा गया है (?)
- कौन-सी बात आश्चर्य से बोली गई है (!)

(क) नीचे कविता का एक अंश बिना विराम चिह्नों के दिया गया है। इसमें उपयुक्त स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए—

राहुल तू निर्णय कर इसका–
न्याय पक्ष लेता है किसका
कह दे निर्भय जय हो जिसका
सुन लूँ तेरी बानी
माँ मेरी क्या बानी
मैं सुन रहा कहानी
कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य उसे न उबारे
रक्षक पर भक्षक को वारे
न्याय दया का दानी
न्याय दया का दानी
तूने गुनी कहानी

(ख) अब विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए कविता को अपने समूह में सुनाइए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) “सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,”

आप या आपके परिजन भ्रमण के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं? और क्यों?

(ख) इस पाठ में एक माँ अपने पुत्र को कहानी सुना रही है। आप किस-किस से कहानी सुनते हैं या थे? आप किसको और कौन-सी कहानी सुनाते हैं?

(ग) माँ ने कहानी सुनाने के बीच में एक प्रश्न पूछ लिया था। क्या कहानी सुनाने के बीच में प्रश्न पूछना सही है? क्यों?

(घ) कविता में बालक अपनी माँ से बार-बार ‘वही’ कहानी सुनने की हठ करता है। क्या आपका भी कभी कोई कहानी बार-बार सुनने का मन करता है? अगर हाँ, तो वह कौन-सी कहानी है और क्यों?

निर्णय करें

“राहुल, तू निर्णय कर इसका–”

नीचे कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। बताइए कि इन स्थितियों में आप क्या करेंगे?

1. खेलते समय आप देखते हैं कि एक मित्र ने भूल से एक नियम तोड़ा है।
2. एक सहपाठी को कक्षा में दूसरों द्वारा चिढ़ाया जा रहा है।
3. एक समूह परियोजना के बीच एक सहपाठी अपने भाग का कार्य नहीं कर रहा है।
4. आपके दो मित्रों के बीच एक छोटी-सी बात पर तर्क-वितर्क हो रहा है।
5. एक सहपाठी को कुछ ऐसा करने के लिए अनुचित रूप से दंडित किया जा रहा है जिसे उसने नहीं किया।
6. एक सहपाठी प्रतियोगिता में हार जाने पर उदास है।
7. कक्षा में चर्चा के बीच एक सहपाठी संकोच कर रहा है और बोलने का अवसर नहीं पा रहा है।
8. सहपाठी किसी विषय में संघर्ष कर रहा है और आपसे सहायता माँगता है।

सुनी कहानी

हमारे देश और विश्व में अनेक कहानियाँ लोग एक-दूसरे को सैकड़ों-हजारों सालों से सुनते-सुनाते रहे हैं। इन कहानियों को लोककथाएँ कहते हैं। अपने घर या आस-पास सुनी-सुनाई जाने वाली किसी लोककथा को लिखकर कक्षा में सुनाइए। आपने जिस भाषा में लोककथा सुनी है या जिस भाषा में आप लोककथा लिखना चाहें, लिख सकते हैं। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित लोककथाओं को जोड़कर एक पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।

आज की पहेली

नीचे कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। इनके उत्तर आपको कविता में से मिल जाएँगे। पहेलियाँ बूझिए—

पहेली 1

नानी की बेटी है कौन?
मामा की बहना है कौन?
भार्या है पिता की कौन?
भाभी है चाचा की कौन?

पहेली 2

आसमान में उड़-उड़ जाए,
तरह-तरह के गाने गाए,
पर फैलाकर करता सैर,
दो हैं जिसके पर और पैर।

पहेली 3

बागों में जो सुगंध फैलाती,
फूल-फूल में बसती गाती,
हवा-हवा में घुल-मिल जाए,
कौन है जो यह नाम बताए?

खोजबीन के लिए

- माँ, कह एक कहानी

  https://www.youtube.com/watch?v=nQUltEEDx4s&ab_channel=NCERTOFFICIAL

- हंस किसका

  https://www.youtube.com/watch?v=O6Jnj49jMGc&ab_channel=NCERTOFFICIAL

- मैथिलीशरण गुप्त द्वारा एक कविता का पाठ

  https://www.youtube.com/watch?v=sIWB9ZasRNY&t=126s&ab_channel=PrasarBharatiArchives

2 तीन बुद्धिमान

एक समय की बात है कि एक निर्धन व्यक्ति के तीन बेटे थे। वह प्राय: अपने बेटों से कहता– "मेरे बेटो! हमारे पास न तो रुपया-पैसा है और न ही सोना-चाँदी। इसलिए तुम्हें एक दूसरे प्रकार का धन संचित करना चाहिए— हर वस्तु और स्थिति को पूर्णत: समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए। रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"

समय बीता और कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। बेटे मिलकर बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले– "हमारे लिए यहाँ कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, घूम फिरकर जगत देखें। आवश्यकता होने पर हम चरवाहों या खेत में श्रमिकों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।"

अंतत: वे तैयार होकर यात्रा पर चल दिए।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियाँ लाँघीं और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे।

उनके पास जितना खाने-पीने का सामान था, अब तक समाप्त हो गया था। वे थककर चूर हो गए थे और उनके पैरों में छाले पड़ गए थे किंतु सड़क थी कि समाप्त होने को नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और पुन: आगे चल दिए। अंत में उन्हें अपने सामने वृक्ष और मकान दिखाई दिए— वे एक बड़े नगर के पास पहुँच गए थे।

तीनों भाई बहुत प्रसन्न हुए और शीघ्रता से पग बढ़ाने लगे।

"जब वे नगर के बिलकुल निकट पहुँच गए तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने धरती पर दृष्टि डाली और बोला—

"थोड़ी ही देर पहले यहाँ से एक बहुत बड़ा ऊँट गया है।"

वे थोड़ा और आगे गए तो मझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर देखकर बोला—

"संभवत: वह ऊँट एक आँख से नहीं देख पाता हो।"

वे कुछ और आगे गए तो सबसे छोटे भाई ने कहा—

"ऊँट पर एक महिला और एक बच्चा सवार थे।"

"बिलकुल सही!" दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले। कुछ समय पश्चात् एक घुड़सवार उनके पास से निकला। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा—

"घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ रहे हो न?" घुड़सवार ने घोड़ा रोककर उत्तर दिया—

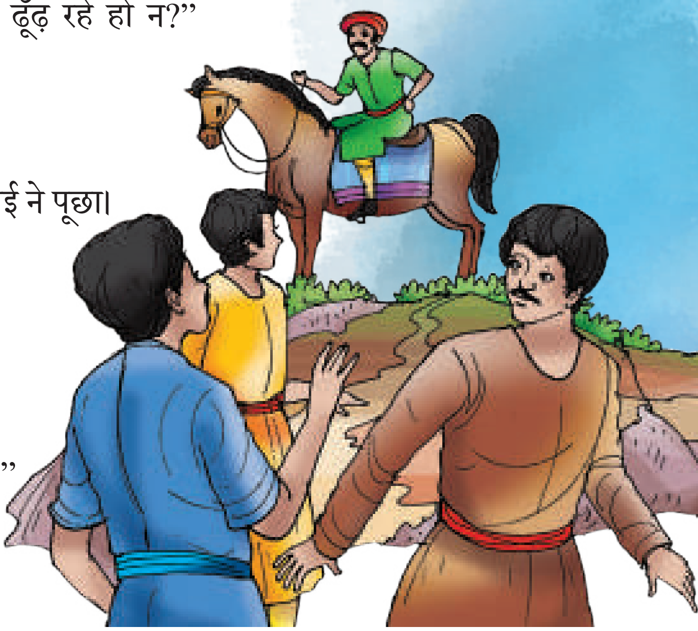

"हाँ।"

"तुम्हारा ऊँट खो गया है न?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"बहुत बड़ा-सा?"

"हाँ।"

"वह एक आँख से नहीं देख पाता है न?" मझले भाई ने पूछा।

"हाँ।"

"एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर महिला सवार थी न?" सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा और बोला—

"आह तो तुम्हारे पास है मेरा ऊँट! तुरंत बताओ, तुमने उसका क्या किया?

"हमने तुम्हारे ऊँट का मुँह तक नहीं देखा", भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो तुम्हें उसके बारे में सभी बातें कैसे पता चलीं?"

"क्योंकि हम अपनी आँखों और बुद्धि से काम लेना जानते हैं", भाइयों ने उत्तर दिया। "शीघ्रता से उस दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाओ। वहाँ तुम्हें तुम्हारा ऊँट मिल जाएगा।"

"नहीं", ऊँट के स्वामी ने उत्तर दिया, "मैं उस दिशा में नहीं जाऊँगा। मेरा ऊँट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।"

"हमने तो तुम्हारे ऊँट को देखा तक नहीं", भाइयों ने चिन्तित होते हुए कहा।

लेकिन घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे ज़ोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें सीधे अपने देश के राजा के भवन में ले गया। इन तीनों भाइयों को सुरक्षाकर्मियों को सौंपकर वह स्वयं राजा के पास गया।

"मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिए जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से ऊँट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी कारण उनका ऊँट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गए। मैं उन्हें ढूँढने गया तो मुझे रास्ते में तीन व्यक्ति मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्होंने मेरा ऊँट चुराया है और मेरी पत्नी तथा बेटे को मार डाला है।"

"तुम ऐसा क्यों समझते हो?" जब वह व्यक्ति अपनी बात कह चुका तो राजा ने पूछा।

"इसलिए कि मैंने उन लोगों से इस संबंध में एक भी शब्द नहीं कहा था फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊँट बहुत बड़ा था और एक आँख से नहीं देख पाता था तथा उस पर एक महिला बच्चे के साथ सवार थी।"

राजा ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला—

"जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताए बिना ही तुम्हारे ऊँट के विषय में उन्होंने सभी कुछ इतनी अच्छी तरह से बताया है तो अवश्य उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहाँ लाओ।"

ऊँट का स्वामी बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लेकर झटपट अंदर आया।

"चोरो, तुरंत बताओ!" राजा उन्हें धमकाते हुए बोला। "तुरंत उत्तर दो, तुमने इस आदमी का ऊँट कहाँ छिपाया है?"

"हम चोर नहीं हैं, हमने इसका ऊँट कभी नहीं देखा", भाइयों ने उत्तर दिया।

तब राजा बोला— "इस व्यक्ति के कुछ भी बताए बिना तुमने ऊँट के विषय में सब कुछ बिलकुल सही बता दिया। अब तुम यह कहने का कैसे साहस करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया?"

'महाराज, इसमें तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है।' भाइयों ने उत्तर दिया। "बचपन से ही

हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है। इसीलिए ऊँट को देखे बिना ही हमने बता दिया कि वह कैसा है।"

राजा हँस दिया।

"किसी को भी देखे बिना ही उसके विषय में क्या इतना कुछ जानना संभव हो सकता है?" उसने पूछा।

"हाँ, संभव है", भाइयों ने उत्तर दिया।

"तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सच्चाई की जाँच कर लेंगे।"

राजा ने उसी समय अपने मंत्री को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। मंत्री तुरंत महल के बाहर चला गया। लेकिन शीघ्र ही वह दो सेवकों के साथ लौटा जो एक बहुत बड़ी-सी पेटी लाए थे। दोनों ने पेटी को बहुत सावधानी से द्वार के पास ऐसे रख दिया कि वह राजा को दिखाई दे सके और स्वयं एक ओर हट गए। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को ध्यान से देखा कि पेटी कहाँ से और कैसे लाई गई थी और किस ढंग से रखी गई थी।

"हाँ, तो चोरों, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?" राजा ने कहा।

"महाराज, हम तो पहले ही यह विनती कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं", सबसे बड़े भाई ने कहा। "पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आपको यह बता सकता हूँ कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है।"

"उसमें अनार है", मझला भाई बोला।

"हाँ, और वह अभी कच्चा है", सबसे छोटे भाई ने कहा।

यह सुनकर राजा ने पेटी को पास लाने का आदेश दिया। सेवकों ने तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ने सेवकों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झाँका। जब उसे उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

आश्चर्यचकित राजा ने अनार निकालकर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊँट के मालिक से कहा—

"इन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही बुद्धिमान लोग हैं। तुम इनके बताए रास्ते पर जाकर अपने ऊँट को खोजो।"

राजा के महल में उस समय उपस्थित सभी लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था। किंतु सबसे बढ़कर तो स्वयं राजा चकित था। उसने सभी तरह के अच्छे और स्वादिष्ट भोजन मँगवाए और लगा इन भाइयों की आवभगत करने।

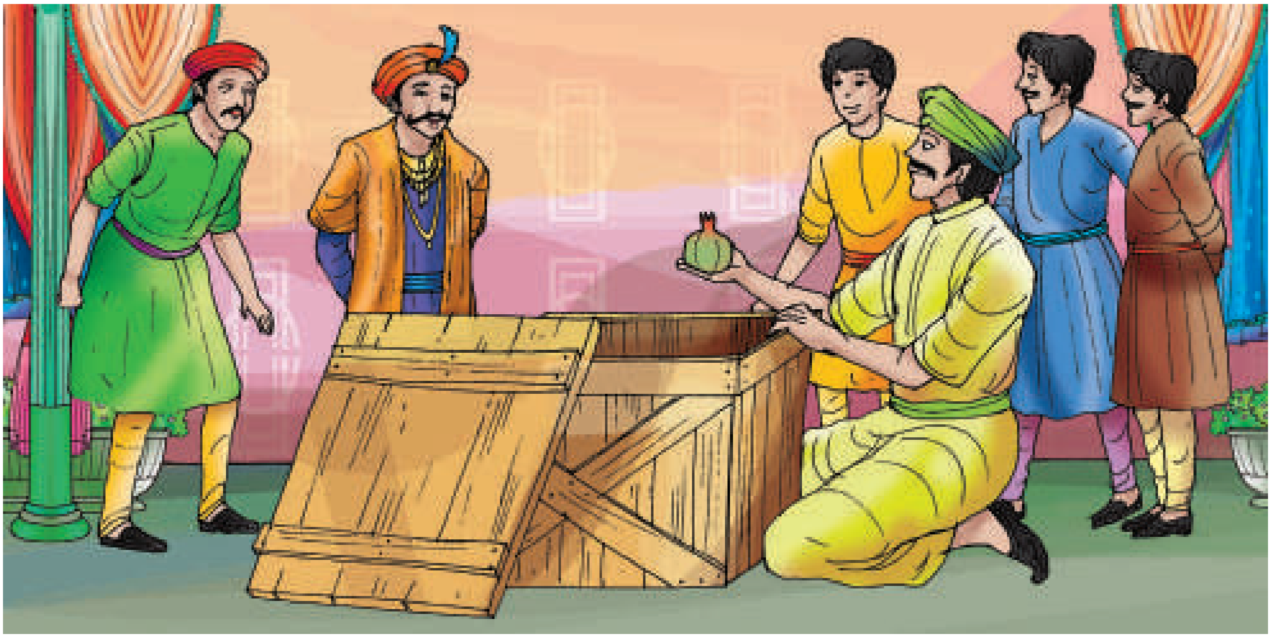

"तुम लोग बिलकुल निर्दोष हो और जहाँ भी जाना चाहो जा सकते हो। किंतु जाने से पहले तुम मुझे सारी बात विस्तार के साथ बताओ। तुम्हें यह कैसे पता चला कि उस व्यक्ति का ऊँट खो गया है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊँट कैसा था?"

सबसे बड़े भाई ने कहा—

"धूल पर उसके पैरों के चिह्नों से मुझे पता चला कि कोई बहुत बड़ा ऊँट वहाँ से गया है। जब मैंने अपने पास से जानेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नजर दौड़ाते देखा तो उसी समय मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊँट एक ही आँख से देख पाता है? उसका तो सड़क पर चिह्न नहीं रहा होगा।"

"मैंने इस बात का अनुमान ऐसे लगाया कि सड़क के दायीं ओर की घास तो ऊँट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी", मझले भाई ने उत्तर दिया।

"बहुत उत्तम!" राजा ने कहा, "तुम में से यह अनुमान किसने लगाया था कि उस पर बच्चे के साथ एक महिला सवार थी?"

"मैंने", सबसे छोटे भाई ने उत्तर दिया, "मैंने देखा कि एक स्थान पर ऊँट के घुटने टेककर बैठने के चिह्न बने हुए थे। उनके पास ही रेत पर एक महिला के जूतों के चिह्न दिखाई दिए। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के चिह्न थे, जिससे मुझे पता चला कि महिला के साथ एक बच्चा भी था।"

"बहुत अच्छा! तुमने बिलकुल सही कहा है", राजा बोला— "लेकिन तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रही।"

सबसे बड़े भाई ने कहा—

"जिस तरह दोनों व्यक्ति उसे उठाकर लाए थे, उससे बिलकुल स्पष्ट था कि वह थोड़ी भी भारी नहीं है। जब वे पेटी को रख रहे थे तो मुझे उसके अंदर किसी छोटी-सी गोल वस्तु के लुढ़कने की ध्वनि सुनाई दी।"

मझला भाई बोला—

"मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूँकि पेटी उद्यान की ओर से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल वस्तु है तो वह अवश्य अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनार के बहुत-से पेड़ लगे हुए हैं।"

"बहुत अच्छा!" राजा ने कहा और उसने सबसे छोटे भाई से पूछा—

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?"

"इस समय तक उद्यान में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप स्वयं ही देख सकते हैं", उसने उत्तर दिया और खुली हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

राजा ने बाहर देखा तो पाया कि उद्यान में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

राजा इन भाइयों की असाधारण पैनी दृष्टि और तीक्ष्ण बुद्धि से चकित रह गया।

"धन-संपत्ति या सांसारिक वस्तुओं की दृष्टि से तो तुम धनवान नहीं हो लेकिन तुम्हारे पास बुद्धि का बहुत बड़ा कोष है", उसने प्रशंसा करते हुए कहा और उन्हें अपने दरबार में रख लिया।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) लोककथा के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) लोककथा में पिता ने अपने बेटों से 'धन संचय करने' को कहा। उनकी इस बात का क्या अर्थ हो सकता है?

- खेती-बारी करना और धन इकट्ठा करना
- पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना
- ऊँट का व्यापार करना
- गाँव छोड़कर किसी नगर में जाकर बसना

(2) तीनों भाइयों ने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करके ऊँट के बारे में बहुत-कुछ बता दिया। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

- बुद्धि का प्रयोग करके ऊँट के बारे में सब-कुछ बताया जा सकता है।
- समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है।
- किसी व्यक्ति का ज्ञान, बुद्धि और धन ही सबसे बड़ी ताकत है।
- ऊँट के बारे में जानने के लिए दूसरों पर भरोसा करना चाहिए।

(3) राजा ने भाइयों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास क्यों किया?

- भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया।
- राजा को ऊँट के स्वामी की बातों पर संदेह था।
- राजा ने स्वयं ऊँट और पेटी की जाँच कर ली थी।
- भाइयों ने राजा को अपनी बात में उलझा लिया था।

(4) लोककथा के पात्रों और घटनाओं के आधार पर, राजा के निर्णय के पीछे कौन-सा मूल्य छिपा है?

- दोषी को कड़ा से कड़ा दंड देना हर समस्या का सबसे बड़ा समाधान है।
- अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।
- राजा की प्रत्येक बात और निर्णय को सदा सही माना जाना चाहिए।
- ऊँट की चोरी के निर्णय के लिए सेवक की बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने भिन्न-भिन्न उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने।

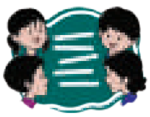

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) *"रुपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।"*

(ख) *"हर वस्तु और स्थिति को पूर्णत: समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए।"*

(ग) *"हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के काम में बहुत समय लगाया है।"*

मिलकर करें मिलान

इस लोककथा में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनके भाव/अर्थ से मिलते-जुलते वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 के वाक्यों को स्तंभ 2 के उपयुक्त वाक्यों से सुमेलित कीजिए—

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे।	1.	घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा।
2.	हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।	2.	थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया।
3.	घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा।	3.	लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्चर्य व्यक्त करना मुश्किल था।
4.	बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते।	4.	बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं।
5.	लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।	5.	हम चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।

सोच-विचार के लिए

लोककथा को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) तीनों भाइयों ने बिना ऊँट को देखे उसके विषय में कैसे बता दिया था?

(ख) आपके अनुसार इस लोककथा में सबसे अधिक महत्व किस बात को दिया गया है— तार्किक सोच, अवलोकन या सत्यवादिता? लोककथा के आधार पर समझाइए।

(ग) लोककथा में राजा ने पहले भाइयों पर संदेह किया लेकिन बाद में उन्हें निर्दोष माना। राजा की सोच क्यों बदल गई?

(घ) ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर तुरंत संदेह क्यों किया? आपके विचार से उसे क्या करना चाहिए था जिससे उसे अपना ऊँट मिल जाता?

(ङ) पिता ने बेटों को "दूसरे प्रकार का धन" संचित करने की सलाह क्यों दी? इससे पिता के बारे में क्या-क्या पता चलता है?

(च) राजा ने भाइयों की परीक्षा लेने के लिए पेटी का उपयोग किया। इस परीक्षा से राजा के व्यक्तित्व और निर्णय शैली के बारे में क्या-क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(छ) आप इस लोककथा के भाइयों की किस विशेषता को अपनाना चाहेंगे और क्यों?

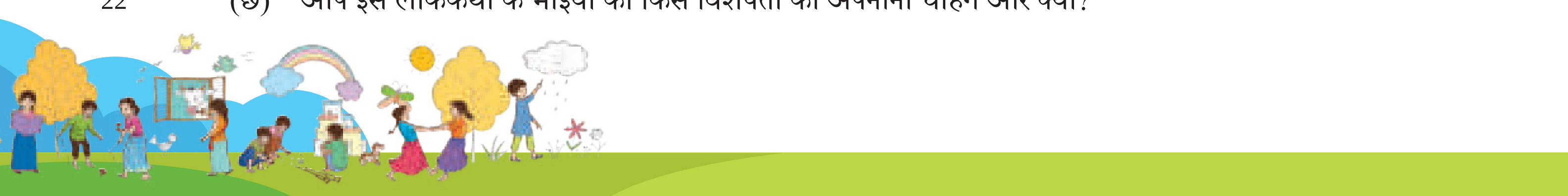

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का क्या परिणाम होता?

(ख) यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत किस प्रकार होता? अपने विचार व्यक्त करें।

(ग) लोककथा में यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने जाते तो उन्हें कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था?

(घ) यदि राजा के स्थान पर आप होते तो भाइयों की परीक्षा लेने के लिए किस प्रकार के सवाल या गतिविधियाँ करते? अपनी कल्पना साझा करें।

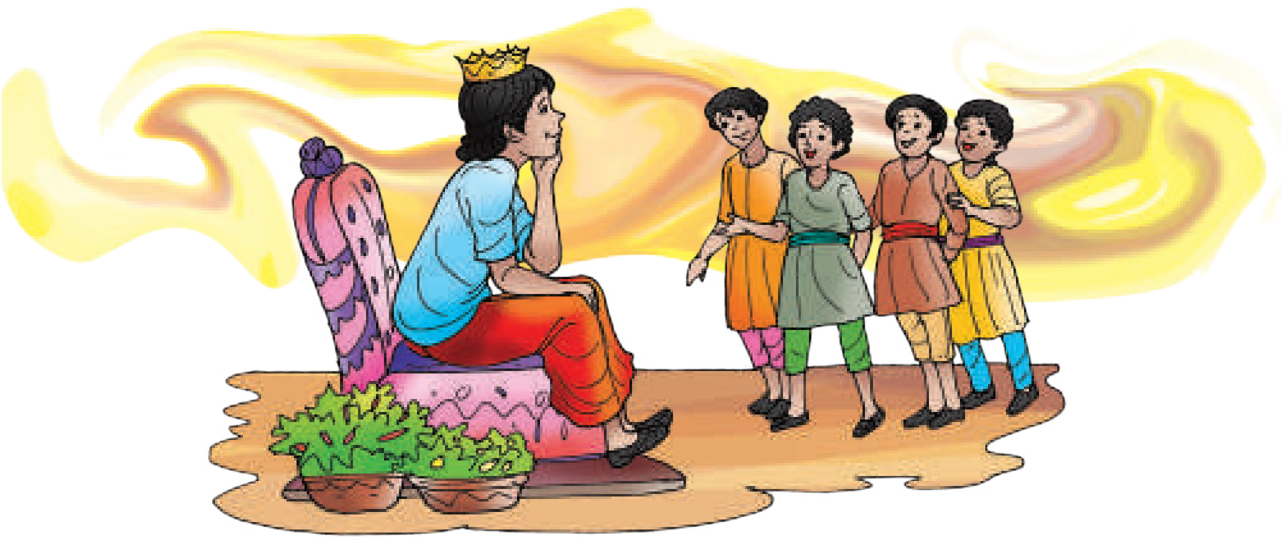

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बुद्धि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—

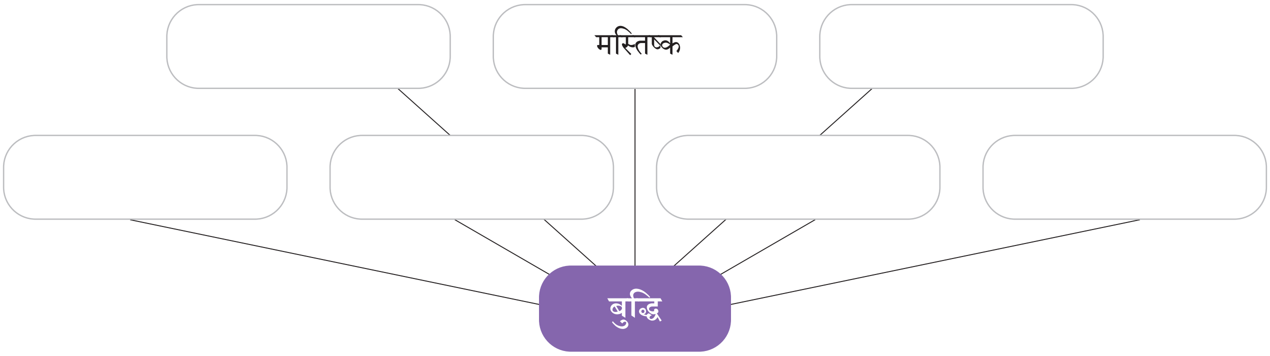

लोककथा को सुनाना

लोककथा के लिखित रूप में आने से पहले कहानियों का प्रचलन मौखिक रूप में ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। इसमें कहानी सुनने-सुनाने और याद रखने की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। कहानी कहने/सुनाने वाला इस तरह से कहानी सुनाता था कि सुनने वालों को रोचक लगे। इसमें कहानी सुनने वालों को आनंद तो आता ही था, कथा उन्हें याद भी हो जाती थी।

अब आप अपने समूह के साथ मिलकर इस लोककथा को रोचक ढंग से सुनाइए। लोककथा को प्रभावशाली और रोचक रूप में सुनाने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं जो लोककथा को और भी आकर्षक बना सकते हैं—

कथा सुनाना

- **स्वर में उतार-चढ़ाव**– लोककथा सुनाते समय स्वर में/आवाज में उतार-चढ़ाव से उत्साह और रहस्य का निर्माण करें। जब लोककथा में कोई रोमांचक या रहस्यमय पल हो तो स्वर धीमा या तीव्र कर सकते हैं।
- **भावनाओं की अभिव्यक्ति**– भावनाओं को प्रकट करने के लिए स्वर का सही चयन करें, जैसे खुशी, दुख, आश्चर्य आदि को स्वर के माध्यम से दर्शाएँ।
- **लोककथा के पात्रों के लिए अलग-अलग स्वर**– जब लोककथा में अलग-अलग पात्र हों तो हर पात्र के लिए अलग स्वर (ऊँचा, नीचा, तेज, धीमा आदि) का उपयोग किया जा सकता है ताकि उन्हें पहचाना जा सके।
- **हाथों और शरीर का उपयोग**– जब आप लोककथा में किसी घटना का वर्णन करें तो शारीरिक मुद्राओं और चेहरे के भावों का उपयोग किया जा सकता है।
- **हास्य का प्रयोग**– जब कोई हास्यपूर्ण या आनंददायक दृश्य हो तो चेहरे की मुसकान और हँसी के साथ उसे प्रस्तुत करें।
- **विवरणात्मक भाषा का उपयोग**– लोककथा में वर्णित स्थानों और पात्रों को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि श्रोता उनकी छवि अपने मन में बना सकें।
- **रोचक मोड़**– एक-दो बार लोककथा के रोमांचक मोड़ों पर थोड़ी देर के लिए रुकें या श्रोताओं में उत्सुकता होने दें, जैसे "क्या आप जानना चाहते हैं कि आगे क्या हुआ?"
- **संवादों को स्पष्ट और प्रासंगिक बनाना**– पात्रों के संवाद इस तरह से प्रस्तुत करें कि वे मौलिक लगें।

कारक

नीचे दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़िए—

"भाइयों जवाब दिया।"

यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा है न? अब नीचे दिए गए वाक्य को पढ़िए—

"भाइयों ने जवाब दिया।"

इन दोनों वाक्यों में अंतर समझ में आया? बिलकुल सही पहचाना आपने! दूसरे वाक्य में 'ने' शब्द 'भाइयों' और 'जवाब दिया' के बीच संबंध को जोड़ रहा है। संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होने वाले शब्दों के ऐसे रूपों को कारक या परसर्ग कहते हैं। कारक शब्दों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

ने, को, पर, से, के द्वारा, का, में, के लिए, की, के, हे, हो, अरे,

नीचे दिए गए वाक्यों में कारक लिखकर इन्हें पूरा कीजिए –

1. "हमने तो तुम्हारे ऊँट ______ देखा तक नहीं", भाइयों ______ परेशान होते हुए कहा।
2. "मैं अपने रेवड़ों ______ पहाड़ों ______ लिये जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे ______ साथ एक बड़े-से ऊँट ______ मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।"
3. राजा ______ उसी समय अपने मंत्री ______ बुलाया और उसके कान ______ कुछ फुसफुसाया।
4. यह सुनकर राजा ______ पेटी ______ पास लाने ______ आदेश दिया। सेवकों ______ तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ______ सेवकों ______ पेटी खोलने ______ लिए कहा।

सूचनापत्र

कल्पना कीजिए कि आप इस लोककथा के वह घुड़सवार हैं जिसका ऊँट खो गया है। आप अपने ऊँट को खोजने के लिए एक सूचना कागज पर लिखकर पूरे शहर में जगह-जगह चिपकाना चाहते हैं। अपनी कल्पना और लोककथा में दी गई जानकारी के आधार पर एक सूचनापत्र लिखिए।

सूचनापत्र

____

____

____

____

____

____

पाठ से आगे

आपकी बात

1. लोककथा में तीन भाइयों की पैनी दृष्टि की बात कही गई है। क्या आपने कभी अपनी पैनी दृष्टि का प्रयोग किसी समस्या को हल करने के लिए किया है? उस समस्या और आप द्वारा दिये गए हल के विषय में लिखिए।

2. लोककथा में बताया गया है कि भाइयों ने "बचपन से हर वस्तु पर ध्यान देने की आदत डाली।" यदि आपने ऐसा किया है तो आपको अपने जीवन में इसके क्या-क्या लाभ मिलते हैं?

3. लोककथा में भाइयों को यात्रा करते समय अनेक कठिनाइयाँ आईं जैसे— भूख, थकान और छाले। आप अपने दैनिक जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करते हैं? लिखिए।

4. भाइयों ने बिना देखे ही ऊँट के बारे में सही-सही बातें बताईं। क्या आपको लगता है कि अनुभव और समझ से देखे बिना भी सही निर्णय लिया जा सकता है? क्या आपने भी कभी ऐसा किया है?

5. जब ऊँट के स्वामी ने भाइयों पर शंका की तो भाइयों ने बिना गुस्सा किए शांति से उत्तर दिया। क्या आपको लगता है कि कभी किसी को संदेह होने पर हमें भी शांत रहकर उत्तर देना चाहिए? क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है? ऐसे में आपने क्या किया?

6. राजा ने भाइयों की बुद्धिमानी देखकर बहुत आश्चर्य व्यक्त किया। क्या आपको कभी किसी की सोच, समझ या किसी विशेष कौशल को देखकर आश्चर्य हुआ है? क्या आपने कभी किसी से कुछ ऐसा सीखा है जो आपके लिए बिल्कुल नया और चौंकाने वाला हो?

7. लोककथा में पिता ने अपने बेटों को यह सलाह दी कि वे समझ और ज्ञान जमा करें। क्या आपको कभी किसी बड़े व्यक्ति से ऐसी कोई सलाह मिली है जो आपके जीवन में उपयोगी रही हो? क्या आप भी अपने अनुभव से किसी को ऐसी सलाह देंगे?

8. भाइयों ने अपने ऊपर लगे आरोपों के होते हुए भी सदा सच्चाई का साथ दिया। क्या आपको लगता है कि सदा सच बोलना महत्वपूर्ण है, भले ही स्थिति कठिन क्यों न हो? क्या आपको किसी समय ऐसा लगा है कि आपकी सच्चाई ने आपको समस्याओं से बाहर निकाला हो?

ध्यान से देखना-सुनना-महसूस करना

"बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी वस्तु को अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने वस्तुओं को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के काम में बहुत समय लगाया है।"

इस लोककथा में तीनों भाई आसपास की प्रत्येक घटना, वस्तु आदि को ध्यान से देखते, सुनते, सूँघते और अनुभव करते हैं, अर्थात् अपनी ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का पूरा उपयोग करते हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच होती हैं— आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। आँख से देखकर, कान से सुनकर, नाक से सूँघकर, जीभ से चखकर और त्वचा

से स्पर्श करके हम किसी वस्तु के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। आइए, अब एक खेल खेलते हैं जिसमें आपको अपनी ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का उपयोग करने के अवसर मिलेंगे।

(क) 'हाँ' या 'नहीं' प्रश्न-उत्तर खेल

चरण—

1. एक विद्यार्थी कक्षा से बाहर जाकर दिखाई देने वाली किसी एक वस्तु/स्थान का नाम चुनेगा। कक्षा के भीतर से भी कोई नाम चुना जा सकता है।
2. विद्यार्थी वापस कक्षा में आएगा और उस नाम को एक कागज पर लिख लेगा। लेकिन ध्यान रहे, वह कागज पर लिखे नाम को किसी को न दिखाए।
3. अन्य विद्यार्थी बारी-बारी से उस वस्तु का नाम पता करने के लिए प्रश्न पूछेंगे।
4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर केवल 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जाएगा।

उदाहरण के लिए—

- क्या इस वस्तु का उपयोग कक्षा में होता है?
- क्या यह खाने-पीने की चीज है?
- क्या यह लकड़ी से बनी है?
- क्या यह बिजली से चलती है?

5. सभी विद्यार्थी अधिकतम 20 प्रश्न ही पूछ सकते हैं। इसलिए उन्हें सोच-समझकर प्रश्न पूछने होंगे ताकि वे उस वस्तु का नाम पता कर सकें।
6. यदि 20 प्रश्नों के अंदर विद्यार्थी वस्तु का सही अनुमान लगा लेते हैं तो वे जीत जाएँगे।
7. अब दूसरे विद्यार्थी को बाहर भेजकर गतिविधि दोहराएँगे।
8. गतिविधि के अंत में सभी मिलकर इस खेल से जुड़े अपने अनुभवों के बारे में चर्चा करें।

(ख) **गतिविधि— 'स्पर्श, गंध और स्वाद से पहचानना'**

1. एक थैले या डिब्बे में (सावधानीपूर्वक एवं सुरक्षित) विभिन्न वस्तुएँ (जैसे— फल, फूल, मसाले, खिलौने, कपड़े, किताब, गुड़ आदि) रखें।
2. विद्यार्थियों को आँखों पर पट्टी बाँधकर केवल स्पर्श, गंध या स्वाद का उपयोग करके वस्तु की पहचान करनी होगी और उसका नाम बताना होगा।
3. बारी-बारी से प्रत्येक विद्यार्थी को बुलाकर उसकी आँखों पर पट्टी बाँधें।
4. उसे डिब्बे से एक वस्तु दी जाए। विद्यार्थी उसे छूकर, सूँघकर, चखकर पहचानने का प्रयास करेंगे।
5. सही पहचान करने के बाद विद्यार्थी बताएँगे कि उन्होंने उस वस्तु को कैसे पहचाना।
6. एक-एक करके सभी विद्यार्थियों को अलग-अलग वस्तुओं को पहचानने का अवसर मिलेगा।
7. अंत में सभी वस्तुओं को कक्षा में दिखाएँ और उनके बारे में चर्चा करें कि किस वस्तु को पहचानना आसान या कठिन लगा।

आज की पहेली

आपने पढ़ा कि तीनों बुद्धिमान भाई किस प्रकार अपने अवलोकन से वे बातें भी जान जाते थे जो अन्य लोग नहीं जान पाते। अब आपके सामने कुछ पहेलियाँ प्रस्तुत हैं जहाँ आपको कुछ संकेत दिए जाएँगे। संकेतों के आधार पर आपको उत्तर खोजने हैं—

1. कौन है यह प्राणी?

1. इसकी लंबी पूँछ होती है जो पेड़ों की शाखाओं के चारों ओर लिपटी रहती है।
2. इसका मुख्य आहार कीट और छोटे जीव होते हैं जिन्हें यह चुपके से पकड़ता है।
3. यह प्राणी अपने परिवेश में घुल-मिल जाता है और अपनी रंगत को बदल सकता है।
4. इसके पास तेज आँखें होती हैं जो चारों दिशाओं में देख सकती हैं।

2. रंगीन डिब्बे

एक मेज पर चार रंगीन डिब्बे बराबर-बराबर रखे हैं— लाल, हरा, नीला और पीला। बताइए पीले डिब्बे के बराबर में कौन-सा डिब्बा है? यदि—

1. लाल डिब्बा नीले डिब्बे के पास है।
2. हरा डिब्बा पीले डिब्बे के पास नहीं है।
3. पीला डिब्बा लाल डिब्बे के पास नहीं है।
4. हरा डिब्बा लाल डिब्बे के पास है।

खोजबीन के लिए

नीचे दिए गए लिंक का प्रयोग करके आप बहुत सी अन्य लोककथाएँ देख-सुन सकते हैं–

- सुनो लोककथा
  https://www.youtube.com/watch?v=JEti31XNpmA
- **दुनिया की छत**
  https://www.youtube.com/watch?v=PehlQ71udFg
- **भूल चूक लेनी देनी**
  https://www.youtube.com/watch?v=GjYW-CZIDeA

(पढ़ने के लिए)

मितानी
(छत्तीसगढ़ी लोककथा)

तरिया के निरमल पानी म खोखमा के सुग्घर-सुग्घर फूल फूले रहँय। फूल म तितली अउ भौंरा मन लुर-लुर के गीत गावत रहँय। तरिया के तीर बर, पीपर, आमा, अमली के घन पेड़ रहँय। ओ तरिया म एक ठन केछवा रहय। ओही तरिया पार के पीपर पेड़ म एक ठन मँजूर घलो रहय। एहर तीर-तखार के खेत-खार म जा के चारा चरय अउ पीपर पेड़ म बसेरा करय। जब करिया-करिया बादर उमडे-घुमड़े त मँजूर हर अपन पाँख ल छितराके झूम-झूमके नाचय। एती हवा ले पीपर पान झूम-झूमके गीत गावय अउ ताली बजावय। केछवा हर तरिया ले निकल के मँजूर के नाचा ल देख के मगन हो जाय।

केछवा हर मँजूर ल कथे-'वा भाई मँजूर, तँय तो बढ़िया नाचथस अउ तोर पाँख हर बहुत सुग्घर सजे हे। लगथे अगास के चंदा-चंदैनी हर पाँख म उतरे हैं।' सुन के मँजूर हर मनेमन मुचमुचाइस। मँजूर हर रोज पीपर के रूख ले उतर के तरिया के पार म नाचय। केछवा हर ओला मन भर के देखय। मँजूर हर तरिया के पानी पी के पीपर पेड़ म बइठ के अराम करय अइसन तरह ले मँजूर अउ केछवा म दूनों के पोठ मितानी होगे।

एक दिन मँजूर हर मगन होके नाचत रहिस त केछवा हर किहिस- "

मितान ! लकठा म आके नाचव न! काबर के तुंहर नचाई हर मोला नीक लागथे। मन के अघात ले देखे चाहत हंव ।" मँजूर ह केछवा के मया के गोठ ल टारे नइ सकिस अउ तीर म आके नाचे लगिस। अब अइसन रोज होवय. मँजूर नाचे अउ केछवा हर देखे। मितानी म मया के धार बोहाय लागिस।

एक दिन संझा सिकारी आके उहाँ अपन फाँदा ल फैला दिस। एला केछवा अउ मँजूर नइ जानिन। बिहनिया ओमा मँजूर ह फँदगे। अब तो मँजूर के करलाई होगे। अपन मितान ल कथे-"मितान! मोला बचावव, सिकारी आही, तहाँ मोला मार डारही। तोर मितानी अउ मया म परान गँवा डारहूँ, तइसे लागथे। उबारे के कुछु उदिम करव।" केछवा बड़ चतुरा रहिस। ओहर हड़बड़ाइस नहीं। फाँदा म परे मितान ल कथे-"काहीं फिकर झन करव। धीरज बाँधे रहव, तुंहला फाँदा ले छोड़ाहूँ। संकट के बेरा मितान हर मितान के काम नइ आइस त ओहर मितान नोहय।"

एती दूनो मितान के गोठ होते हे अउ ओती सिकारी आगे। फाँदा म फँदे मँजूर ल धरके फाँदा ले निकाले लगिस त केछवा हर सिकारी ल कथे " तँय तो मोर मितान ल फाँदा म फोकट फँसाए हस। एला मार के का करबे?" अतका म सिकारी हर हाँसत कथे- "फंसातेंव नहीं त का करतेंव। एहन मोर धंधा आय। एला मारँव नहीं, बजार म बेंच के रुपिया पाहूँ अउ दार-चाँउर बिसाहूँ....।"

केछवा कथे- "बस अतकेच। छोड़ दे. मोर मितान ला। जंगल के कोनो जीव ल मारे ले हत्या लगथे। एला छोड़बे त एकर बदला म तोला एक ठन बढ़िया चीज देहूँ, जेन ल बेंच के तोर परिवार बर दार-चाउँर बिसा लेबे।" सिकारी कहिस- "तोर का बिंसवास।" केछवा हर पानी भीतर बुड़िस अउ छिन भर म एक ठन मोती लान के कथे-"ले ! एहर मोती आय, बेचबे त खूब पइसा मिलही।"

सिकारी हर मोती ल लेके खुश होगे। मँजूर ल छोड़ दिस अउ कुलकत घर आइस। सिकारी के दू झन बेटा रहँय-कोंदा अउ मंसा। सिकारी हर अपन दूनो बेटा ल मोती ल देखाइस त ओला ले बर दुनो झन झगरा होय लगिन। ऊँकर मनके झगरा ल देख के सिकारी ह सोंचिस 'मोती ह बड़ कीमती हे, एला छोड़त नइ बने, अउ छोड़त हँव त घर म झगरा हे । सिकारी हर असमंजस म परगे।

एक दिन ओही मेर फाँदा ल फेर फैलाइस.... मँजूर फँदगे। एक पइँत परान बचे रहिस। अब का होही ? केछवा अउ मँजूर ल गुने ल परगे। मँजूर कथे- "मितान! एक पइँत परान ल फेर बचावव।" केछवा ल कुछू उपाय सुझत नइ रहय। कथे- "हाँ, मितान ! तोला बचाए बर गुनत हँव, ये पइँत जान बचगे त तोला ये ठउर ल छोड़के जंगल म जाए ल परही, जिंहा ये सिकारी झन जा सकय। ओहर बड़ लालची हे, मोती के लालच म घेरी-बेरी फाँदा ल खेलही।" केछवा के गोठ ल सुन के मँजूर ल थोकिन दुःख लगिस फेर सोंचिस, परान बचाय बर मितान के मया ल छोड़ के जंगल बीच जाएच ल परही। अतका म सिकारी आगे। मँजूर ल फाँदा म फँदे देख के कुलक गे। एती केछवा हर सिकारी ल कथे- "ये सिकारी भाई! मोर मितान ल काबर फँसाए हस? तोला तो महीना भर के खरचा के पुरता मोती दे रहेंव। अइसन लालच झन कर, एहर अनियाव आय।"

सिकारी कथे- "तैं तो बात बड़ नियाँव के कहत हस। एमा मोर कोती ले कोनो लालच नइये। मोती ल देखके मोर दूनो बेटा मन मोती ल ले बर झगरे लगिन, मारा-पीटा करे लगिन। ओ मन ल झगरा ले बचाय खातिर मोला फाँदा डारे बर परिस हे। अब ओइसनेच मोती लान के अउ दे देवव त मैं ह ये मँजूर ल ढील देहूँ। मोती ह ओइसनेच होना चाही-न घट, न बढ़।"

केछवा ल उपाय सूझगे। ओ ह सिकारी ल कथे "सिकारी भइया ! ओइसनेच मोती लाने खातिर पहिली वाले मोती के नाप-जोख करे बर परही, तउले बर परही। मैं तोला ओइसनेच मोती दे बर तियार हँव। फेर पहिली वाले मोती ल लान के तैं मोला दे दे।" केछवा के बात ल सुन के सिकारी के मन कुलक गे। मन म थोरिक लालच अमागे। ओहा केछवा के बात ल मान गे। फाँदा ले मँजूर ल ढील दिस, सिकारी मँजूर उड़िया गे अउ मोती ल लाय बर घर कोती दउँड़गे।

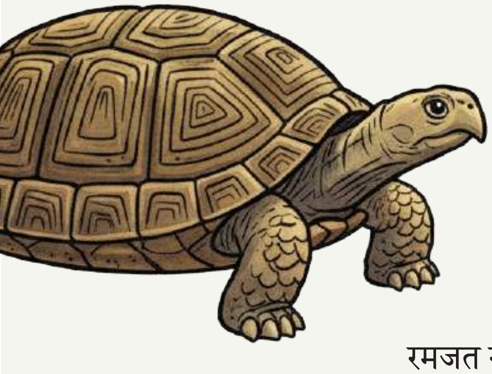

सिकारी ह मोती लान के केछवा ल दे दिस। केछवा ह मोती ल पानी म फेंक दिस अउ सिकारी ल किहिस-"तँय एक मोती लेवस नहीं अउ मॅय ह दू मोती देवँव नहीं। आज तँय बेटा मन के खातिर फाँदा डारे हस। काली अपन घर-गोसइन के कहे म फाँदा डारबे। परनदिन अपन परोसी मन खातिर इही बूता करबे। तोर लालच ह बाढ़तेच जाही। तँय लालची भर नइ हस, बिंसवासघाती घलो हस।" अइसे कहिके केछवा ह पानी भीतर डुबकी मार दिस। सिकारी ह हाथ रमजत रहिगे।

3 वर्षा-बहार

0771CH07

वर्षा-बहार सब के, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं।

चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

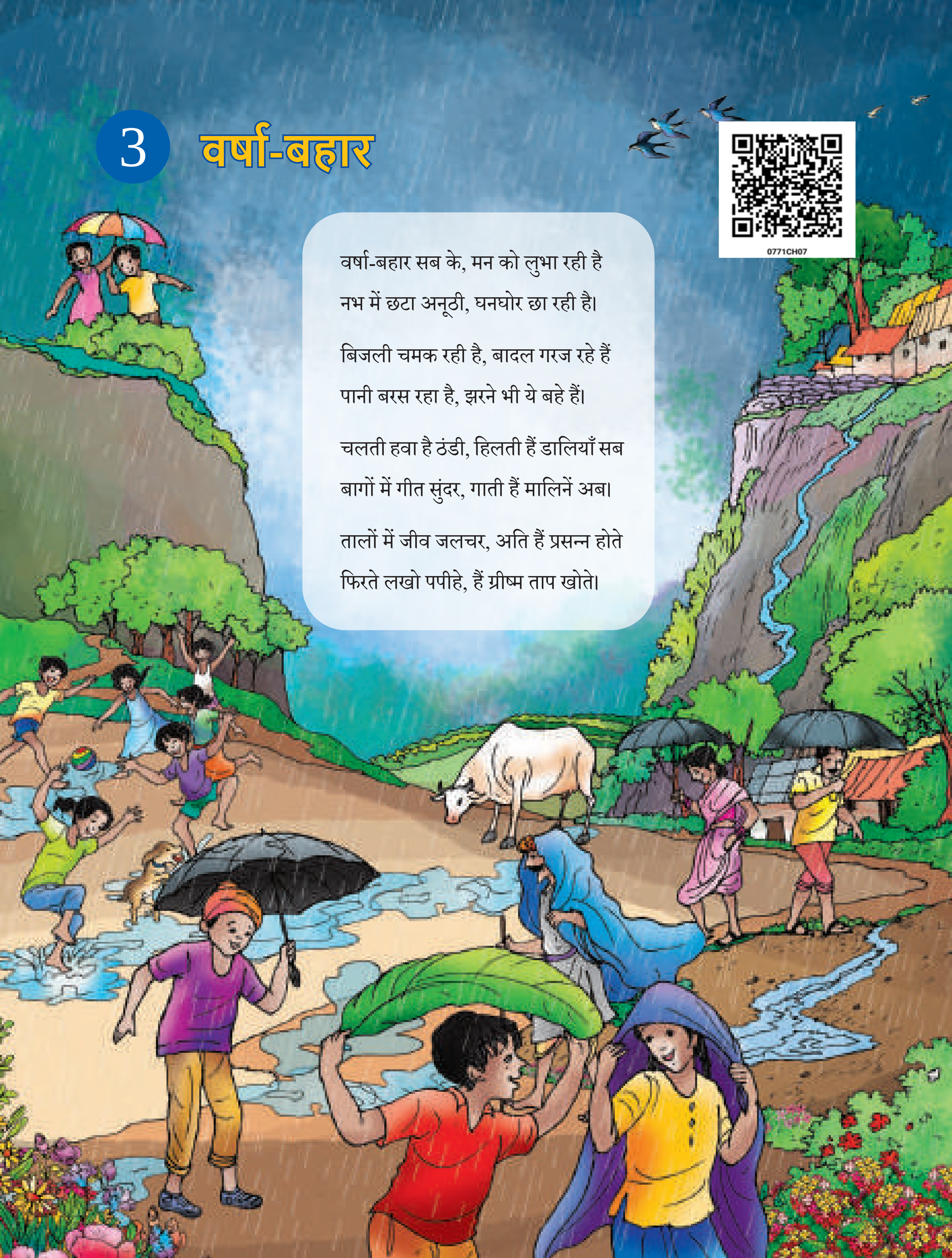

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

— *मुकुटधर पांडेय*

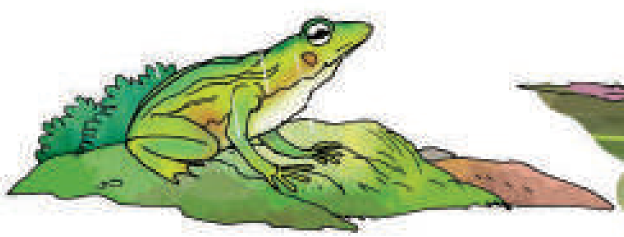

कवि से परिचय

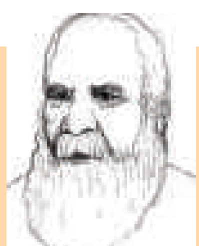

(1895–1989)

'वर्षा-बहार' का मनोरम दृश्य रचने वाले मुकुटधर पाण्डेय का जन्म छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हुआ था। प्रकृति-सौंदर्य की विभिन्न छवियाँ उनकी रचनाओं में देखने को मिलती हैं। किशोरावस्था में ही उन्होंने कविता और लेख आदि लिखना शुरू कर दिया था। उस समय की पत्रिकाओं — *सरस्वती* और *माधुरी* में उनकी रचनाएँ प्रमुखता से प्रकाशित होती थीं। हिंदी साहित्य में मुकुटधर पाण्डेय के योगदान को देखते हुए भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्मश्री' सम्मान दिया गया था।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) इस कविता में वर्षा ऋतु का कौन-सा भाव मुख्य रूप से उभर कर आता है?

- दुख और निराशा
- आनंद और प्रसन्नता
- भय और चिंता
- क्रोध और विरोध

(2) "नभ में छटा अनूठी" और "घनघोर छा रही है" पंक्तियों का उपयोग वर्षा ऋतु के किस दृश्य को व्यक्त करने के लिए किया गया है?

- बादलों के घिरने का दृश्य
- बिजली के गिरने का दृश्य
- ठंडी हवा के बहने का दृश्य
- आमोद छा जाने का दृश्य

(3) कविता में वर्षा को 'अनोखी बहार' कहा गया है क्योंकि—

- कवि वर्षा को विशेष ऋतु मानता है।
- वर्षा में सभी जीव-जंतु सक्रिय हो जाते हैं।
- वर्षा सबके लिए सुख और संतोष लाती है।
- वर्षा एक अद्भुत अनोखी प्राकृतिक घटना है।

(4) "सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर" इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

- प्रकृति में सभी जीव-जंतु एक-दूसरे पर निर्भर हैं।
- वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है।
- बादलों की सुंदरता से ही पृथ्वी की शोभा बढ़ती है।
- हमें वर्षा ऋतु से जगत की भलाई की प्रेरणा लेनी चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे।"

(ख) "चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।"

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं, उनके भावार्थ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों का स्तंभ 2 की उपयुक्त पंक्तियों से मिलान कीजिए —

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं	1. वर्षा ऋतु में तालाबों के जीव-जंतु अति प्रसन्न हैं।
2. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब	2. वर्षा हो रही है और झरने बह रहे हैं।
3. तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते	3. वर्षा आने पर लाखों पपीहे गर्मी से राहत पाते हैं।
4. फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते	4. हंसों की कतारें प्रकृति की सुंदरता और अनुशासन को दर्शाती हैं।
5. खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है	5. वर्षा में खिले हुए फूल जैसे गुलाब प्रकृति में सुगंध और ताजगी फैला रहे हैं।
6. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर	6. ठंडी हवाओं के कारण पेड़ों की सभी शाखाएँ हिल रही हैं।

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता में कौन-कौन गीत गा रहे हैं और क्यों?

(ख) "बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं"
"तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते"

दी गई दोनों पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इनमें वर्षा के दो अलग-अलग दृश्य दर्शाए गए हैं। इन दोनों में क्या कोई अंतर है? क्या कोई संबंध है? अपने विचार लिखिए।

(ग) कविता में मुख्य रूप से कौन-सी बात कही गई है? उसे पहचानिए, समझिए और अपने शब्दों में लिखिए।

(घ) "खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है" इस पंक्ति को पढ़कर एक खिलते हुए गुलाब का सुंदर चित्र मस्तिष्क में बन जाता है। इस पंक्ति का उद्देश्य केवल गुलाब की सुंदरता को बताना है या इसका कोई अन्य अर्थ भी हो सकता है?

(ङ) कविता में से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें सकारात्मक गतिविधियों का उल्लेख किया गया है, जैसे— 'गीत गाना', 'नृत्य करना' और 'सुगंध फैलाना'। इन गतिविधियों के आधार पर बताइए कि इस कविता का शीर्षक 'वर्षा-बहार' क्यों रखा गया है?

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर" कविता में कहा गया है कि वर्षा पर सारे संसार की शोभा निर्भर है। वर्षा के अभाव में मानव जीवन और पशु-पक्षियों पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?

(ख) "बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं" – बिजली चमकना और बादल का गरजना प्राकृतिक घटनाएँ हैं। इन घटनाओं का लोगों के जीवन पर क्या-क्या प्रभाव हो सकता है?

(संकेत— आप सकारात्मक और नकारात्मक यानी अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के प्रभावों के बारे में सोच सकते हैं।)

(ग) "करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे"– इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए वर्षा आने पर पक्षियों और जीवों की खुशी का वर्णन कीजिए। वे अपनी प्रसन्नता कैसे व्यक्त करते होंगे?

आपकी रचनाएँ

(क) कविता में वर्णन है कि मोर नृत्य कर रहे हैं और मेंढक सुगीत गा रहे हैं। इस दृश्य को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

(ख) वर्षा से जुड़ी किसी प्राचीन कथा या लोककथा को इस कविता से जोड़कर एक कहानी तैयार कीजिए।

(ग) इस कविता से प्रेरणा लेकर एक चित्र बनाइए। उसमें आपने क्या-क्या बनाया है और क्यों?

शब्द से जुड़े शब्द

अपने समूह में चर्चा करके 'वर्षा' से जुड़े शब्द नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए—

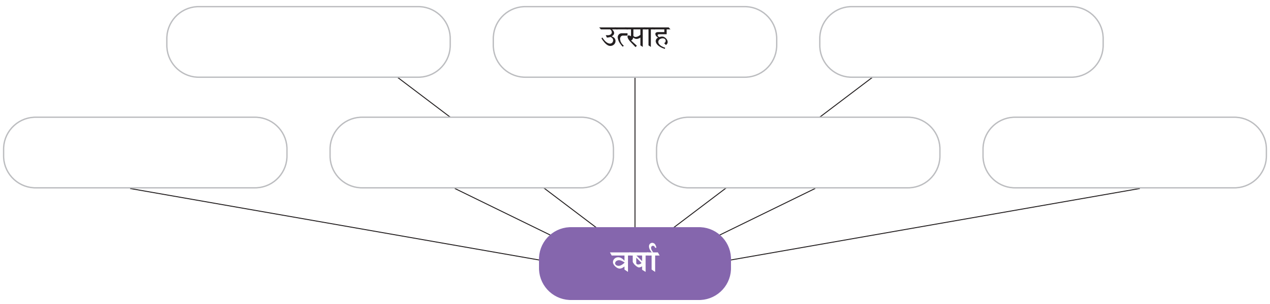

कविता की रचना

"वर्षा-बहार सब के, मन को लुभा रही है"

इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'वर्षा' एक ऋतु का नाम है। 'बहार' 'वसंत' का दूसरा नाम है। यहाँ 'वर्षा' और 'बहार' को एक साथ दिया गया है जिससे वर्षा ऋतु की सुंदरता को स्पष्ट किया जा सके।

इस कविता में ऐसी ही अन्य विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे— कविता की कुछ पंक्तियाँ सरल वाक्य के रूप में ही हैं तो कुछ में वाक्य संरचना सरल नहीं है।

अपने समूह के साथ मिलकर इस कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

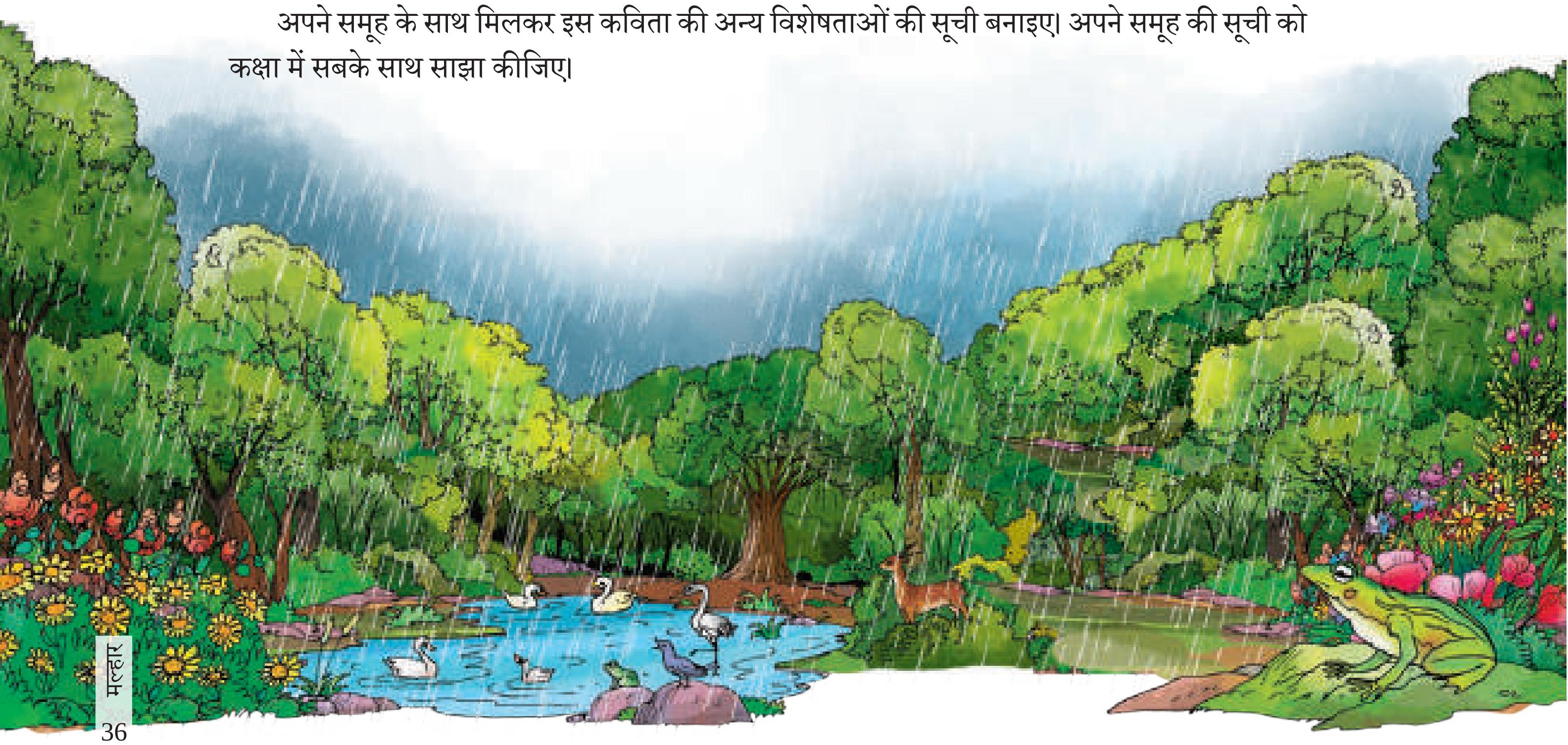

कविता का सौंदर्य

(क) नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ शब्द हटा दिए गए हैं और साथ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द भी दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द से वह पंक्ति पूरी करके देखिए। जो शब्द उस पंक्ति में जँच रहे हैं उन पर घेरा बनाइए।

_______ बहार सब के, मन को लुभा रही है (बारिश, बरसात, बरखा, वृष्टि)

_______ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है (आकाश, गगन, अंबर, व्योम)

बिजली चमक रही है, _______ गरज रहे हैं (मेघ, जलधर, घन, जलद)

_______ बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं (जल, नीर, सलिल, तोय)

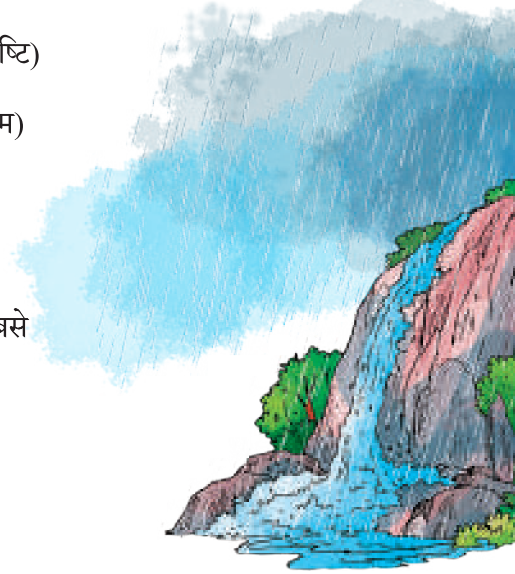

(ख) अपने समूह में विमर्श करके पता लगाइए कि कौन-से शब्द रिक्त स्थानों में सबसे अधिक साथियों को जँच रहे हैं और क्यों?

विशेषण

"बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब"

इस पंक्ति में 'सुंदर' शब्द 'गीत' की विशेषता बता रहा है अर्थात यह 'विशेषण' है। 'गीत' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है, अर्थात यह 'विशेष्य' शब्द है।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों की पहचान करके लिखिए—

	पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1.	नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है	अनूठी	छटा
2.	चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर	_______	_______
3.	मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे	_______	_______
4.	चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब	_______	_______

(ख) नीचे दिए गए विशेष्यों के लिए अपने मन से विशेषण सोचकर लिखिए—

1. वर्षा ________ ________

2. पानी ________ ________

3. बादल ________ ________

4. डालियाँ ________ ________

5. गुलाब ________ ________

ऋतु और शब्द

"फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते"

'ताप' शब्द ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा शब्द है। भारत में मुख्य रूप से छह ऋतुएँ क्रम से आती-जाती हैं। लोग इन ऋतुओं में कुछ विशेष शब्दों का उपयोग करते हैं। नीचे दिए गए शब्दों को पढ़कर कौन-सी ऋतु का स्मरण होता है? इन शब्दों को तालिका में उपयुक्त स्थान पर लिखिए—

धूप	लू	बयार	हिमपात	वृष्टि	पाला
ताप	जाड़ा	झड़ी	ठिठुरन	धुंध	कोहरा
आँधी	उमस	हरियाली	बहार	तपन	जेठ
सावन	रिमझिम	शीतलता	ओस	ठंडक	बादल फटना
कड़ाके की ठंड					

वसंत ऋतु (सामान्यत: मार्च–अप्रैल)	________
ग्रीष्म ऋतु (सामान्यत: मई–जून)	________
वर्षा ऋतु (सामान्यत: जुलाई–अगस्त)	________

शरद ऋतु (सामान्यत: सितंबर–अक्तूबर)	
हेमंत ऋतु (सामान्यत: नवंबर–दिसंबर)	
शिशिर ऋतु (सामान्यत: जनवरी–फरवरी)	

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) वर्षा के समय आपके क्षेत्र में क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

(ख) बारिश के चलते स्कूल आने-जाने के समय के अनुभव बताइए। किसी रोचक घटना को भी साझा कीजिए।

(ग) वर्षा ऋतु में आपको क्या-क्या करना अच्छा लगता है और क्या-क्या नहीं कर पाते हैं?

(घ) बारिश के मौसम में आपके आस-पड़ोस के पशु-पक्षी अपनी सुरक्षा कैसे करते हैं? उन्हें कौन-कौन सी समस्याएँ होती हैं?

(ङ) अपने समूह के साथ मिलकर वर्षा ऋतु पर आधारित एक कविता की रचना कीजिए। उसमें अपने घर और आस-पड़ोस से जुड़ी हुई बातें सम्मिलित कीजिए।

साक्षात्कार

"गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।"

मान लीजिए कि आप अपने विद्यालय की पत्रिका के पत्रकार हैं। आप एक किसान का साक्षात्कार कर रहे हैं जो वर्षा के आने पर अपने खेतों में गीत गा रहा है।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर उस किसान के साक्षात्कार के लिए कुछ प्रश्न लिखिए।

(संकेत — आपका क्या नाम है? आप क्या काम करते हैं? आप काम करते समय गीत क्यों गाते हैं? आदि)

(ख) अपने समूह के साथ मिलकर इस साक्षात्कार को अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए। आपके समूह का कोई सदस्य किसान की भूमिका निभा सकता है। अन्य सदस्य पत्रकारों की भूमिका निभा सकते हैं।

वर्षा के दृश्य

(क) वर्षा के उन दृश्यों की सूची बनाइए जिनका उल्लेख इस कविता में नहीं किया गया है। जैसे आकाश में इंद्रधनुष।

(ख) वर्षा के समय आकाश में बिजली पहले दिखाई देती है या बिजली कड़कने की ध्वनि पहले सुनाई देती है या दोनों साथ-साथ दिखाई-सुनाई देती है? क्यों? पता कीजिए।

(ग) आपने वर्षा से पहले और वर्षा के बाद किसी पेड़ या पौधे को ध्यान से अवश्य देखा होगा। आपको कौन-कौन से अंतर दिखाई दिए?

(घ) "चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर"

कविता में हंसों के कतार में अर्थात पंक्तिबद्ध रूप से चलने का वर्णन किया गया है। आपने किन-किन को और कब-कब पंक्तिबद्ध चलते हुए देखा है? (संकेत — चींटी, गाड़ियाँ, बच्चे आदि)

वर्षा में ध्वनियाँ

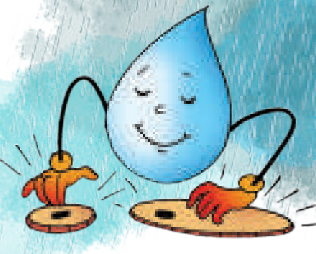

(क) कविता में वर्षा के अनेक दृश्य दिए गए हैं। इन दृश्यों में कौन-कौन सी ध्वनियाँ सुनाई दे रही होंगी? अपनी कल्पना से उन ध्वनियों को कक्षा में सुनाइए।

(ख) "मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे"

कविता में मेंढकों की टर्र-टर्र को भी प्यारा गीत कहा गया है। आपके विचार से बेसुरी ध्वनियाँ भी कब-कब अच्छी लगने लगती हैं?

सृजन

"बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है"

'आमोद' या 'मोद' दोनों शब्दों का अर्थ होता है— आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता। कविता में वर्षा ऋतु में 'आमोद' के दृश्यों का वर्णन किया गया है। कविता के इन दृश्यों को हम नीचे दिए गए उदाहरण की तरह अनुच्छेद में भी लिख सकते हैं—

"हवा की ठंडक थी, बारिश की रिमझिम बूँदें गिर रही थीं, मोर नृत्य कर रहे थे और मेंढक खुश होकर गाना गा रहे थे। ये सभी मिलकर वर्षा ऋतु को एक उत्सव जैसा बना रहे थे। बागों में गुलाब की खुशबू और आम के पेड़ों पर नए फल देखकर पक्षी और लोग, सभी प्रसन्न हो गए थे। किसान अपने खेतों में काम करते हुए इस प्राकृतिक आनंद के भागीदार बन रहे थे।"

अब नीचे दिए गए 'आमोद' से जुड़े विभिन्न दृश्यों का एक-एक अनुच्छेद में वर्णन कीजिए—

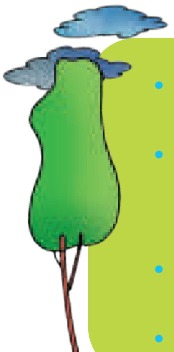

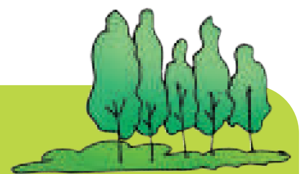

- बारिश के बाद उपवन में सैर
- परिवार के किसी प्रिय सदस्य या मित्र से वर्षों बाद मिलना
- सर्दियों का पहला हिमपात
- कोई उत्सव
- मित्रों संग खेलना
- किसी प्रिय पुस्तक को पढ़ना
- किसी कार्य को पूरा करना या सफल प्रदर्शन करना
- समुद्र के किनारे शांत सवेरा या शाम

वर्षा से जुड़े गीत

"बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।"

"गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।"

- हमारे देश में वर्षा के आने पर अनेक गीत और लोकगीत गाए जाते हैं। अपने समूह के साथ मिलकर वर्षा से जुड़े गीत व लोकगीत ढूँढ़िए और लिखिए। इस कार्य के लिए आप अपने परिजनों, शिक्षकों, इंटरनेट और पुस्तकालय की भी सहायता ले सकते हैं।
- सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को संकलित करके वर्षा-गीतों की एक पुस्तिका भी तैयार कीजिए।

आज की पहेली

आपने वर्षा से जुड़ी एक कविता पढ़ी है। अब भारत की विभिन्न ऋतुओं से जुड़ी कुछ पहेलियाँ पढ़िए और इन्हें बूझिए—

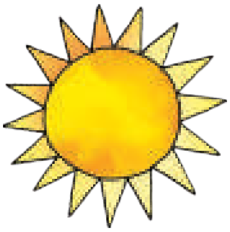

जाने कैसा मौसम आया,
सूरज ने सबको झुलसाया।
आम पकें तो रस ढलके,
समय कौन-सा ये झलके?

पानी बरसे, बादल गरजे,
धरती का हर कोना हरसे।
नदियाँ नाले भरे हर ओर,
बूझो किसका है ये जोर?

हवा में ठंडक बढ़ती जाए,
धूप सुहानी सबको भाए।
नई फसल खेतों में लाए,
बूझो कौन-सा मौसम आए?

फूल खिले, हर पक्षी गाए,
चारों ओर हरियाली छाए।
बागों में खुशबू छा जाए
बूझो ऋतु ये क्या कहलाए?

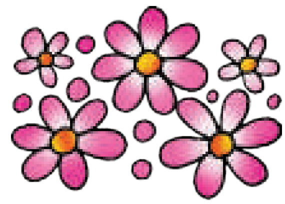

बर्फ गिरे, सर्दी बढ़ जाए,
ऊनी कपड़े सबको भाए।
धुंध की चादर लाए रात,
बूझो किस ऋतु की बात?

पत्ता-पत्ता गिरता जाए,
सूनी डाली बहुत सताए।
पेड़ करें खुद को तैयार,
कौन-सी ऋतु का है ये सार?

झरोखे से

आपने जो कविता इस पाठ में पढ़ी है, उसे लिखा है मुकुटधर पाण्डेय ने। आइए, अब पढ़ते हैं इन्हीं की लिखी एक अन्य कविता 'ग्रीष्म' का अंश—

ग्रीष्म

बीते दिवस बसंत के, लगा ज्येष्ठ का मास
विश्व व्यथित करने लगा, रवि किरणों का त्रास
अवनी आतप से लगी, जलने सब ही हाल
जीव, जंतु चर-अचर सब, हुए अमिल बेहाल
रवि मयूख के ताप से, झुलस गए बन बाग
सूखे सरिता सर तथा नाले, कूप तड़ाग
लगी आग पुर ग्राम में, चिंता बढ़ी अपार
नर-नारी व्याकुल बसे, भय सदैव उर धार

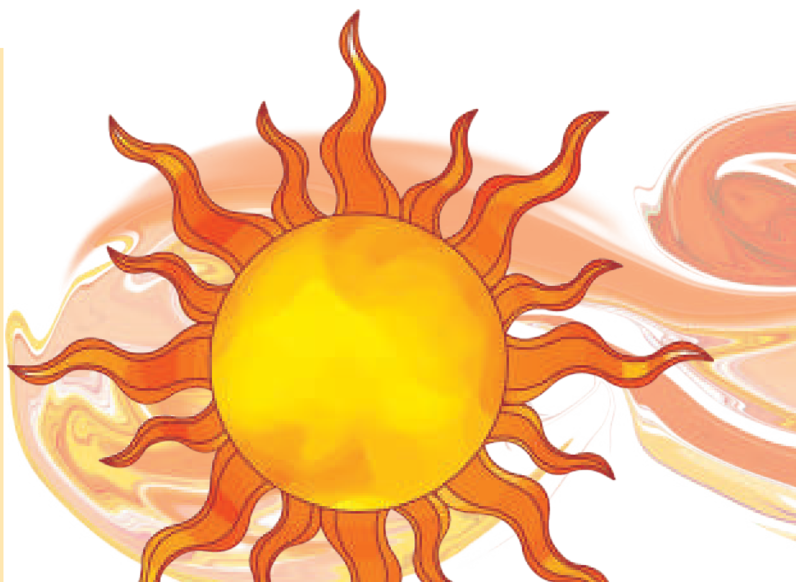

साझी समझ

अब इस कविता पर अपने साथियों के साथ विचार-विमर्श कीजिए।

खोजबीन के लिए

- वर्षा ऋतु
  https://www.youtube.com/watch?v=T6VAVOcUbYU
- आँधी पानी
  https://www.youtube.com/watch?v=v6D-QBeN2u8
- वसंत
  https://www.youtube.com/watch?v=_P5z-V81Yc0
- ऋतुएँ
  https://www.youtube.com/watch?v=iYVXaE2HHa8

(पढ़ने के लिए)

'करिया बादर'

गरजत बाजत उमड़त-घुमड़त, आइस बादर करिया,
झक्कर झड़ी म भिंजगे सबके, ओनहा कपड़ा फरिया।
आइस बादर करिया।

गली-खोर म धार बोहागे, रदरद गिरै पानी,
खेत-खार म नार बोहागे, चूहत हवै छान्ही।
बढ़िया बतर बनिस बाउग के, जोतैं खेत नगरिहा।
आइस बादर करिया।

कोनो बाँधै खेत के मुही, कोनो बाँधै पार,
टूरी टोरै खोटनी भाजी, छान्ही म कोहड़ा नार।
पानी अतका बरसिस, भर गे खोंचका डबरा तरिया।
आइस बादर करिया।

बिन छाता के काम चलै ना, कमरा खुम्हरी हेरा,
चौरा मा सब आल्हा गाँवैं, बुढ़वा आँटै ढेरा।
तीजा बर आए, हे नोनी, मईके गइस बहुरिया।
आइस बादर करिया।

लइकन गेंड़ी चढ़ैं हरेली, भौजी गावै भोजली,
नइहे कुच्छू, साग त राँधै, चना दार अउ गोंदली।
मान्दर बाजै करमा नाचैं, लइकन गाँयें ददरिया।
आइस बादर करिया।

होगे बियासी करिन निंदाई, रोपा लगगे बढ़िया,
आँसो के सम्मत म नइहे, कोन्नो खेत हर परिया।
आइस बादर करिया।

– देवेन्द्र नारायण शुक्ल की कविता संग्रह 'दुरिहा छुट गे गाँव' से संकलित

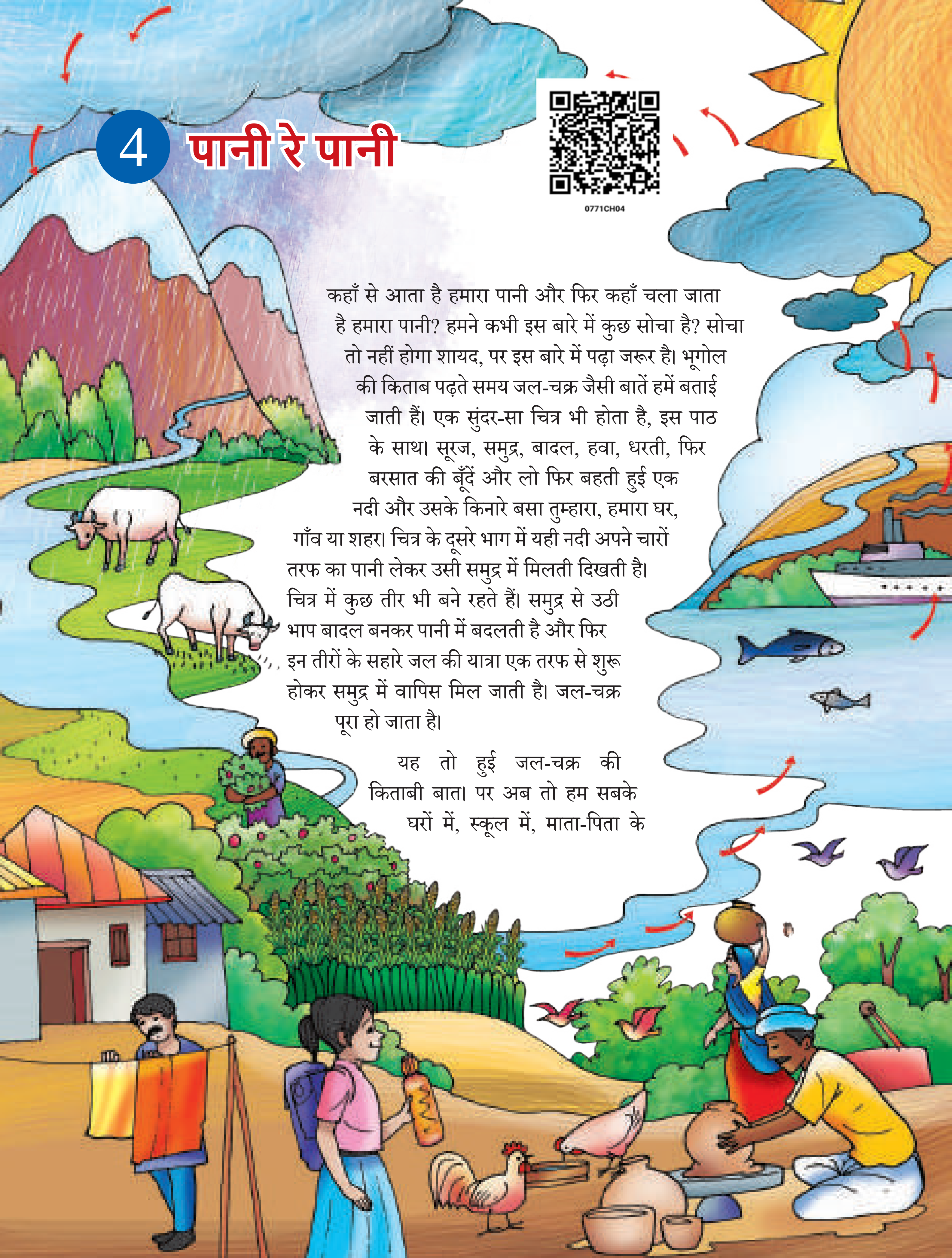

0771CH04

4 पानी रे पानी

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा जरूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई जल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के

कार्यालय में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी बहुत सबेरे।

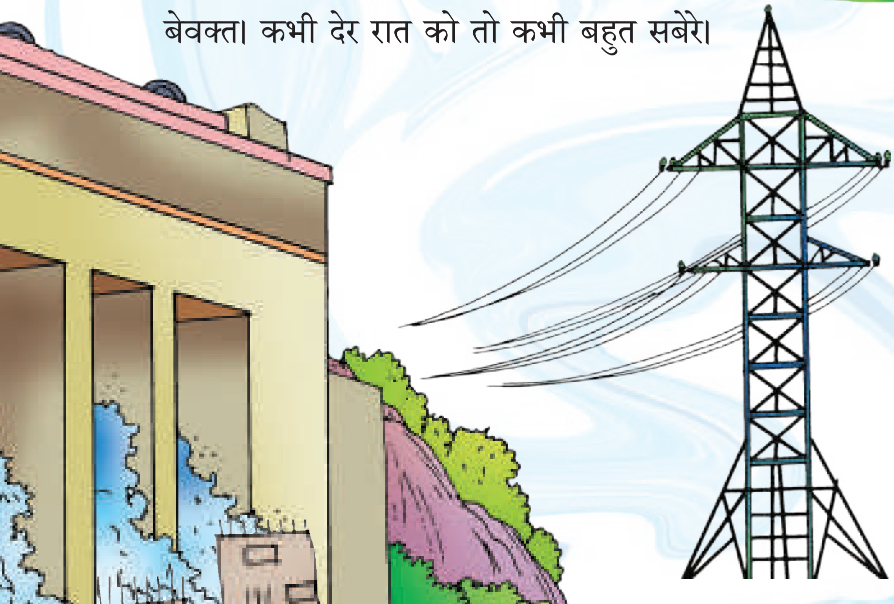

मीठी नींद छोड़कर घर भर की बालटियाँ, बर्तन और घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू, मैं-मैं भी होने लगती है।

रोज-रोज के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाइप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है, लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीजों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव-शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलोर जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गरमी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसम में क्या होता है? लो, सब तरफ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं। एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की जरूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इसी तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं, वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी जमीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खजाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खजाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं। लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खजाने का महत्व भूल गए और जमीन के लालच में हमने

अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाजार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसीलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी।

जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें, तभी हमें जरूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएँगे।

— *अनुपम मिश्र*

लेखक से परिचय

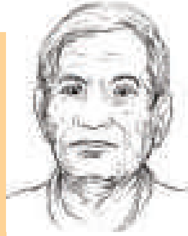
(1948–2016)

अनुपम मिश्र एक प्रखर लेखक, संपादक और जाने-माने पर्यावरणविद होने के साथ-साथ छायाकार भी थे। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उन्होंने अनेक प्रयोगात्मक कार्य किए हैं। *आज भी खरे हैं तालाब* उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक है। ब्रेल लिपि सहित इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है। *साफ माथे का समाज* उनकी एक और महत्वपूर्ण पुस्तक है। वे गाँधी शांति प्रतिष्ठान से प्रकाशित होने वाली पत्रिका *गांधी मार्ग* के संस्थापक और संपादक भी थे।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ को थोड़ा और निकटता से समझते हैं। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों का सही उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) हमारा भूजल भंडार निम्नलिखित में से किससे समृद्ध होता है?

- नल सूख जाने से।
- पानी बरसने से।
- तालाब और झीलों से।
- बाढ़ आने से।

(2) निम्नलिखित में से कौन-सी बात जल-चक्र से संबंधित है?

- वर्षा जल का संग्रह करना।
- समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर बरसना।
- नदियों का समुद्र में जाकर मिलना।
- बरसात में चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देना।

(3) "इस बड़ी गलती की सजा अब हम सबको मिल रही है।" यहाँ किस गलती की ओर संकेत किया गया है?

- जल-चक्र की अवधारणा को न समझना।
- आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग करना।
- तालाबों को कचरे से पाटकर समाप्त करना।
- भूजल भंडारण के विषय में विचार न करना।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ संवाद कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

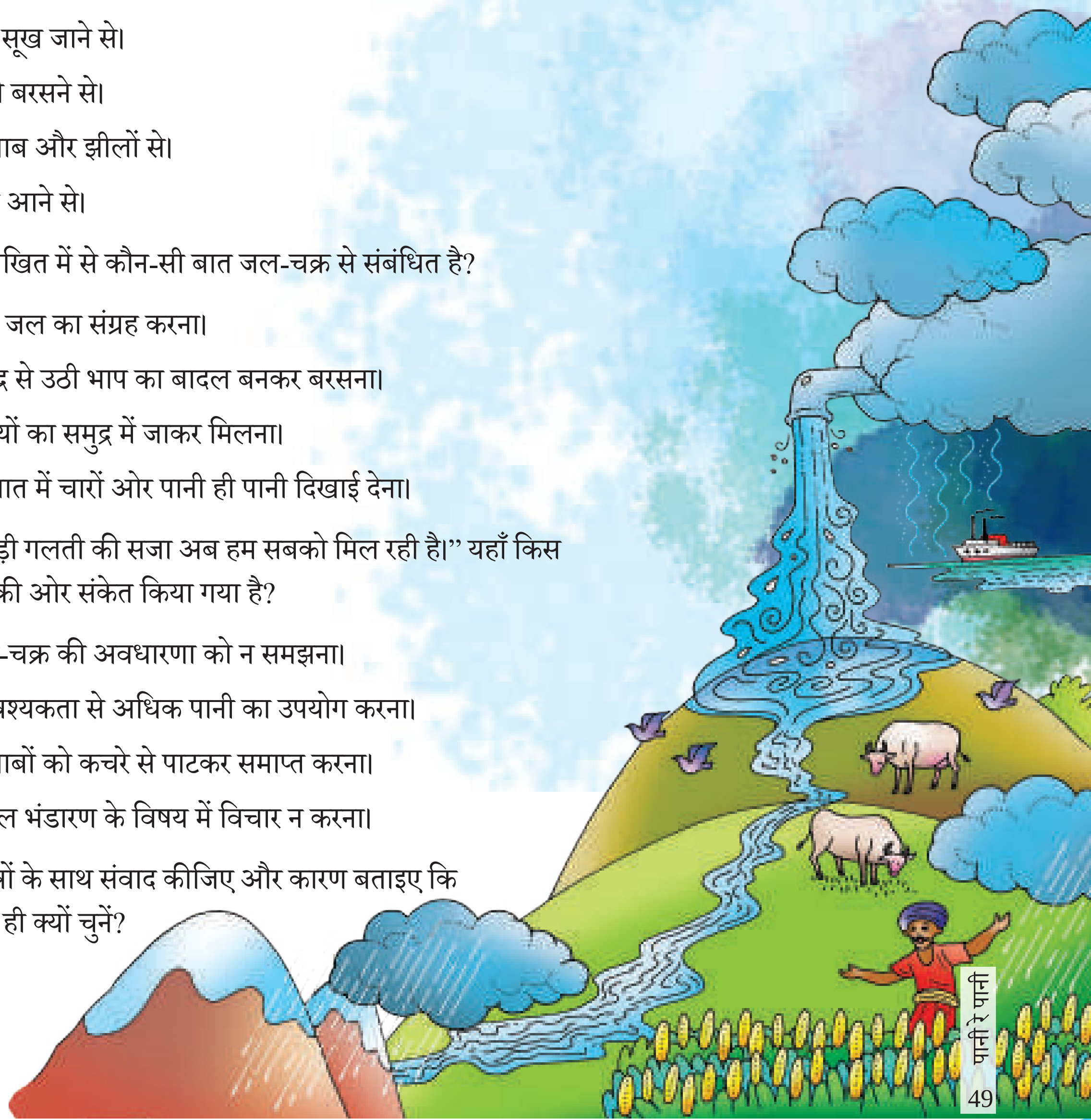

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ शब्द समूह या संदर्भ चुनकर स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके अर्थ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. वर्षा जल संग्रहण	1. जमीन के नीचे छिपा जल भंडार।
2. जल संकट	2. वर्षा के जल को प्राकृतिक अथवा कृत्रिम रूप से (मानवीय प्रयासों से) धरती में संग्रह करना।
3. जल-चक्र	3. जल की अत्यधिक कमी होना।
4. भूजल	4. समुद्र से उठी भाप का बादल बनकर पानी में बदलना और वर्षा के द्वारा पुनः समुद्र में मिल जाना।

पंक्तियों पर चर्चा

इस पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।

- "पानी आता भी है तो बेवक्त।"
- "देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसे हालात बन जाते हैं।"
- "कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है।"
- "अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

सोच-विचार के लिए

लेख को एक बार पुन: पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए।

(क) पाठ में धरती को एक बहुत बड़ी गुल्लक क्यों कहा गया है?

(ख) जल-चक्र की प्रक्रिया कैसे पूरी होती है?

(ग) यदि सारी नदियाँ, झीलें और तालाब सूख जाएँ तो क्या होगा?

(घ) पाठ में पानी को रुपयों से भी कई गुना मूल्यवान क्यों बताया गया है?

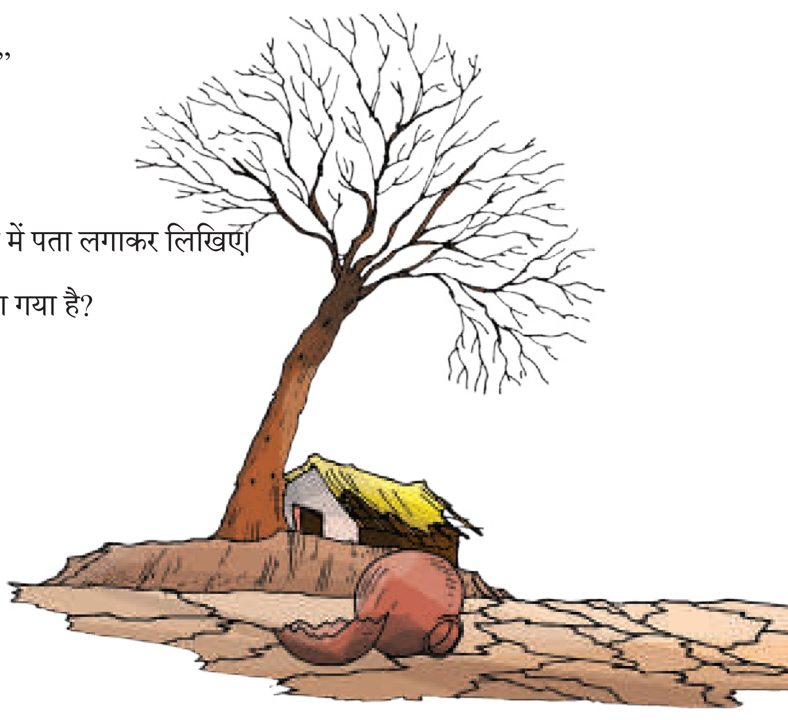

शीर्षक

(क) इस पाठ का शीर्षक 'पानी रे पानी' दिया गया है। पाठ का यह नाम क्यों दिया गया होगा? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करके लिखिए। अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

(ख) आप इस पाठ को क्या नाम देना चाहेंगे? इसका कारण लिखिए।

शब्दों की बात

बात पर बल देना

- "हमारी यह धरती भी इसी तरह की एक गुल्लक है।"
- "हमारी यह धरती इसी तरह की एक गुल्लक है।"

(क) इन दोनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए। दूसरे वाक्य में कौन-सा शब्द हटा दिया गया है? उस शब्द को हटा देने से वाक्य के अर्थ में क्या अंतर आया है, पहचान कर लिखिए।

(ख) पाठ में ऐसे ही कुछ और शब्द भी आए हैं जो अपनी उपस्थिति से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं। पाठ को फिर से पढ़िए और इस तरह के शब्दों वाले वाक्यों को चुनकर लिखिए।

समानार्थी शब्द

नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर समान अर्थ देने वाले उपयुक्त शब्द लिखिए। इस कार्य के लिए आप बादल में से शब्द चुन सकते हैं।

(क) **सूरज** की किरणें पड़ते ही फूल खिल उठे।

(ख) समुद्र का पानी **भाप** बनकर ऊपर जाता है।

(ग) अचानक **बादल** गरजने लगे।

(घ) जल-चक्र में **हवा** की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

सूर्य, मेघ, भास्कर,
पवन, वारिद, वायु, दिवाकर,
जलद, वाष्प, समीर,
दिनकर, नीरद

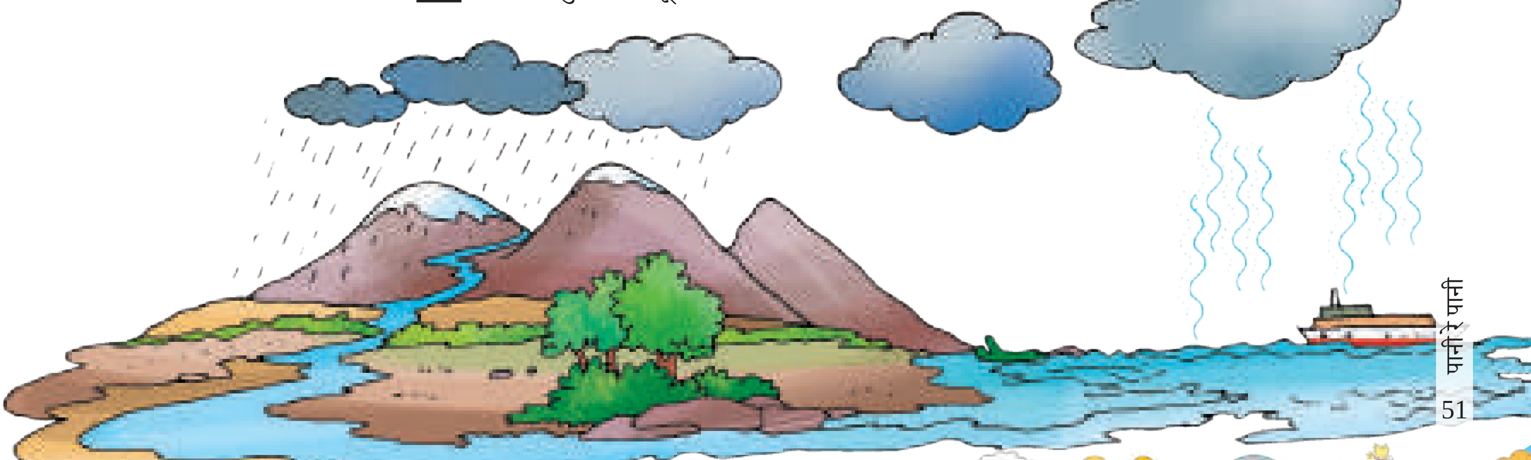

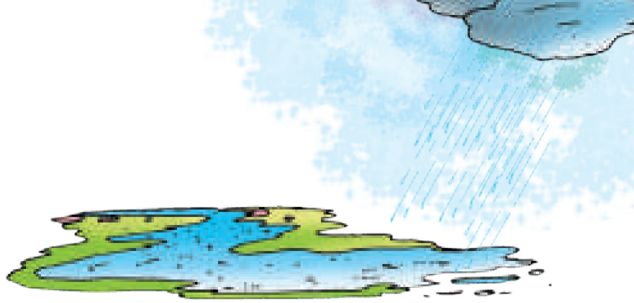

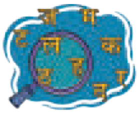

उपसर्ग

"देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसे हालात बन जाते हैं।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द में 'अ' ने 'काल' शब्द में जुड़कर एक नया अर्थ दिया है। काल का अर्थ है— समय, मृत्यु। जबकि अकाल का अर्थ है— कुसमय, सूखा। कुछ शब्दांश किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या कोई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं और इस प्रकार नए शब्दों का निर्माण करते हैं। इस तरह के शब्दांश 'उपसर्ग' कहलाते हैं।

आइए, कुछ और उपसर्गों की पहचान करते हैं—

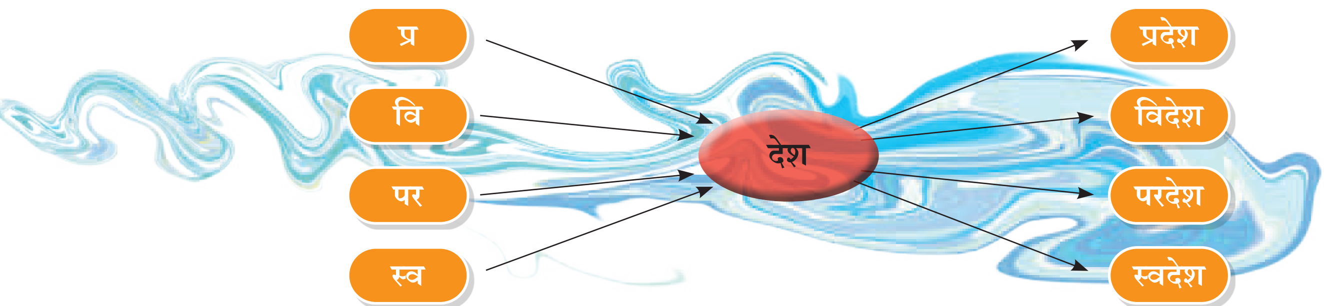

अब आप भी उपसर्ग के प्रयोग से नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

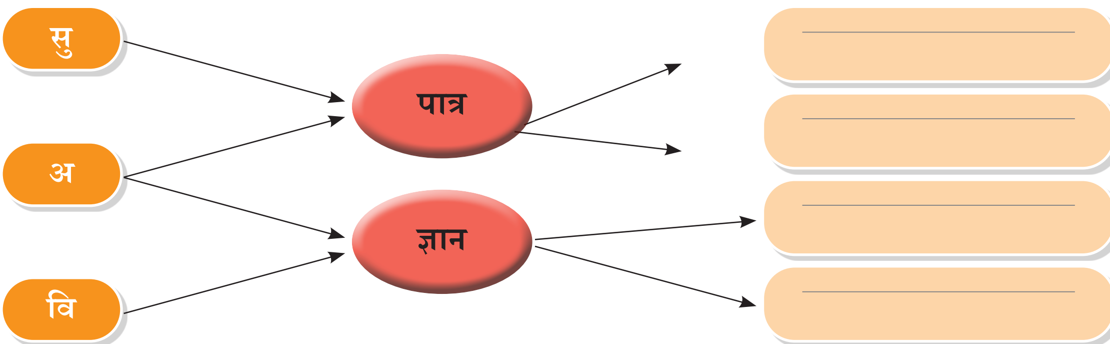

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) धरती की गुल्लक में जलराशि की कमी न हो इसके लिए आप क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं, अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करके लिखिए।

(ख) इस पाठ में एक छोटे से खंड में जल-चक्र की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया है। उस खंड की पहचान करें और जल-चक्र को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत कीजिए।

(ग) अपने द्वारा बनाए गए जल-चक्र के चित्र का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

सृजन

(क) कल्पना कीजिए कि किसी दिन आपके घर में पानी नहीं आया। आपको विद्यालय जाना है। आपके घर के समीप ही एक सार्वजनिक नल है। आप बालटी आदि लेकर वहाँ पहुँचते हैं और ठीक उसी समय आपके पड़ोसी भी पानी लेने पहुँच जाते हैं। आप दोनों ही अपनी-अपनी बालटी पहले भरना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में आपस में किसी प्रकार का विवाद (तू-तू मैं-मैं) न हो, यह ध्यान में रखते हुए पाँच संदेश वाक्य (स्लोगन) तैयार कीजिए।

(ख) "सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती, फिर बरसात की बूँदें और फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर।"

इस वाक्य को पढ़कर आपके सामने कोई एक चित्र उभर आया होगा, उस चित्र को बनाकर उसमें रंग भरिए।

पानी रे पानी

नीचे हम सबकी दिनचर्या से जुड़ी कुछ गतिविधियों के चित्र हैं। उन चित्रों पर बातचीत कीजिए जो धरती पर पानी के संकट को कम करने में सहायक हैं और उन चित्रों पर भी बात करें जो पानी की गुल्लक को जल्दी ही खाली कर रहे हैं।

सबका पानी

'सभी को अपनी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त पानी कैसे मिले' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन करें। परिचर्चा के मुख्य बिंदुओं को आधार बनाते हुए रिपोर्ट तैयार करें।

दैनिक कार्यों में पानी

(क) क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि आपके घर में एक दिन में औसतन कितना पानी खर्च होता है? अपने घर में पानी के उपयोग से जुड़ी एक तालिका बनाइए। इस तालिका के आधार पर पता लगाइए —

- घर के कार्यों में एक दिन में लगभग कितना पानी खर्च होता है? (बालटी, घड़े या किसी अन्य बर्तन को मापक बना सकते हैं)
- आपके माँ और पिता या घर के अन्य सदस्य पानी बचाने के लिए क्या-क्या उपाय करते हैं?

(ख) क्या आपको अपनी आवश्यकतानुसार पानी उपलब्ध हो जाता है? यदि हाँ, तो कैसे? यदि नहीं, तो क्यों?

(ग) आपके घर में दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पानी का संचयन कैसे और किन पात्रों में किया जाता है?

जन-सुविधा के रूप में जल

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए—

इन चित्रों के आधार पर जल आपूर्ति की स्थिति के बारे में अपने साथियों से चर्चा कीजिए और उसका विवरण लिखिए।

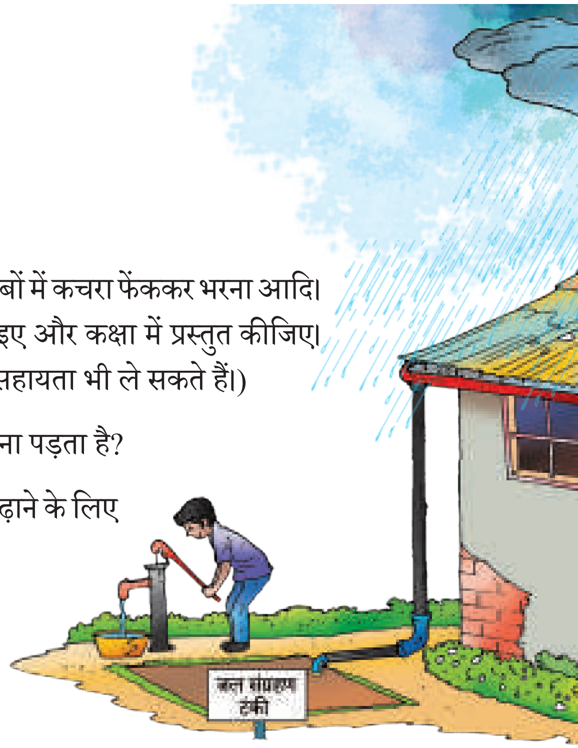

बिन पानी सब सून

(क) पाठ में भूजल स्तर के कम होने के कुछ कारण बताए गए हैं, जैसे— तालाबों में कचरा फेंककर भरना आदि। भूजल स्तर कम होने के और क्या-क्या कारण हो सकते हैं? पता लगाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (इसके लिए आप अपने सहपाठियों, शिक्षकों और घर के सदस्यों की सहायता भी ले सकते हैं।)

(ख) भूजल स्तर की कमी से हमें आजकल किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

(ग) आपके विद्यालय, गाँव या शहर के स्थानीय प्रशासन द्वारा भूजल स्तर बढ़ाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं, पता लगाकर लिखिए।

यह भी जानें

वर्षा-जल संग्रहण

वर्षा के जल को एकत्र करना और उसका भंडारण करके बाद में प्रयोग करना जल की उपलब्धता में वृद्धि करने का एक उपाय है। इस उपाय द्वारा वर्षा का जल एकत्र करने को 'वर्षा जल संग्रहण' कहते हैं। वर्षा जल संग्रहण का मूल उद्देश्य यही है कि "जल जहाँ गिरे वहीं एकत्र कीजिए।" वर्षा जल संग्रहण की एक तकनीक इस प्रकार है—

छत के ऊपर वर्षा-जल संग्रहण

इस प्रणाली में भवनों की छत पर एकत्रित वर्षा जल को पाइप द्वारा भंडारण टंकी में पहुँचाया जाता है। इस जल में छत पर उपस्थित मिट्टी के कण मिल जाते हैं। अत: इसका उपयोग करने से पहले इसे स्वच्छ करना आवश्यक होता है।

अपने घर या विद्यालय के आस-पास, मुहल्ले या गाँव में पता लगाइए कि वर्षा जल संग्रहण की कोई विधि अपनाई जा रही है या नहीं? यदि हाँ, तो कौन-सी विधि है? उसके विषय में लिखिए। यदि नहीं, तो अपने शिक्षक या परिजनों की सहायता से इस विषय में समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।

आज की पहेली

जल के प्राकृतिक स्रोत हैं— वर्षा, नदी, झील और तालाब। दिए गए वर्ग में जल और इन प्राकृतिक स्रोतों के समानार्थी शब्द ढूँढ़िए और लिखिए।

क	मे	क	ग	ब	पा	ज	र
ल	ह	व	नी	न	र	ला	ज
अं	बु	स	र	ब	स	श	नी
म	न	रो	रि	ल	लि	य	य
य	भ	व	थ	ता	ल	श	त
ज	वा	र	म	ग	र	पा	टि
बा	रि	श	त	प्र	वा	हि	नी
व	र	त	रं	गि	णी	ट	ग

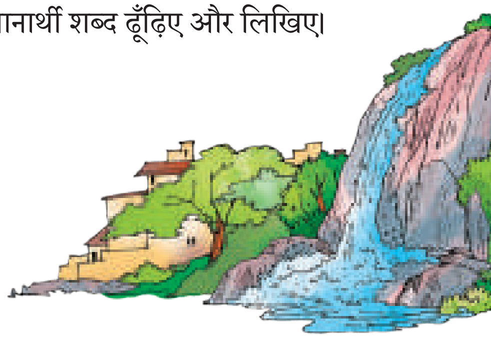

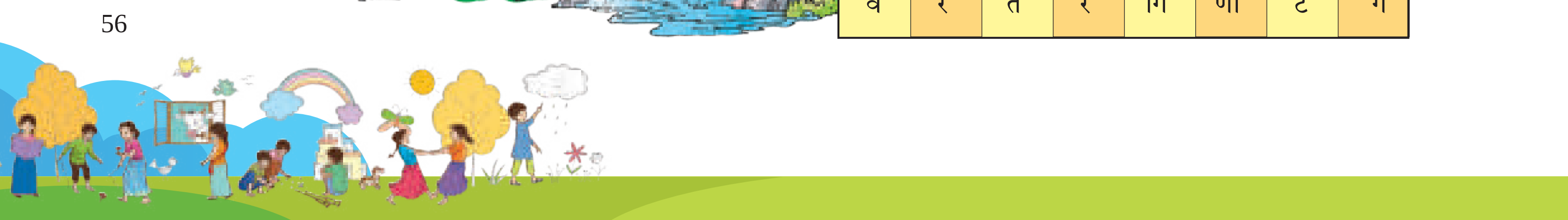

खोजबीन के लिए

पानी से संबंधित गीत या कविताओं का संकलन कीजिए और इनमें से कुछ को अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। इसके लिए आप अपने परिजनों एवं शिक्षक अथवा पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

झरोखे से

आपने तालाबों और नदियों से रिसकर धरती रूपी गुल्लक में जमा होने वाले पानी के संबंध में यह रोचक लेख पढ़ा। अब आप तालाबों के बनने के इतिहास के विषय में अनुपम मिश्र के एक लेख 'पाल के किनारे रखा इतिहास' का अंश पढ़िए।

पाल के किनारे रखा इतिहास

"अच्छे-अच्छे काम करते जाना", राजा ने कूड़न किसान से कहा था।

कूड़न, बुढ़ान, सरमन और कौंराई थे चार भाई। चारों सुबह जल्दी उठकर अपने खेत पर काम करने जाते। दोपहर को कूड़न की बेटी आती, पोटली में खाना लेकर।

एक दिन घर से खेत जाते समय बेटी को एक नुकीले पत्थर से ठोकर लग गई। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी दराँती से उस पत्थर को उखाड़ने की कोशिश की। पर लो, उसकी दराँती तो पत्थर पर पड़ते ही लोहे से सोने में बदल गई। और फिर बदलती जाती हैं इस लम्बे किस्से की घटनाएँ बड़ी तेजी से। पत्थर उठाकर लड़की भागी-भागी खेत पर आती है। अपने पिता और चाचाओं को सब कुछ एक साँस में बता देती है। चारों भाइयों की साँस भी अटक जाती है। जल्दी-जल्दी सब घर लौटते हैं। उन्हें मालूम पड़ चुका है कि उनके हाथ में कोई साधारण पत्थर नहीं है, पारस है। वे लोहे की जिस चीज को छूते हैं, वह सोना बनकर उनकी आँखों में चमक भर देती है।

पर आँखों की यह चमक ज्यादा देर तक नहीं टिक पाती। कूड़न को लगता है कि देर-सबेर राजा तक यह बात पहुँच ही जाएगी और तब पारस छिन जाएगा। तो क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि वे खुद जाकर राजा को सब कुछ बता दे।

किस्सा आगे बढ़ता है। फिर जो कुछ घटता है, वह लोहे को नहीं बल्कि समाज को पारस से छुआने का किस्सा बन जाता है।

राजा न पारस लेता है, न सोना। सब कुछ कूड़न को वापस देते हुए कहता है, "जाओ इससे अच्छे-अच्छे काम करते जाना, तालाब बनाते जाना।"

यह कहानी सच्ची है, ऐतिहासिक है— नहीं मालूम। पर देश के मध्य भाग में एक बहुत बड़े हिस्से में यह इतिहास को अँगूठा दिखाती हुई लोगों के मन में रमी हुई है। यहीं के पाटन नामक क्षेत्र में चार बहुत बड़े तालाब

आज भी मिलते हैं और इस कहानी को इतिहास की कसौटी पर कसने वालों को लजाते हैं— चारों तालाब इन्हीं चारों भाइयों के नाम पर हैं। बूढ़ा सागर है, मझगवाँ में सरमन सागर है, कुआँग्राम में कौंराई सागर है तथा कुंडम गांव में कुंडम सागर। सन 1907 में गजेटियर के माध्यम से इस देश का इतिहास लिखने के लिए घूम रहे एक अंग्रेज ने भी इस इलाके में कई लोगों से यह किस्सा सुना था और फिर देखा-परखा था इन चार बड़े तालाबों को। तब भी सरमन सागर इतना बड़ा था कि उसके किनारे पर तीन बड़े-बड़े गाँव बसे थे और तीनों गाँव इस तालाब को अपने-अपने नामों से बाँट लेते थे। पर वह विशाल ताल तीनों गाँवों को जोड़ता था और सरमन सागर की तरह स्मरण किया जाता था। इतिहास ने सरमन, बुढ़ान, कौंराई और कूड़न को याद नहीं रखा लेकिन इन लोगों ने तालाब बनाए और इतिहास को उनके किनारे पर रख दिया था।

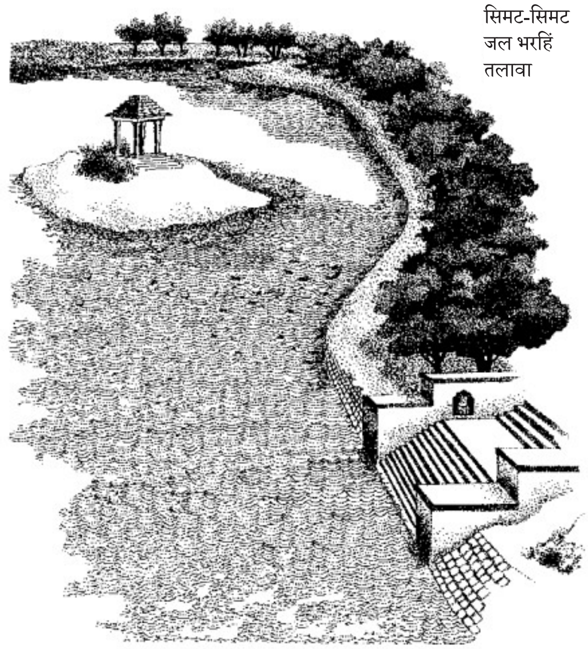

देश के मध्य भाग में, ठीक हृदय में धड़काने वाला यह किस्सा उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम—चारों तरफ किसी न किसी रूप में फैला हुआ मिल सकता है और इसी के साथ मिलते हैं सैंकड़ों, हजारों तालाब। इनकी कोई ठीक गिनती नहीं है। इन अनगिनत तालाबों को गिनने वाले नहीं, इन्हें तो बनाने वाले लोग आते रहे और तालाब बनते रहे।

किसी तालाब को राजा ने बनाया तो किसी को रानी ने, किसी को किसी साधारण गृहस्थ ने तो किसी को किसी असाधारण साधु-संत ने— जिस किसी ने भी तालाब बनाया, वह महाराज या महात्मा ही कहलाया। एक कृतज्ञ समाज तालाब बनाने वालों को अमर बनाता था और लोग भी तालाब बनाकर समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते थे।

साझी समझ

'पानी रे पानी' और 'पाल के किनारे रखा इतिहास' में आपको कौन-कौन सी बातें समान लगीं? उनके विषय में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

पढ़ने के लिए

विश्वेश्वरैया

आकाश में अँधेरा छाया हुआ था। बादल आकाश में मँडराते हुए एक-दूसरे से टकरा जाते तो बिजली चमक उठती और गर्जन होता। फिर मूसलाधार वर्षा होने लगी। कुछ ही देर में गड्ढे और नालियाँ पानी से भर गईं।

छः वर्षीय विश्वेश्वरैया अपने घर के बरामदे में खड़ा इस दृश्य को निहार रहा था। गली में पंक्तियों में खड़े पेड़ बारिश में धुल जाने के कारण साफ व सुंदर दिखाई दे रहे थे। पत्तियों और टहनियों से पानी की बूँदें टप-टप गिर रही थीं। थोड़ी ही दूरी पर हरे-भरे धान के खेत लहलहा रहे थे।

जहाँ विश्वेश्वरैया खड़ा था वहीं निकट की नाली का पानी उमड़-घुमड़ रहा था। उसमें भँवर भी उठ रहे थे। उसने एक जलप्रपात का रूप धारण कर लिया था। वह एक बहुत ही बड़े पत्थर को अपने साथ बहा कर ले जा रहा था जिससे उसकी शक्ति का प्रदर्शन होता था। विश्वेश्वरैया ने हवा और सूर्य की शक्ति को भी देखा था। सामूहिक रूप से वे प्रकृति की असीम शक्ति की ओर संकेत कर रहे थे। 'प्रकृति शक्ति है। मुझे प्रकृति के बारे में सब कुछ जानना चाहिए' वह छोटा-सा लड़का बुदबुदाया।

फिर उसने थोड़ी दूरी पर, निर्भीकता से मूसलाधार वर्षा में खड़ी एक आकृति को ताड़पत्र की छतरी हाथ में लिए देखा। वह उसे तुरंत पहचान गया। उसके कपड़े फटे हुए थे। वह कमजोर और भूखी लग रही थी। वह एक झोंपड़ी में रहती थी। उसके बच्चे कभी स्कूल नहीं जाते। वह गरीब थी। विश्वेश्वरैया ने सोचा 'वह इतनी गरीब क्यों है?'

उन्होंने बड़ी गंभीरता से प्रकृति और गरीबी के कारण के बारे में जानने का प्रयास किया।

वह परिवार के बड़ों से इन बातों का उत्तर जानना चाहते थे। वह अपने अध्यापकों से भी जिरह करते। वह उनसे प्रकृति के बारे में पूछते— ऊर्जा के कौन से प्रचलित स्रोत हैं? कैसे इस ऊर्जा को पकड़ कर इस्तेमाल में लाया जा सकता है?

वह यह भी पूछते कि आखिर इतने लोग गरीब क्यों हैं? नौकरानी फटी साड़ी क्यों पहनती है? वह झोपड़ी में क्यों रहती है? क्या उसे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहिए?

धीरे-धीरे इस लड़के को प्रकृति और जीवन के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त होने लगी। उन्हें महसूस हुआ कि ज्ञान असीमित है। उसे बिना रुके, सीखते रहना होगा। तभी उन्हें उन प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं जो उन्होंने उठाए थे। उन्होंने निश्चय किया कि वह जीवनपर्यंत तक छात्र बने रहेंगे क्योंकि बहुत कुछ सीखना बाकी है। इसी संकल्प में उनकी महानता की कुंजी थी।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर (जो अब कर्नाटक में है) के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितंबर 1861 को हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम से यहाँ आए और मैसूर में बस गए थे।

दो वर्ष की आयु से ही उनका परिचय रामायण, महाभारत और पंचतंत्र की कहानियों से हो गया था। ये कहानियाँ हर रात घर की वृद्ध महिलाएँ उन्हें सुनाती थीं। कहानियाँ शिक्षाप्रद व मनोरंजक थीं। इन कहानियों से विश्वेश्वरैया ने ईमानदारी, दया और अनुशासन जैसे मूल मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया। विश्वेश्वरैया चिकबल्लापुर के मिडिल व हाईस्कूल में पढ़े। जब उन्हें 'गाड सेव द किंग' (ईश्वर राजा को सुरक्षित रखे) वाला गीत गाने को कहा गया तो उन्हें पता चला कि भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश है, अपने मामलों में भी भारतीयों को कुछ कहने का अधिकार न था। भारत की अधिकांश संपत्ति विदेशियों ने हड़प ली थी।

क्या उनके घर में काम करने वाली नौकरानी विदेशी शासन के कारण गरीब है? यह प्रश्न विश्वेश्वरैया के मस्तिष्क में उमड़ता-घुमड़ता रहा। राष्ट्रीयता की चिंगारी जल उठी थी और उनके जीवन में यह अंत समय तक जलती रही। विश्वेश्वरैया जब केवल चौदह वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। क्या वह अपनी पढ़ाई जारी रखें? इस प्रश्न पर तब विचार-विमर्श हुआ जब उन्होंने अपनी माँ से कहा, "अम्मा, क्या मैं बंगलौर जा सकता हूँ? मैं वहाँ मामा रामैया के यहाँ रह सकता हूँ। वहाँ मैं कॉलेज में प्रवेश ले लूँगा।"

पर बेटा... तुम्हारे मामा अमीर नहीं हैं। तुम उन पर बोझ क्यों बनना चाहते हो?" उनकी माँ ने तर्क किया।

"अम्मा... मैं अपनी जरूरतों के लिए स्वयं कमाऊँगा। मैं बच्चों को ट्यूशन पढ़ा दूँगा। अपनी फीस देने और पुस्तकें खरीदने के लिए मैं काफी धन कमा लूँगा। मेरे ख्याल से मेरे पास कुछ पैसे बच भी जाएँगे, जिन्हें मैं मामा को दे दूँगा," विश्वेश्वरैया ने समझाया।

उनके पास हर प्रश्न का उत्तर था— समाधान ढूँढ़ने की क्षमता उनके पूरे जीवन में लगातार विकसित होती रही और इस कारण वह एक व्यावहारिक व्यक्ति बन गए। यह उनके जीवन का सार था और उनका संदेश था पहले जानो, फिर करो। बड़े होकर यही विश्वेश्वरैया एक महान इंजीनियर बने।

— आर. के. मूर्ति (अनुवाद — सुमन जैन)

5 नहीं होना बीमार

0771CH05

एक दिन मुझे साथ लेकर नानीजी हमारे पड़ोसी सुधाकर काका को देखने गईं, जो बीमार थे। वे अस्पताल में भर्ती थे। अस्पताल जाने का यह मेरा पहला अवसर था।

एक बड़े से वार्ड में कई एक जैसे पलंग लाइन से लगे हुए थे। सब पर एक जैसी सफेद चादर और लाल कंबल। सफेद दीवारें, ऊँची छत, खिड़कियों पर हरे परदे और फर्श एकदम चमकता हुआ। एक पलंग पर सुधाकर काका लेटे हुए थे। एकदम पास पहुँचने पर दिखाई दिया।

हमें देखकर सुधाकर काका जैसे खुश हो गए। नानीजी ने उनके सिर पर हाथ फेरा और उनके सिरहाने खड़ी हो गईं और हालचाल पूछने लगीं।

अस्पताल का माहौल मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे। न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी...। सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुन। बाकी एकदम शांति।

तभी सफेद कपड़ों में एक नर्स आई। नर्स ने नानीजी को देखकर अभिवादन में सिर हिलाया

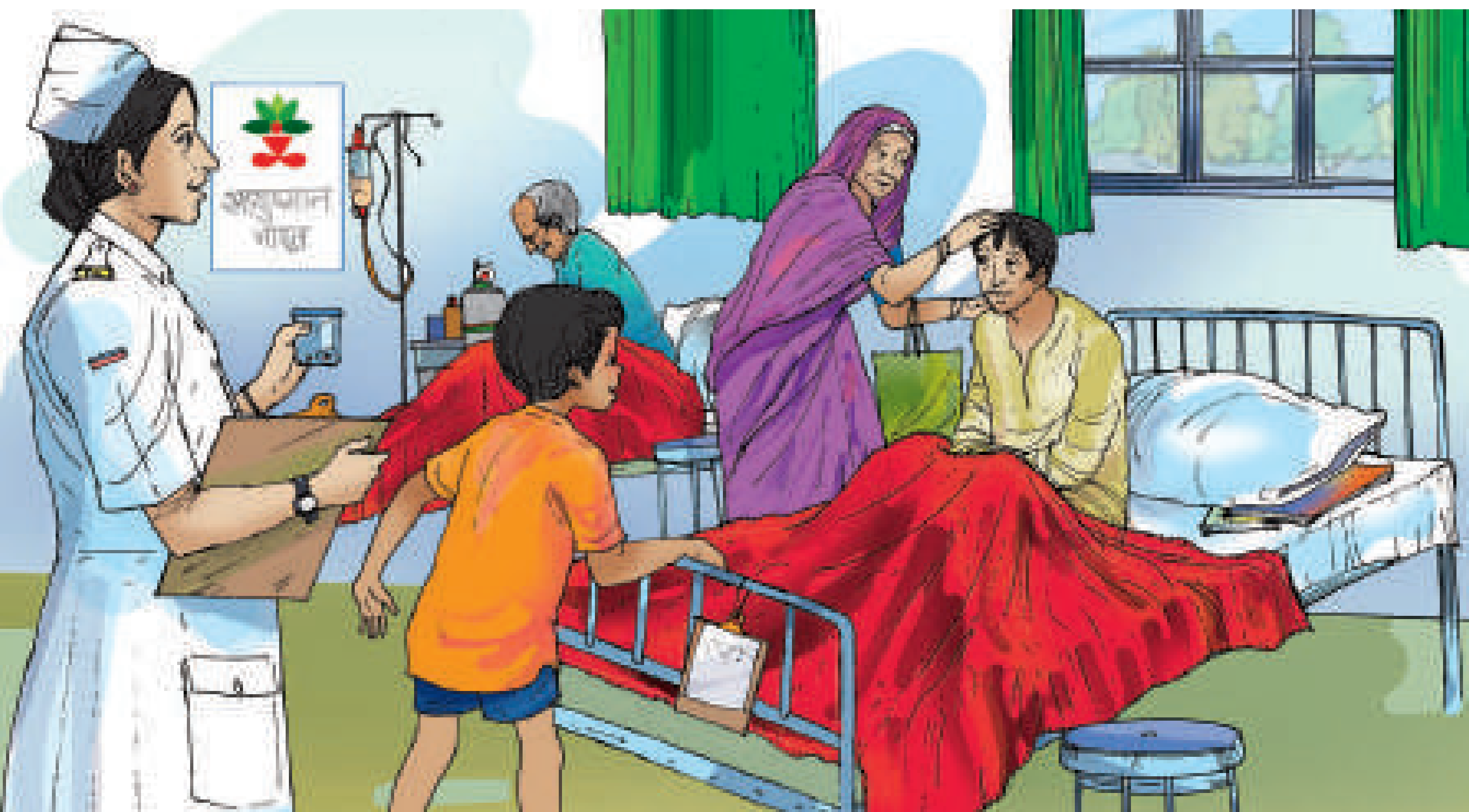

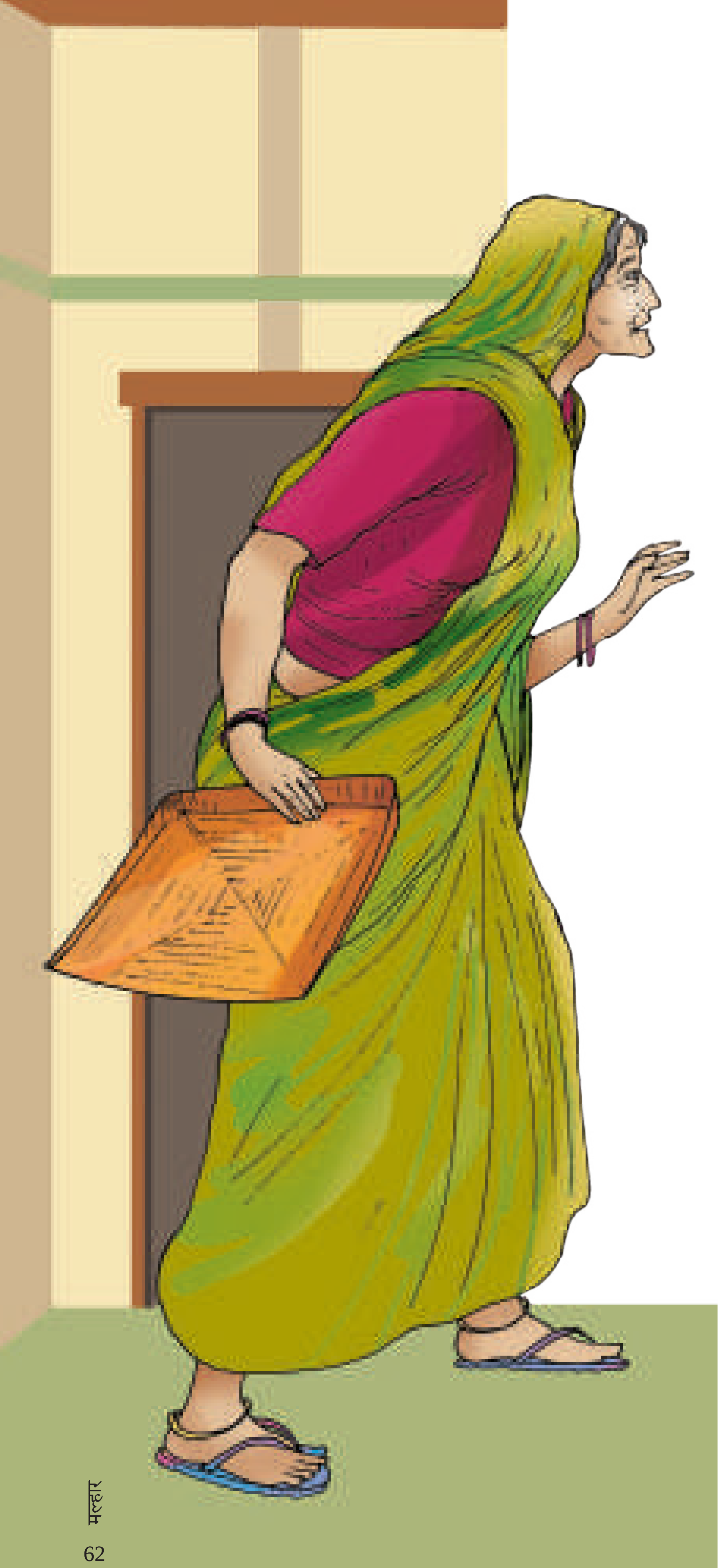

और काका को दवा खिलाई। नानीजी काका के लिए साबूदाने की खीर बनाकर लाई थीं। नर्स से पूछा कि खिला दूँ क्या? नर्स के हाँ कहने पर उसके जाने के बाद नानीजी ने चम्मच से धीरे-धीरे काका को साबूदाने की खीर खिलाई। काका ने बहुत स्वाद लेकर खीर खाई।

क्या ठाठ हैं बीमारों के भी। मैंने सोचा... ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो! काश! सुधाकर काका की जगह मैं होता! मैं कब बीमार पड़ूँगा!

कुछ रोज बाद एक दिन मेरा स्कूल जाने का मन नहीं किया। मैंने होमवर्क भी नहीं किया था। स्कूल जाता तो जरूर सजा मिलती। मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिलकुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।

मैं रजाई से निकला ही नहीं। नानीजी उठाने आईं तो मैंने कहा, "मैं आज बीमार हूँ।"

"क्या हो गया?"

"मेरे सिर में दर्द हो रहा है। पेट भी दुख रहा है और मुझे बुखार भी है।"

नानीजी चली गईं।

मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा। अब छोटे मामा नहाकर निकले। अब कुसुम मौसी रोज की तरह नाश्ता छोड़कर कॉलेज बस पकड़ने भागीं। अब मुन्नू अपना जूता ढूँढ़ रहा है। अब छोटे मामा ने साइकिल उठाई। अब सब चले गए। अब घर में मैं अकेला रह गया।

पता नहीं कब झपकी-सी आ गई।

तभी नानाजी आए। "क्या हो गया? क्या हो गया?"

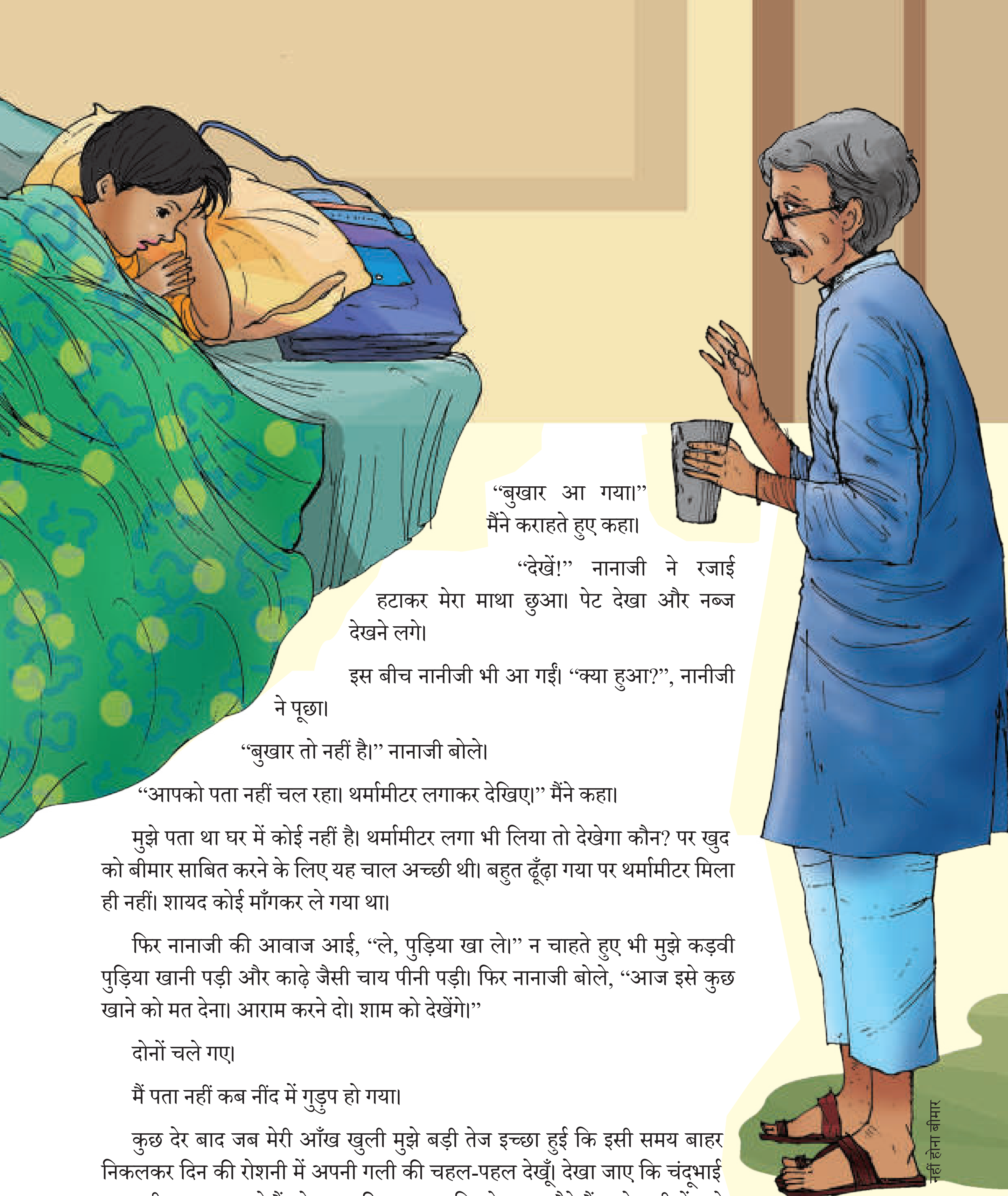

"बुखार आ गया।" मैंने कराहते हुए कहा।

"देखें!" नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ। पेट देखा और नब्ज देखने लगे।

इस बीच नानीजी भी आ गईं। "क्या हुआ?", नानीजी ने पूछा।

"बुखार तो नहीं है।" नानाजी बोले।

"आपको पता नहीं चल रहा। थर्मामीटर लगाकर देखिए।" मैंने कहा।

मुझे पता था घर में कोई नहीं है। थर्मामीटर लगा भी लिया तो देखेगा कौन? पर खुद को बीमार साबित करने के लिए यह चाल अच्छी थी। बहुत ढूँढ़ा गया पर थर्मामीटर मिला ही नहीं। शायद कोई माँगकर ले गया था।

फिर नानाजी की आवाज आई, "ले, पुड़िया खा ले।" न चाहते हुए भी मुझे कड़वी पुड़िया खानी पड़ी और काढ़े जैसी चाय पीनी पड़ी। फिर नानाजी बोले, "आज इसे कुछ खाने को मत देना। आराम करने दो। शाम को देखेंगे।"

दोनों चले गए।

मैं पता नहीं कब नींद में गुड़प हो गया।

कुछ देर बाद जब मेरी आँख खुली मुझे बड़ी तेज इच्छा हुई कि इसी समय बाहर निकलकर दिन की रोशनी में अपनी गली की चहल-पहल देखूँ। देखा जाए कि चंदूभाई ड्राइक्लीनर क्या कर रहे हैं? तेजराम की दुकान पर कितने ग्राहक बैठे हैं? महेश घी सेंटर ने

मलाई का भगोना आँच पर चढ़ाया या नहीं और टेलीफोन के तारों पर कितनी चिड़िया बैठी हैं? लेकिन मजबूरी थी। चाहे जितनी ऊब हो, लेटे ही रहना था।

कुछ देर इधर-उधर की, स्कूल की, दोस्तों की बातें सोचता रहा... फिर लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी तो उठकर बैठ गया। लेकिन बाहर कुछ आहट होते ही फिर से लेट गया।

नानाजी आए। बोले— "अब कैसा है सिरदर्द?" मैंने कहा, "ठीक है" फिर भी एक पुड़िया और खिला गए।

अचानक मुझे भूख-सी लगी। फल या साबूदाने की खीर मिलने की उम्मीद की तो सुबह ही हत्या हो चुकी थी। अब नानीजी से जाकर कहूँ कि भूख लग रही है तो वे क्या करेंगी? ज्यादा से ज्यादा यही कि दूध पी ले। या नानाजी से पूछने चली जाएँगी— वो कह रहा है भूख लगी है। और फिर नानाजी क्या कहेंगे? वही जो सुबह कह रहे थे— तबियत ढीली हो तो सबसे अच्छा उपाय है भूखे रहना। इससे सारे विकार निकल जाएँगे।

क्या मुसीबत है! पड़े रहो! आखिर कब तक कोई पड़ा रह सकता है? इससे तो स्कूल चला जाता तो ही ठीक रहता। सजा मिलती तो मिल जाती। कितना मजा आता जब रिसेस में ठेले पर जाकर नमक मिर्च लगे अमरूद खाते कटर-कटर।

फिर झपकी लग गई।

लेकिन भूख के कारण ठीक से नींद भी नहीं आ रही थी। और आँख जरा लगती भी तो खाने ही खाने की चीजें दिखाई देतीं। गरमागरम खस्ता कचौड़ी... मावे की बर्फी... बेसन की चिक्की... गोलगप्पे। और सबसे ऊपर साबूदाने की खीर! पता नहीं क्यों साबूदाने की खीर सिर्फ उपवास और बीमारी में ही बनाई जाती है। जैसे गुझिया सिर्फ होली-दिवाली और पंजीरी सिर्फ पूर्णिमा के दिन ही बनाई जाती है। क्यों? क्या ये चीजें जब इच्छा हो तब नहीं बनाई जा सकतीं। कोई मना करता है?

हे भगवान! यह तो अच्छी खासी बोरियत हो गई। पूरा दिन कोई कैसे लेटा रहे? और शाम को...। क्या शाम को भी नानाजी बाहर जाने देंगे? सारे बच्चे हल्ला मचाते हुए आँगन में खेल रहे होंगे और मैं बिस्तर में पड़ा झख मार रहा होऊँगा। अक्लमन्द! और बनो बीमार। और आज दिया गया होमवर्क! किससे कॉपी माँगोगे? मैं रुआँसा हो गया।

पास के कमरे में होती खटर-पटर से अंदाजा हुआ कि मुन्नू स्कूल से आ गया है। तो क्या एक बज गया? अब बरतनों की आवाज आ रही है। शायद सब लोग खाना खाने बैठ रहे हैं। मुन्नू एक बार भी मुझे देखने नहीं आया। आया भी होगा तो दबे पाँव आया होगा और मुझे सोता जान लौट गया होगा।

...वो खाना खा रहे हैं। चबाने की आवाजें आ रही हैं। देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं

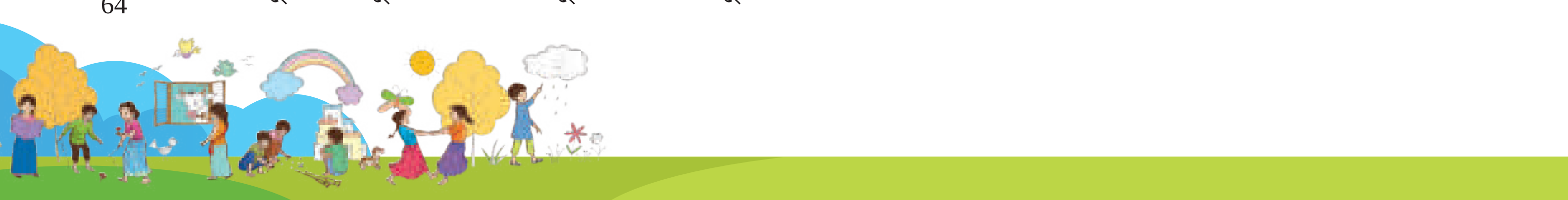

माँग लेता। लेकिन नहीं। भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएँगे। विकार निकल जाएँ बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।

... आज क्या खाना बना होगा? खुशबू तो दाल-चावल की आ रही है। अरहर की दाल में हींग-जीरे का बघार और ऊपर से बारीक कटा हरा धनिया और आधा चम्मच देसी घी। फिर उसमें उन्होंने नीबू निचोड़ा होगा। थोड़ा-सा इस बीमार को भी दे दे कोई।

...लेकिन खुशबू तो किसी और चीज की है। क्या हरी मिर्च तली गई है? उसे दाल-चावल में मसलकर खा रहे हैं। जब रहा नहीं गया तो मैं रजाई फेंककर खड़ा हो गया। दबे पाँव दरवाजे तक गया और चुपके से झाँककर देखा।

हाँ, दाल-चावल, तली हुई हरी मिर्च।

लेकिन मुन्नू आम चूस रहा था। आम! इस मौसम में! जरूर बंबई वाले चाचाजी ने भेजे होंगे। कैसे चूस रहा है। पूरी गुठली मुँह में ठूंसे। जैसे आम कभी देखे न हों। भुक्कड़ कहीं का। पूरा हाथ भी सान रहा है।

मैं जलन, गुस्से और कुढ़न में पाँव पटकता वापस बिस्तर में आ गया। उस पूरे दिन मुझे भूखे पेट ही रहना पड़ा। सारे विकार निकल गए।

इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।

— *स्वयं प्रकाश*

लेखक से परिचय

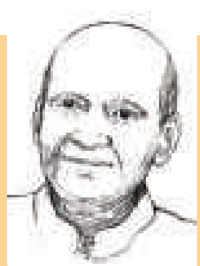

(1947–2019)

स्वयं प्रकाश हिंदी के जाने-माने लेखक थे। उनकी कहानियाँ बच्चों और बड़ों के दिलों को छू जाती हैं। स्वयं प्रकाश की कहानियाँ पढ़ते हुए लगता है मानो वे हमारे ही जीवन की कहानियाँ हैं, हमारे ही अनुभव उन्होंने लिख दिए हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कई मनोरंजक कहानियाँ लिखीं हैं, जिनमें उनके साहसिक कारनामे, मित्रता और जीवन के छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण पहलुओं को बड़ी रोचकता से प्रस्तुत किया गया है।

स्वयं प्रकाश की कहानियों की विशेषता यह है कि उन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है, जैसे कोई पुराना मित्र बातें कर रहा हो। उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि सोचने-समझने के लिए नई दिशाएँ भी देती हैं। *मात्रा और भार*, *अगली किताब*, *ज्योति रथ के सारथी*, *फीनिक्स* आदि इनकी कई रचनाएँ हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सही उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) बच्चे के विद्यालय न जाने का मुख्य कारण क्या था?

- उसका विद्यालय जाने का मन नहीं था।
- उसका साबूदाने की खीर खाने का मन था।
- उसने गृहकार्य नहीं किया था।
- उसे बुखार हो गया था।

(2) कहानी के अंत में बच्चे ने कहा, "इसके बाद स्कूल से छुट्टी मारने के लिए मैंने बीमारी का बहाना कभी नहीं बनाया।" बच्चे ने यह निर्णय लिया क्योंकि—

- घर में रहने के बजाय विद्यालय जाना अधिक रोचक है।
- बीमारी का बहाना बनाने से साबूदाने की खीर नहीं मिलती।
- झूठ बोलने से झूठ के खुलने का डर हमेशा बना रहता है।
- इस बहाने के कारण उसे दिनभर अकेले और भूखे रहना पड़ा।

(3) "लेटे-लेटे पीठ दुखने लगी" इस बात से बच्चे के बारे में क्या पता चलता है?

- उसे बिस्तर पर लेटे रहने के कारण ऊब हो गई थी।
- उसे अपनी बीमारी की कोई चिंता नहीं रह गई थी।
- वह बिस्तर पर आराम करने का आनंद ले रहा था।
- बीमारी के कारण उसकी पीठ में दर्द हो रहा था।

(4) "क्या ठाठ हैं बीमारों के भी!" बच्चे के मन में यह बात आई क्योंकि—

- बीमार व्यक्ति को बहुत आराम करने को मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को अच्छे खाने का आनंद मिलता है।
- बीमार व्यक्ति को विद्यालय नहीं जाना पड़ता है।
- बीमार व्यक्ति अस्पताल में शांति से लेटा रहता है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने परिजनों और शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

	शब्द		अर्थ
1.	साबूदाना	1.	किसी विशिष्ट कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान।
2.	वार्ड	2.	एक प्रकार का जाड़े का ओढ़ना जिसका कपड़ा दोहरा होता है और जिसमें रुई भरी होती है।
3.	नर्स	3.	शरीर का तापमान (जैसे बुखार) नापने का एक छोटा यंत्र।
4.	रजाई	4.	कई तरह की जड़ी-बूटियों और औषधियों को उबालकर उनके रस से बना पेय होता है। इसे सर्दी-जुकाम, खाँसी-बुखार और पाचन से जुड़ी समस्याओं में लाभदायक माना जाता है।
5.	थर्मामीटर	5.	रेशमी, ऊनी, मलमल जैसे नाजुक कपड़ों को पानी, साबुन और डिटर्जेंट के बिना मशीनों से साफ करने वाला व्यक्ति।
6.	काढ़ा	6.	उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित 17वीं सदी में निर्मित एक विश्व-प्रसिद्ध स्मारक जो सफेद संगमरमर से बना है।
7.	ड्राइक्लीनर	7.	एक दाल जिसे तुअर भी कहते हैं।
8.	ताजमहल	8.	सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा, सागूदाना, यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है।
9.	अरहर	9.	वह व्यक्ति जो रोगियों, घायलों या वृद्धों आदि की देखभाल करे।

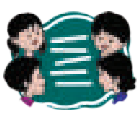

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) "मैंने सोचा बीमार पड़ने के लिए आज का दिन बिलकुल ठीक रहेगा। चलो बीमार पड़ जाते हैं।"

(ख) "देखो! उन्होंने एक बार भी आकर नहीं पूछा कि तू क्या खाएगा? पूछते तो मैं साबूदाने की खीर ही तो माँगता। कोई ताजमहल तो नहीं माँग लेता। लेकिन नहीं! भूखे रहो!! इससे सारे विकार निकल जाएँगे। विकार निकल जाएँ बस। चाहे इस चक्कर में तुम खुद शिकार हो जाओ।"

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) अस्पताल में बच्चे को कौन-कौन सी चीजें अच्छी लगीं और क्यों?

(ख) कहानी के अंत में बच्चे को महसूस हुआ कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। क्या आपको लगता है कि उसका निर्णय सही था? क्यों?

(ग) जब बच्चा बीमार पड़ने का बहाना बनाकर बिस्तर पर लेटा रहा तो उसके मन में कौन-कौन से भाव आ रहे थे?

(संकेत— मन में उत्पन्न होने वाले विकार या विचार को भाव कहते हैं, उदाहरण के लिए— क्रोध, दुख, भय, करुणा, प्रेम आदि।)

(घ) कहानी में बच्चे ने सोचा था कि "ठाठ से साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटे रहो और साबूदाने की खीर खाते रहो।" आपको क्या लगता है, असल में बीमार हो जाने और इस बच्चे की सोच में कौन-कौन सी समानताएँ और अंतर होंगे?

(संकेत— आप अपने अनुभवों के आधार पर इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं कि कहानी वाले बच्चे की कल्पना वास्तविकता से कितनी अलग है।)

(ङ) नानीजी और नानाजी ने बच्चे को बीमारी की दवा दी और उसे आराम करने को कहा। बच्चे को खाना नहीं दिया गया। क्या आपको लगता है कि उन्होंने सही किया? आपको ऐसा क्यों लगता है?

अनुमान और कल्पना से

(क) कहानी के अंत में बच्चा नानाजी और नानीजी को सब कुछ सच-सच बताने का निर्णय कर लेता तो कहानी में आगे क्या होता?

(संकेत— उसका दिन कैसे बदल जाता? उसकी सोच और अनुभव कैसे होते?)

(ख) कहानी में बच्चे की नानीजी के स्थान पर आप हैं। आप सारे नाटक को समझ गए हैं लेकिन चाहते हैं कि बच्चा सारी बात आपको स्वयं बता दे। अब आप क्या करेंगे?

(संकेत — इस सवाल में आपको नानीजी की जगह लेकर सोचना है और एक मनोरंजक योजना बनानी है जिससे बच्चा आपको स्वयं सारी बातें बता दे।)

(ग) कहानी में बच्चे के स्थान पर आप हैं और घर में अकेले हैं। अब आप ऊबने से बचने के लिए क्या-क्या करेंगे?

(घ) कहानी के अंत में बच्चे को लगा कि उसे स्कूल जाना चाहिए था। कल्पना कीजिए, अगर वह स्कूल जाता तो उसका दिन कैसा होता? अगले दिन जब वह स्कूल गया होगा तो उसने क्या-क्या किया होगा?

(ङ) कहानी में नानाजी और नानीजी ने बच्चे की बीमारी ठीक करने के लिए उसे दवाई दी और खाने के लिए कुछ नहीं दिया। अगर आप नानीजी या नानाजी की जगह होते तो क्या-क्या करते?

कहानी की रचना

"अस्पताल का माहौल मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पास हरे-हरे पेड़ झूम रहे थे। न ट्रैफिक का शोरगुल, न धूल, न मच्छर-मक्खी...। सिर्फ लोगों के धीरे-धीरे बातचीत करने की धीमी-धीमी गुनगुन। बाकी एकदम शांति।"

इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों में ऐसा लग रहा है मानो हमारी आँखों के सामने अस्पताल का चित्र-सा बन गया हो। लेखन में इसे 'चित्रात्मक भाषा' कहते हैं। अनेक लेखक अपनी रचना को रोचक और सरस बनाने के लिए उपयुक्त स्थानों पर अनेक वस्तुओं, कार्यों, स्थानों आदि का विस्तार से वर्णन करते हैं।

लेखक ने इस कहानी को सरस और रोचक बनाने के लिए और भी अनेक तरीकों का उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने कहानी में 'बच्चे द्वारा कल्पना करने' का भी प्रयोग किया है (जब बच्चा अकेले लेटे-लेटे घर और बाहर के लोगों के बारे में सोच रहा है)। इस कहानी में ऐसी कई विशेषताएँ छिपी हैं।

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने समूह में मिलकर इस पाठ की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) कहानी में से निम्नलिखित के लिए उदाहरण खोजकर लिखिए—

विशेष बिंदु	कहानी में से उदाहरण
बच्चे द्वारा पिछली बातों को याद किया जाना	
हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग किया जाना	
बच्चे द्वारा सोचने के तरीके में बदलाव आना	
कहानी में किसी का किसी बात से अनजान होना	
बच्चे द्वारा स्वयं से बातें किया जाना	

समस्या और समाधान

कहानी को एक बार पुन: पढ़कर पता लगाइए—

(क) बच्चे के सामने क्या समस्या थी? उसने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?

(ख) नानीजी-नानाजी के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने उस समस्या का क्या समाधान निकाला?

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में 'बीमार' से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए—

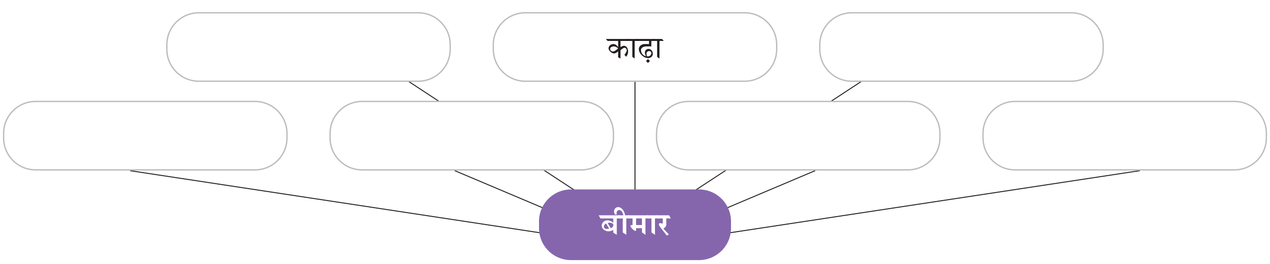

खोजबीन

कहानी में से वे वाक्य ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि—

(क) कहानी में सर्दी के मौसम की घटनाएँ बताई गई हैं।

(ख) बच्चे को बहाना बनाने के परिणाम का आभास हो गया।

(ग) बच्चे को खाना-पीना बहुत प्रिय है।

(घ) बच्चे को स्कूल जाना अच्छा लगता है।

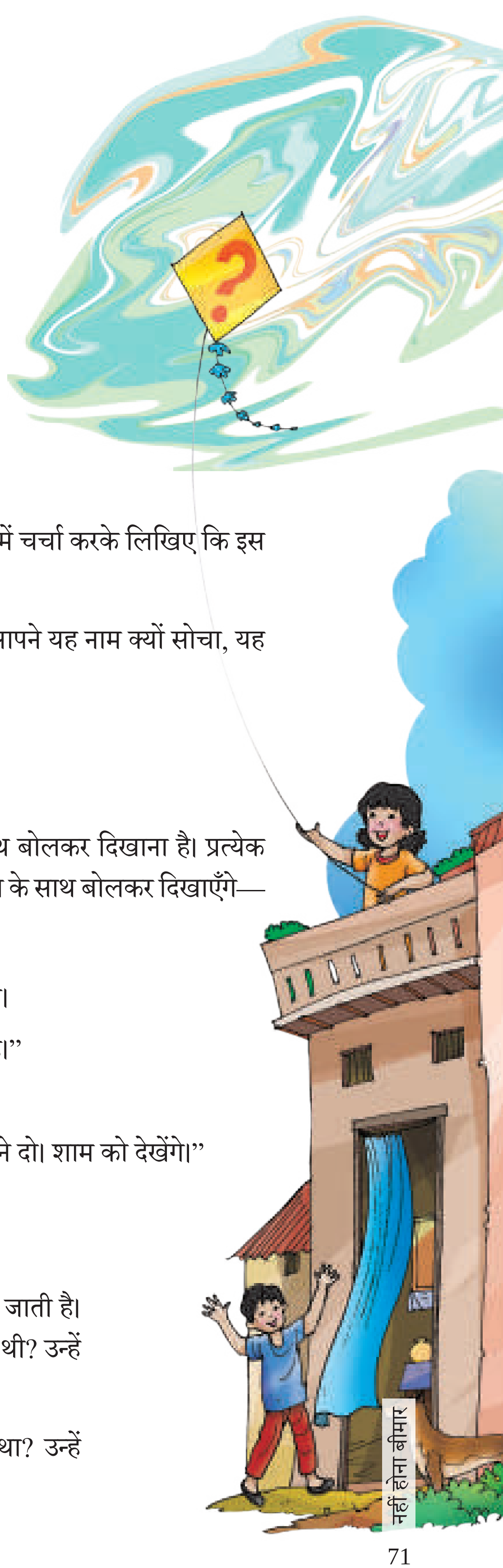

शीर्षक

(क) आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम 'नहीं होना बीमार' है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि इस कहानी का यह नाम उपयुक्त है या नहीं। अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।

अभिनय

कहानी में से चुनकर कुछ संवाद नीचे दिए गए हैं। आपको इन्हें अभिनय के साथ बोलकर दिखाना है। प्रत्येक समूह से बारी-बारी से छात्र/छात्राएँ कक्षा में सामने आएँगे और एक संवाद अभिनय के साथ बोलकर दिखाएँगे—

1. "बुखार आ गया।" मैंने कराहते हुए कहा।
2. "आपको पता नहीं चल रहा। थर्मामीटर लगाकर देखिए।" मैंने कहा।
3. "मेरे सिर में दर्द हो रहा है। पेट भी दुख रहा है और मुझे बुखार भी है।"
4. नानाजी आए। बोले, "अब कैसा है सिरदर्द?"
5. फिर नानाजी बोले, "आज इसे कुछ खाने को मत देना। आराम करने दो। शाम को देखेंगे।"

चेहरों पर मुस्कान, मुँह में पानी

(क) इस कहानी में अनेक रोचक घटनाएँ हैं जिन्हें पढ़कर चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। इस कहानी में किन बातों को पढ़कर आपके चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी? उन्हें रेखांकित कीजिए।

(ख) इस कहानी में किन वाक्यों को पढ़कर आपके मुँह में पानी आ गया था? उन्हें रेखांकित कीजिए।

(इन्हें रेखांकित करने के लिए आप किसी अन्य रंग का उपयोग कर सकते हैं।)

लेखन के अनोखे तरीके

मैं बिना आवाज किए दरवाजे तक गया और ऐसे झाँककर देखने लगा जिससे किसी को पता न चले कि मैं बिस्तर से उठ गया हूँ।

इस बात को कहानी में इस प्रकार विशेष रूप से लिखा गया है—

"दबे पाँव दरवाजे तक गया और चुपके से झाँककर देखा।"

इस कहानी में अनेक स्थानों पर वाक्यों को विशेष ढंग से लिखा गया है। साधारण बातों को कुछ अलग तरह से लिखने से लेखन की सुंदरता बढ़ सकती है।

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी में ढूँढ़िए कि इन बातों को कैसे लिखा गया है—

1. ऐसा लगा मानो हमें देखकर सुधाकर काका खुश हो गए।
2. खिड़कियाँ बहुत बड़ी थीं और उनके बाहर हरे पेड़ हवा से हिल रहे थे।
3. वहाँ केवल लोगों के फुसफुसाने की आवाजें आ रही थीं।
4. फुसफुसाने की आवाजों के सिवा वहाँ कोई आवाज नहीं थी।
5. बीमार लोगों के बहुत मजे होते हैं।
6. मैं झूठमूठ बीमार पड़ जाता हूँ।

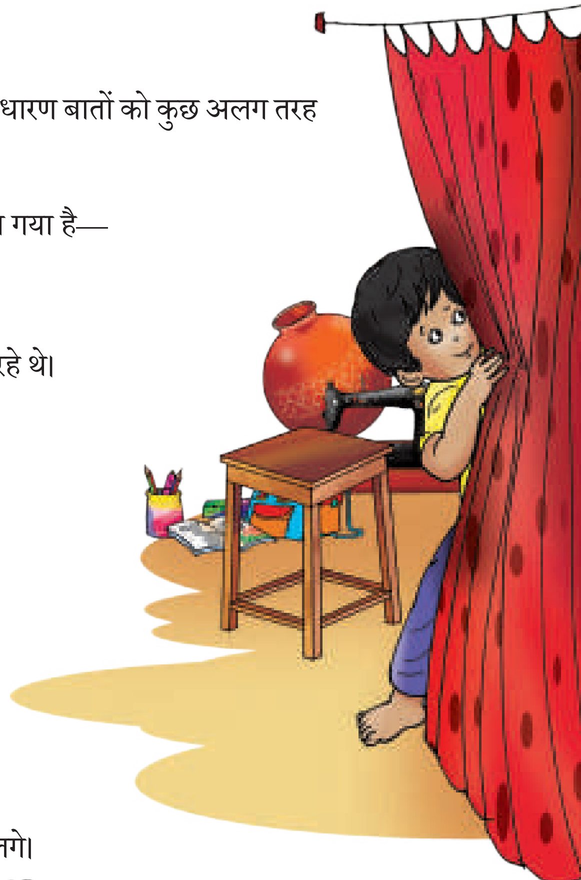

विराम चिह्न

"देखें!" नानाजी ने रजाई हटाकर मेरा माथा छुआ। पेट देखा और नब्ज देखने लगे।

इस बीच नानीजी भी आ गईं। "क्या हुआ?", नानीजी ने पूछा।

पिछले पृष्ठ पर दिए गए वाक्यों को ध्यान से देखिए। इन वाक्यों में आपको कुछ शब्दों से पहले या बाद में कुछ चिह्न दिखाई दे रहे हैं। इन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए विराम चिह्न को कहानी में ढूँढ़िए। ध्यानपूर्वक देखकर समझिए कि इनका प्रयोग वाक्यों में कहाँ-कहाँ किया जाता है। आपने जो पता किया, उसे नीचे लिखिए—

विराम चिह्न		कहाँ प्रयोग किया जाता है
पूर्ण विराम	।	
अल्प विराम	,	
प्रश्नवाचक चिह्न	?	
विस्मयादिबोधक चिह्न	!	
उद्धरण चिह्न	“ ”	

आवश्यकता हो तो इस प्रश्न का उत्तर पता करने के लिए आप अपने परिजनों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

कैसी होगी गली

“मुझे बड़ी तेज इच्छा हुई कि इसी समय बाहर निकलकर दिन की रोशनी में अपनी गली की चहल-पहल देखूँ”

आपने कहानी में बच्चे के घर के साथ वाली गली के बारे में बहुत-सी बातें पढ़ी हैं। उन बातों और अपनी कल्पना के आधार पर उस गली का एक चित्र बनाइए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) बच्चे ने अस्पताल के वातावरण का विस्तार से सुंदर वर्णन किया है। इसी प्रकार आप अपनी कक्षा का वर्णन कीजिए।

(ख) कहानी में बच्चे को घर में अकेले दिन भर लेटे रहना पड़ा था। क्या आप कभी कहीं अकेले रहे हैं? उस समय आपको कैसा लग रहा था? आपने क्या-क्या किया था?

(ग) कहानी में आम खाने वाले मुन्नू को देखकर बच्चे को ईर्ष्या हुई थी। क्या आपको कभी किसी से या किसी को आपसे ईर्ष्या हुई है? आपने तब क्या किया था ताकि यह भावना दूर हो जाए?

(घ) कहानी में नानाजी-नानीजी बच्चे का पूरा ध्यान रखने का प्रयास करते हैं। आपके घर और विद्यालय में आपका ध्यान कौन-कौन रखते हैं? कैसे?

(ङ) आप अपने परिजनों और मित्रों का ध्यान कैसे रखते हैं? क्या-क्या करते हैं या क्या-क्या नहीं करते हैं ताकि उन्हें कम-से-कम परेशानी हो?

बहाने

(क) कहानी में बच्चे ने बीमारी का बहाना बनाया ताकि उसे स्कूल न जाना पड़े। क्या आपने कभी किसी कारण से बहाना बनाया है? यदि हाँ, तो उसके बारे में बताइए। उस समय आपके मन में कौन-कौन से भाव आ-जा रहे थे? आप कैसा अनुभव कर रहे थे?

(ख) आमतौर पर बनाए जाने वाले बहानों की एक सूची बनाइए।

(ग) बहाने क्यों बनाने पड़ते हैं? बहाने न बनाने पड़ें, इसके लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

अनुमान

"मैं रजाई में पड़ा-पड़ा घर में चल रही गतिविधियों का अनुमान लगाता रहा।"

कहानी में बच्चे ने अनेक प्रकार के अनुमान लगाए हैं। क्या आपने कभी किसी अनदेखे व्यक्ति/वस्तु/पशु-पक्षी/स्थान आदि के विषय में अनुमान लगाए हैं? किसके बारे में? क्या? कब? विस्तार से बताइए।

(संकेत — जैसे पेड़ से आने वाली आवाज सुनकर किसी प्राणी का अनुमान लगाना; कहीं दूर रहने वाले किसी संबंधी/रिश्तेदार के विषय में सुनकर उसके संबंध में अनुमान लगाना।)

घर का सामान

"बहुत ढूँढ़ा गया पर थर्मामीटर मिला ही नहीं। शायद कोई माँगकर ले गया था।"

कहानी में बच्चे के घर पर थर्मामीटर (तापमापी) खोजने पर वह मिल नहीं पाता। आमतौर पर हमारे घरों में कोई न कोई ऐसी वस्तु होती है जिसे खोजने पर भी वह नहीं मिलती, जिसे कोई माँगकर ले जाता है या हम जिसे किसी से माँगकर ले आते हैं। अपने घर को ध्यान में रखते हुए ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए—

जो खोजने पर भी नहीं मिलती हैं	जो कोई माँगकर ले जाते हैं	जो आप किसी से माँगकर लाते हैं

खान-पान और आप

(क) कहानी में सुधाकर काका को बीमार होने पर साबूदाने की खीर दी गई थी। आपके घर में किसी के बीमार होने पर उसे क्या-क्या खिलाया जाता है?

(ख) कहानी में बच्चे को बहुत-सी चीजें खाने का मन है। आपका क्या-क्या खाने का बहुत मन करता है?

(ग) कहानी में बच्चा सोचता है कि साबूदाने की खीर सिर्फ बीमारी या उपवास में क्यों मिलती है। आपके घर में ऐसा क्या-क्या है, जो केवल विशेष अवसरों या त्योहारों पर ही बनता है?

(घ) कहानी में बच्चा सोचता है कि अगर वह स्कूल जाता तो उसे ठेले पर नमक-मिर्च वाले अमरूद खाने को मिलते। आप अपने विद्यालय में क्या-क्या खाते-पीते हैं? विद्यालय में आपका रुचिकर भोजन क्या है?

(ङ) इस कहानी में भोजन से जुड़ी बच्चे की कई रोचक बातें बताई गई हैं। आपके बचपन की भोजन से जुड़ी कोई विशेष याद क्या है, जिसे आप अब भी याद करते हैं?

(च) कहानी में बच्चा भोजन की सुंगध से रजाई फेंककर रसोई में झाँकने लगा। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि घर में किसी विशेष खाने की सुंगध से आप भी रसोई में जाकर तुरंत देखना चाहते हैं कि क्या पक रहा है? आपको किस-किस खाने की सुंगध सबसे अधिक पसंद है?

आज की पहेली

कहानी में आपने खाने-पीने की अनेक वस्तुओं के बारे में पढ़ा है। अब हम आपके सामने खाने-पीने की वस्तुओं या व्यंजनों से जुड़ी कुछ पहेलियाँ लाए हैं। इन्हें बूझिए और उत्तर लिखिए—

पहेली	उत्तर
1. रोटी जैसा होता है ये, पर आलू से भरा-भरा घी-तेल साथी हैं इसके, दही-चटनी से हरा-भरा	
2. दाल-चावल का मेल है यह तो, भारत भर में तुम इसे पाओ, दक्षिण में ये खूब है बनता, चटनी-सांभर संग-संग खाओ, गोल-तिकोना इसका आकार, गरम-गरम तुम इसे बनाओ, कौन-सा व्यंजन होता है यह, बोलो बोलो नाम बताओ।	
3. नाश्ते का यह बड़ा है खास, महाराष्ट्र में इसका वास, मिर्च-मसाले से भरपूर, संग बटाटा भी मशहूर, चटपटी चटनी लगी किसे? बूझो नाम तो खाएँ इसे!	
4. बेसन से बने चौकोर या गोल, गुजरात में बड़ा है बोल। खाने में नर्म, पानी भरे, धनिया मिर्ची संग सजे।	

5. गोल-गोल पानी से भरके, चटनी सोंठ संग इसे खाओ उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम, गली-मुहल्लों में भी पाओ। खट्टी-मीठी, तीखी हाय, खाना तो इसे हर कोई चाहे!	
6. हरे साग संग मुझको पाओ, मक्खन के संग मुझको खाओ। आटा मेरा हल्का पीला, स्वाद मेरा है बड़ा रंगीला।	
7. आग में पकती हूँ, सोंधा-सा स्वाद, साथ में खाओ चूरमा, बन जाए फिर बात, गरम दाल से मुझको प्यार, राजस्थान का मैं उपहार।	
8. गोल-गोल और श्वेत रंग का रस से भरा हुआ हूँ खूब। मीठी दुनिया का महाराजा चाशनी मीठी डूब-डूब।	

6 गिरिधर कविराय की कुंडलिया

0771CH06

(1)

बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे॥

(2)

बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ॥
ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती॥

— *गिरिधर कविराय*

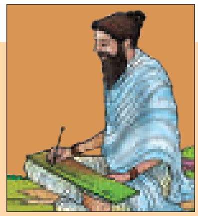

कवि से परिचय

अठारहवीं सदी में जन्मे गिरिधर कविराय को उनकी लोकप्रचलित कुंडलियों के लिए याद किया जाता है। उनकी रचनाओं में बहुत से ऐसे नीतिपरक पद मिलते हैं जिन्हें अक्सर कहावत के रूप में सुना जाता है जैसा कि अभी आपने पढ़ा— "बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय" या "बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।" उनकी कविताएँ जन-मानस में इतनी प्रसिद्ध हैं कि लोग उनका कहावतों की तरह उपयोग करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में लाठी जैसी वस्तु के उपयोग भी बताए और यह भी बताया कि धन अधिक हो जाए तो क्या करना चाहिए। अपनी रचनाओं में लोकनीति या घर-गृहस्थी के साधारण लोक व्यवहार की बातें सीधे और सरल शब्दों में कहने के लिए भी वे जाने जाते हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इन कुंडलियों पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) पाठ के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सही उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) "बिना बिचारे" काम करने के क्या परिणाम होते हैं?

- दूसरों से प्रशंसा मिलती है।
- मन में शांति बनी रहती है।
- अपना काम बिगड़ जाता है।
- खान-पान सम्मान मिलता है।

(2) "चित्त में चैन" न पा सकने का मुख्य कारण क्या है?

- प्रयास करने पर भी टाला न जा सकने वाला दुख
- बिना सोचे-समझे किए गए कार्य की असफलता
- खान-पान, सम्मान और राग-रंग का अभाव
- दुनिया द्वारा की जाने वाली निंदा और उपहास

(3) "बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ" पंक्ति द्वारा कौन-सी सलाह दी गई है?

- भविष्य की सफलता के लिए अतीत की गलतियों से सीखने की
- अतीत की असफलताओं को भूलकर भविष्य पर ध्यान देने की
- अतीत और भविष्य दोनों घटनाओं को समान रूप से याद रखने की
- अतीत और भविष्य दोनों को भूलकर केवल वर्तमान में जीने की

(4) "जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ" पंक्ति का क्या अर्थ है?

- हमें कठिनाइयों और चुनौतियों से बचना चाहिए।
- हमें आराम की तलाश करने में मन लगाना चाहिए।
- हमें असंभव और कठिन कार्यों पर ध्यान देना चाहिए।
- हमें सहज जीवन पर ध्यान देना चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

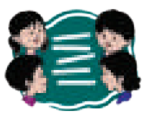

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥"

(ख) "बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ॥"

मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं, उनसे संबंधित अर्थ वाली स्तंभ 2 की पंक्तियों से उनका मिलान कीजिए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै। खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥	1. जो कार्य बिना विचार किए किया जाता है, वह लंबे समय तक मन में खटकता रहता है और उसकी पीड़ा से छुटकारा पाना मुश्किल होता है।
2. कह गिरिधर कविराय दुख कछु टरत न टारे। टकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे॥	2. बिना विचार के किए गए कार्य के कारण मन अशांत रहता है। अच्छा खान-पान, सम्मान या जीवन की खुशियाँ भी उस व्यक्ति को सुख नहीं दे पातीं।
3. ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। दुर्जन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै॥	3. अपने मन को इस बात पर विश्वास करना सिखाओ कि भविष्य की खुशी को समझते हुए अतीत के दुखों को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए।
4. कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती। आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती॥	4. ऐसे कार्य कीजिए कि किसी बुरे व्यक्ति को हँसने का मौका न मिले और मन में किसी प्रकार का दोष या अपराधबोध न हो।

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) "बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।"

कविता में बिना विचार किए कार्य करने के क्या नुकसान बताए गए हैं?

(ख) "बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।"

कुंडलिया में जो बातें सैंकड़ों साल पहले कही गई थीं, क्या वे आपके लिए भी उपयोगी हैं? कैसे? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) "खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै॥"

इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से देखकर लिखिए। प्रत्येक के लिए एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) आपने पढ़ा है कि “बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय...।” कल्पना कीजिए कि आपके एक मित्र ने बिना सोचे-समझे एक बड़ा निर्णय लिया है। वह निर्णय क्या था और उसका क्या प्रभाव पड़ा? इसके बारे में एक रोचक कहानी अपने साथियों के साथ मिलकर बनाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

(ख) कल्पना कीजिए कि “बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ...।” कविता निम्नलिखित के लिए लिखी गई है —

- आप
- आपका कोई सहपाठी
- आपका कोई परिजन
- आपके कोई शिक्षक
- कोई पक्षी
- कोई पशु

इनकी कौन-कौन सी समस्याएँ होंगी? यह कविता उन्हें कैसे प्रेरित करेगी?

(ग) कल्पना कीजिए कि आप एक ऐसे व्यक्ति से मिले हैं, जो हमेशा बीती बातों में खोया रहता है। आप उसे समझाने के लिए क्या-क्या कहेंगे?

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में ‘चित्त’ या ‘मन’ से जुड़े शब्द कुंडलियों में से चुनकर लिखिए—

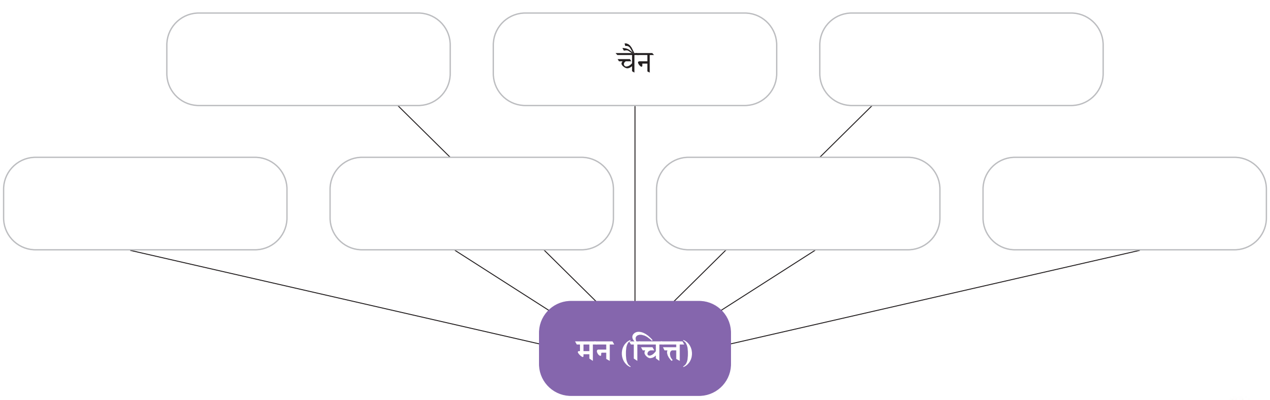

कविता की रचना

“बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय। काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय।।”	“बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ। जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ।।”

इन पंक्तियों को लय के साथ बोलकर देखिए। इन्हें बोलने में बराबर समय लगा या अलग? आपने ध्यान दिया होगा कि इन पंक्तियों को बोलने में बराबर समय लगता है। इस कारण इन कुंडलियों की सुंदरता बढ़ गई है।

आप ध्यान देंगे तो इन कुंडलियों में आपको ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। जैसे प्रत्येक कुंडलिया का पहला या दूसरा शब्द उसका अंतिम शब्द भी है। दो-दो पंक्तियों में बातें कही गई हैं। कुंडलिया पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानो कोई हमसे संवाद या बातचीत कर रहा है आदि। कुछ विशेषताएँ आपको दोनों कुंडलियों में दिखाई देंगी, कुछ विशेषताएँ दोनों में से किसी एक में दिखाई देंगी।

(क) अब आप पाठ में दी गई दोनों कुंडलियों को ध्यान से देखिए और अपने-अपने समूह में मिलकर इनकी विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

जो विशेषताएँ दोनों कुंडलियों में हैं	जो विशेषताएँ किसी एक कुंडलिया में हैं

(ख) नीचे एक स्तंभ में कविता की पंक्तियों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं और उनसे संबंधित पंक्तियाँ दूसरे स्तंभ में दी गई हैं। कविता की विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए—

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है।	1. कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती।।
2. कवि के नाम का उल्लेख किया गया है।	2. ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै। दुर्जन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै।।
3. एक-दूसरे के विपरीत विचार एक साथ आए हैं।	3. बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
4. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं।	4. बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।

(संकेत— आप कविता की पंक्तियों में कुछ और विशेषताएँ भी खोज सकते हैं।)

काल से जुड़े शब्द

“बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।”

इस वाक्य में ‘बीती’ शब्द अतीत यानी ‘भूतकाल’ के कार्यों को व्यक्त कर रहा है और ‘आगे’ शब्द ‘भविष्य’ के कार्यों को व्यक्त कर रहा है। इसी प्रकार ‘वर्तमान’ समय में होने वाले कार्यों को ‘आज’ जैसे शब्दों

से व्यक्त किया जा सकता है। रोचक बात यह है कि अनेक शब्दों का प्रयोग बीते हुए समय, आने वाले समय और वर्तमान समय को बताने वाले, तीनों प्रकार के वाक्यों में किया जा सकता है।

(क) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनका प्रयोग करते हुए तीनों प्रकार के 'काल' व्यक्त करने वाले तीन-तीन वाक्य बनाइए—

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्य काल
कल	आज	कल
परसों	अभी-अभी	परसों
पहले	अब	अगले दिन/साल/महीने
पिछला	हमेशा	आगामी (आने वाले समय में)
बीते हुए	आजकल	जल्दी ही

(ख) आपने जो वाक्य बनाए हैं, उन्हें ध्यान से देखिए। पहचानिए कि इन वाक्यों में किन शब्दों से पता चल रहा है कि वाक्य में कार्य भूतकाल में हुआ, वर्तमान काल में हुआ है या भविष्य काल में होगा? वाक्यों में उन शब्दों को रेखांकित कीजिए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे।।" का अर्थ है 'बिना सोचे किए गए कार्य मन में चुभते रहते हैं।' क्या आपने कभी ऐसा अनुभव किया है? उस घटना को साझा कीजिए।

(ख) "बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।" का अर्थ है 'अतीत को भूलना और भविष्य पर ध्यान देना चाहिए।' क्या आप इस बात से सहमत हैं? क्यों? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) पाठ में दी गई दोनों कुंडलियों के आधार पर आप अपने जीवन में कौन-कौन से बदलाव लाना चाहेंगे?

(घ) "खान पान सन्मान राग रंग मनहिं न भावै।।"

इस पंक्ति में खान-पान, सम्मान और राग-रंग अच्छा न लगने की बात की गई है। आप इसमें से किसे सबसे आवश्यक मानते हैं? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

हँसी

"जग में होत हँसाय"

(क) कभी-कभी लोग दूसरों की गलतियों पर ही नहीं, उनके किसी भी कार्य पर हँस देते हैं। अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी कुछ स्थितियों की सूची बनाइए, जब किसी को आप पर या आपको किसी पर हँसी आई हो।

(ख) ऐसी दोनों स्थितियों में आपको कैसा लगता है और दूसरों को कैसा लगता होगा?

(ग) सोचिए कि कोई व्यक्ति आपकी किसी भूल पर हँस रहा है। ऐसे में आप क्या कहेंगे या क्या करेंगे ताकि उसे एहसास हो जाए कि इस बात पर हँसना ठीक नहीं है?

सोच-समझकर

"बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।"

(क) आज के समय में कुछ लोग जल्दी में कार्य कर देते हैं या जल्दी में निर्णय ले लेते हैं। कुछ ऐसी स्थितियाँ बताइए जहाँ जल्दबाजी में निर्णय लेना या कार्य करना हानिकारक हो सकता है।

(ख) मान लीजिए कि आपको या आपके किसी परिजन को नीचे दिए गए संदेश मिलते हैं। ऐसे में आप क्या करेंगे?

	संदेश	आप करें
1.	आपका बैंक खाता बंद होने वाला है।	ओ.टी.पी. किसी को न दें। तुरंत कॉल काट दें। अपने बैंक से संपर्क करें।
2.	बधाई हो! आपने 10 लाख रुपये की लॉटरी जीती है। सत्यापन के लिए ₹5000 इस नंबर पर अभी भेज दें।	संदिग्ध वेबसाइट पर कोई भुगतान (पेमेंट) न करें। ऐसी वेबसाइट को साइबर क्राइम सेल में रिपोर्ट करें।
3.	गलती से आपके नंबर पर ₹1000 का रिफंड भेजा है। कृपया रिफंड वापस भेज दें।	किसी अनजान को पैसा न भेजें। अपने बैंक ऐप में सभी लेन-देन की जाँच करें। यदि पैसा कट गया है तो तुरंत बैंक को सूचित करें।
4.	आपका सिम कार्ड बंद होने वाला है। के.वाई.सी. अपडेट करने के लिए हमें आधार और पैन की फोटो भेजें।	इस प्रकार के कॉल को तुरंत काट दें। बैंक से सीधे संपर्क करें। फोन पर आधार या पैन या कोई व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें।
5.	आपके मनपसंद मोबाइल पर 70 प्रतिशत तक की छूट, ऑफर खत्म होने से पहले यहाँ पेमेंट करें।	संदिग्ध छूट वाले या मुफ्त वाले झाँसे में न फँसे। लिंक पर क्लिक न करें।
6.	मैं तुम्हारा चाचा बोल रहा हूँ। ट्रेन में फँसा हूँ। तुरंत ₹5000 इस नंबर पर भेज दो।	व्यक्ति की पहचान की पुष्टि करें, तुरंत पैसे ट्रांसफर न करें। परिवार के अन्य सदस्यों से बात करें।

7.	इस ऐप को डाउनलोड करें और ₹1000 का कैशबैक पाएँ।	किसी अनजानी वेबसाइट से कोई ऐप डाउनलोड न करें। ऐप की समीक्षा और रेटिंग की जाँच करें। संदिग्ध ऐप को फोन आदि से हटा दें।
8.	यहाँ मुफ्त गिफ्ट पाने का मौका है। इस लिंक पर क्लिक करें और जानकारी दर्ज करें।	किसी संदिग्ध ऐड (विज्ञापन) पर क्लिक न करें। अपने ब्राउजर में पॉप-अप ब्लॉकर चालू करें।
9.	आपको बिना गारंटी के तुरंत ₹50,000 का ऋण मिल सकता है। अभी प्रोसेसिंग फीस भरें।	केवल अधिकृत बैंकों से संपर्क करें। ऋण मंजूरी फीस के नाम पर किसी को पैसा न भेजें। साइबर क्राइम सेल में 1930 नंबर पर सूचित करें।
10.	इस लिंक पर क्लिक करें और ₹100 का फ्री मोबाइल रिचार्ज पाएँ।	ऐसी किसी भी लॉटरी पर भरोसा न करें। इसके विषय में साइबर सेल को सूचित करें।
11.	आपके ए.टी.एम. कार्ड की वैधता समाप्त हो रही है। इसे तुरंत अपडेट करने के लिए पिन बताएँ।	ए.टी.एम. कार्ड की जानकारी किसी के साथ साझा न करें। बैंक के असली उपभोक्ता सहायता फोन नंबर पर संपर्क करें। ए.टी.एम. पिन तुरंत बदलें।
12.	आपका पेमेंट फँसा हुआ है। इसे रिफंड करने के लिए ये क्यू.आर. कोड स्कैन करें।	किसी अज्ञात व्यक्ति के भेजे क्यू.आर. कोड को स्कैन न करें। किसी संदिग्ध गतिविधि को तुरंत बैंक और पुलिस को रिपोर्ट करें।

* राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल— https://cybercrime.gov.in

(ग) नीचे कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। इन स्थितियों में बिना सोचे-समझे कार्य करने या निर्णय लेने के क्या परिणाम हो सकते हैं—

- सोशल मीडिया पर झूठा संदेश या असत्य समाचार पर भरोसा करके उसे सबको भेज दिया।
- जल्दबाजी में बिना हेलमेट के बाइक चलाने पर पुलिस ने चालान काट दिया।
- बिना माता-पिता से पूछे ऑनलाइन गेम पर पैसे खर्च कर दिए।

आज की पहेली

"खान पान सन्मान"

इस पंक्ति के तीनों शब्दों में केवल एक मात्रा का बार-बार उपयोग किया गया है। (आ की मात्रा)

ऐसे ही दो वाक्य नीचे दिए गए हैं जिसमें केवल एक मात्रा का उपयोग किया गया है—

नीली नदी धीमी थी।

चींटी चीनी जीम गई।

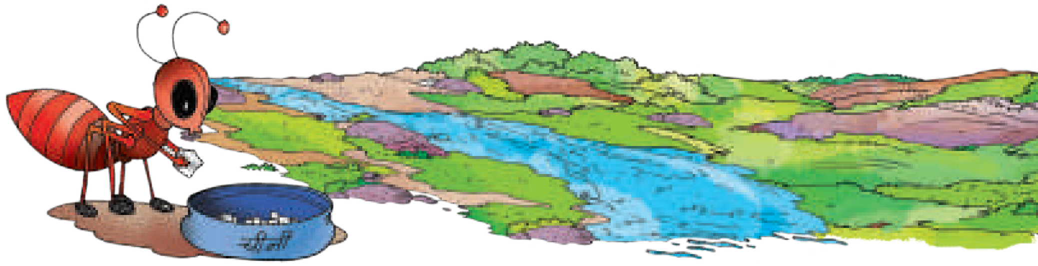

अब आप इसी प्रकार के वाक्य अलग-अलग मात्राओं के लिए बनाइए। ध्यान रहे, आपके वाक्यों का कोई न कोई अर्थ होना चाहिए। आप एक वाक्य में केवल एक मात्रा को बार-बार या बिना मात्रा वाले शब्दों का ही उपयोग कर सकते हैं।

मात्रा	वाक्य
आ	
इ	
ई	
उ	
ऊ	
ऋ	
ए	
ऐ	
ओ	
औ	

खोजबीन के लिए

आपने इस पाठ में गिरिधर कविराय की कुंडलिया “बिना विचारे जो करै....।” को पढ़ा। अब आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी का प्रयोग करके एक अन्य कहानी “बिना विचारे करो न काम” सुन सकते हैं—

बिना विचारे

https://www.youtube.com/watch?v=9zEP4YEP-rs

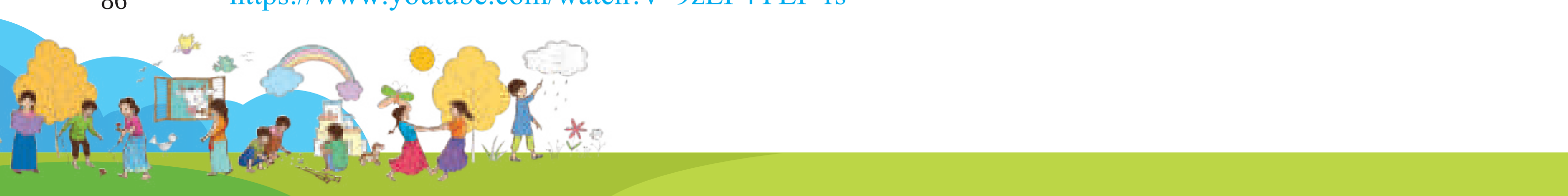

7 फूल और काँटा

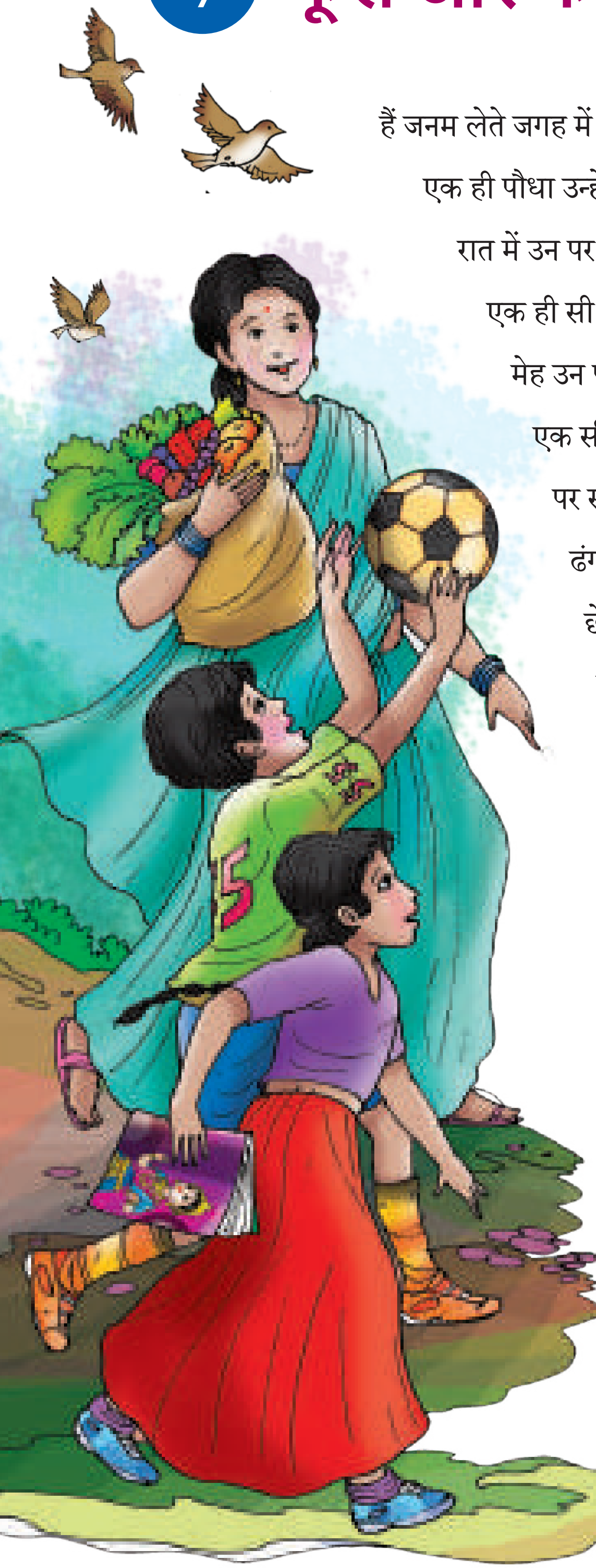

हैं जनम लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।
मेह उन पर है बरसता एक सा,
एक सी उन पर हवायें हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर बसन।
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन।
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला।
है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

— *अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

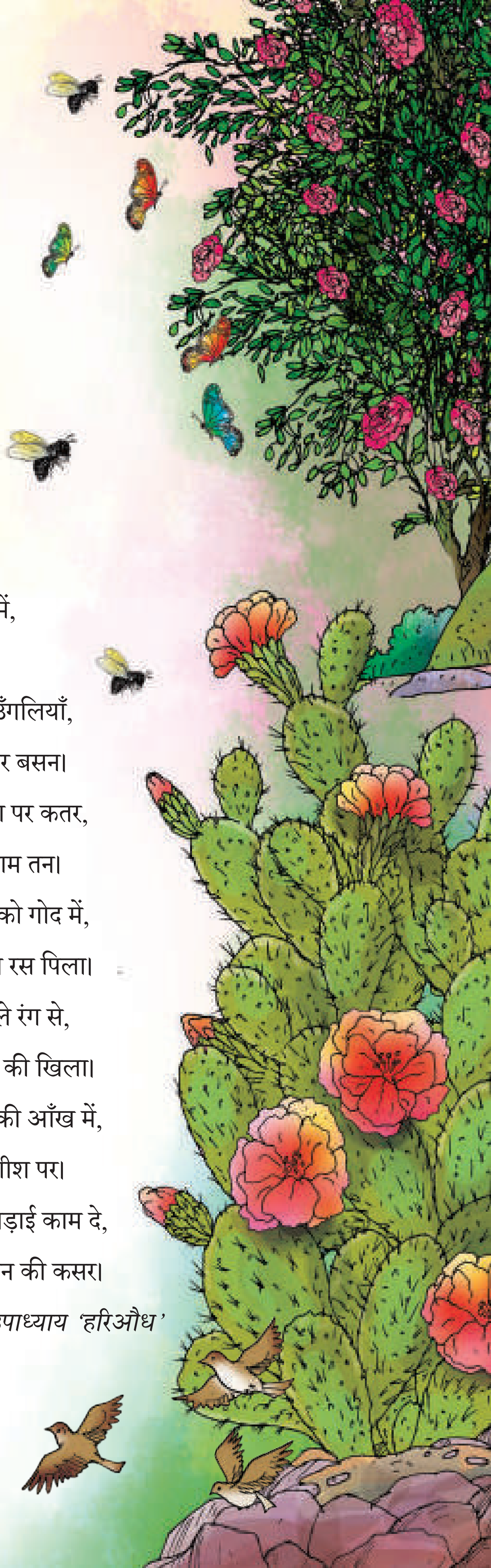

कवि से परिचय

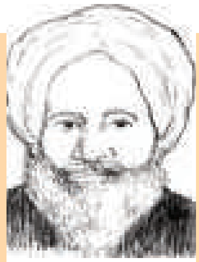
(1865-1947)

'उठो लाल, अब आँखें खोलो। पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।' बचपन में यह प्यारी कविता आपने भी पढ़ी होगी। इस कविता को रचने वाले अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ही 'फूल और काँटा' के कवि हैं। बच्चों के लिए उन्होंने अनेक रोचक कविताएँ लिखी हैं। उनका जन्म आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। हरिऔध जी की चर्चित काव्यकृति 'प्रियप्रवास' को खड़ी बोली का पहला महाकाव्य माना जाता है। बच्चों के लिए उनके अनेक कविता-संकलन प्रकाशित हैं जिनमें 'चंद्र-खिलौना' और 'खेल-तमाशा' प्रसिद्ध हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) कविता के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) कविता में काँटे के बारे में कौन-सा वाक्य सत्य है?

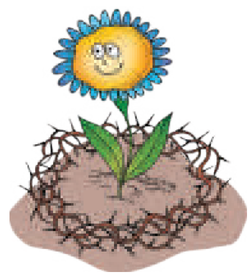

- काँटा अपने आस-पास की सुगंध को नष्ट करता है।
- काँटा तितलियों और भौंरों को आकर्षित करता है।
- काँटा उँगलियों को छेदता है और वस्त्र फाड़ देता है।
- काँटा पौधे को हानि पहुँचाता है।

(2) कविता में फूल और काँटे में समानताओं और विभिन्नताओं का उल्लेख किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य इन्हें सही रूप में व्यक्त करता है?

- फूल सुंदरता का प्रतीक है और काँटा कठोरता का।
- फूल और काँटे के बारे में लोगों के विचार समान होते हैं।
- फूल और काँटे एक ही पौधे पर उगते हैं लेकिन उनके स्वभाव भिन्न होते हैं।
- फूल और काँटे को समान देखभाल मिलती है फिर भी उनके रंग-ढंग अलग होते हैं।

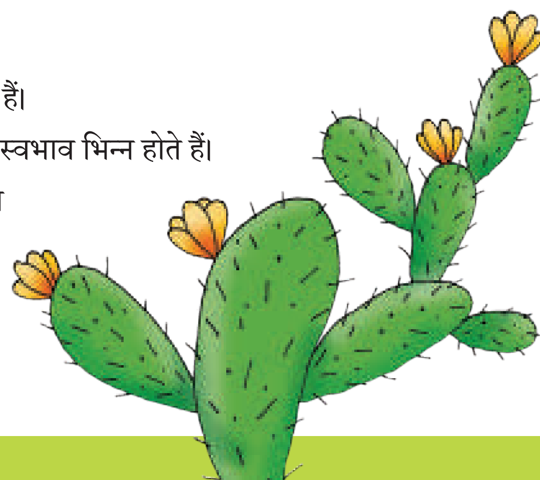

(3) कविता के आधार पर कौन-सा निष्कर्ष उपयुक्त है?

- व्यक्ति का कुल ही उसके सम्मान का आधार होता है।
- व्यक्ति के कार्यों के कारण ही लोग उसका सम्मान करते हैं।
- कुल की प्रतिष्ठा हमेशा व्यक्ति के गुणों से बड़ी होती है।
- यदि व्यक्ति अच्छे कार्य करता है तो उसके कुल को प्रसिद्धि मिलती है।

(4) कविता के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'बड़प्पन' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

- धन-दौलत और ताकत से व्यक्ति के बड़प्पन का पता चलता है।
- कुल के बड़प्पन की प्रशंसा व्यक्ति की कमियों को ढक देती है।
- बड़प्पन व्यक्ति के गुणों, स्वभाव और कर्मों से पहचाना जाता है।
- कुल का नाम व्यक्ति में बड़प्पन की पहचान का मुख्य आधार है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग या एक से अधिक उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

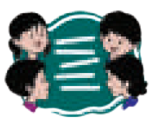

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क)

"मेह उन पर है बरसता एक सा,
एक सी उन पर हवायें हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।"

(ख)

" किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।"

मिलकर करें मिलान

इस कविता में 'फूल' और 'काँटा' के उदाहरण द्वारा लोगों के स्वभावों के अंतर और समानताओं की ओर संकेत किया गया है। दूसरे शब्दों में, 'फूल' और 'काँटा' प्रतीक के रूप में प्रयोग किए गए हैं। अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए कि फूल और काँटा किस-किस के प्रतीक हो सकते हैं। इन्हें उपयुक्त प्रतीकों से जोड़िए—

दया	परोपकार
स्वार्थ	प्रेम
अच्छाई	बुराई
सुख	दुख
सुंदरता	कठोरता
कोमलता	प्रसन्नता
आनंद	पीड़ा

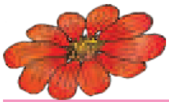

फूल

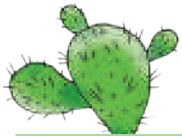

काँटा

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता में ऐसी कौन-कौन सी समानताओं का उल्लेख किया गया है जो सभी पौधों पर समान रूप से लागू होती हैं?

(ख) आपको फूल और काँटे के स्वभाव में मुख्य रूप से कौन-सा अंतर दिखाई दिया?

(ग) कविता में मुख्य रूप से कौन-सी बात कही गई है? उसे पहचानिए, समझिए और अपने शब्दों में लिखिए।

(घ) "*किस तरह कुल की बड़ाई काम दे, जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।*" उदाहरण देकर समझाइए।

(ङ) "*है खटकता एक सब की आँख में, दूसरा है सोहता सुर शीश पर।*" लोग कैसे स्वभाव के व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं और कैसे स्वभाव वाले व्यक्तियों से दूर रहना पसंद करते हैं?

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए –

(क) कल्पना कीजिए कि चाँदनी, हवा और मेघ केवल एक पौधे पर बरसते हैं। बाकी पौधे इन सबके बिना कैसे दिखेंगे और उनके जीवन पर इसका क्या प्रभाव होगा?

(ख) यदि सभी पौधे एक जैसे होते तो दुनिया कैसी लगती?

(ग) यदि काँटे न होते और हर पौधा केवल फूलों से भरा होता तो क्या होता?

(घ) कल्पना कीजिए कि एक तितली काँटे से मित्रता करना चाहती है। उनके बीच कैसा संवाद होगा?

(ङ) कल्पना कीजिए कि आपको किसी काँटे, फूल या दोनों के गुणों के साथ जीवन जीने का अवसर मिलता है। आप किसके गुणों को अपनाना चाहेंगे? कारण सहित बताइए।

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बड़प्पन' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—

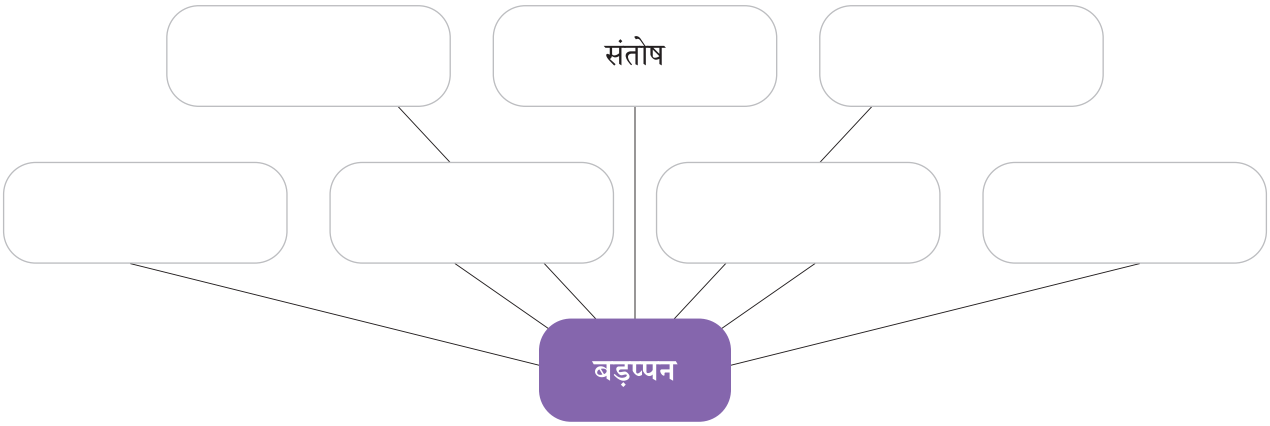

बड़प्पन

'बड़प्पन' शब्द 'बड़ा' और 'पन' से मिलकर बना है। इसका अर्थ होता है – बड़ाई, श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव, महत्व, गौरव। इसका उपयोग मुख्य रूप से व्यक्तित्व, गुण और चरित्र की ऊँचाई या महानता बताने के लिए किया जाता है। जैसे - उनकी सादगी और बड़प्पन ने सबका मन जीत लिया।

- नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं जो किसी भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें से जो शब्द 'बड़प्पन' के भाव व्यक्त करते हैं, उन पर एक गोला बना दीजिए। जो बड़प्पन का भाव व्यक्त नहीं करते हैं, उनके नीचे रेखा खींचिए।

सहनशीलता	दया	अहंकार	विश्वास	घमंड	ईर्ष्या
द्वेष	प्रतिशोध	क्रूरता	उदारता	विनम्रता	त्याग
संतोष	समर्पण	आदर	सम्मान	निष्ठा	परोपकार
सद्भावना	स्वार्थ	अपमान	अविश्वास	झूठ	अधीरता
लालच	झगड़ालूपन				

कविता की रचना

"फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगन्धों औ निराले रंग से,
है सदा देता कली का जी खिला।"

इस पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस शब्द को पहले कहीं पढ़ा है? यह शब्द है– 'और'। कविता में 'र' वर्ण नहीं लिखा गया है। कई बार बोलते हुए हम शब्द की अंतिम ध्वनि उच्चरित नहीं करते हैं। कवि भी कविता की लय के अनुसार ऐसा प्रयोग करते हैं। इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं। जैसे– 'प्यार में डूबी तितलियों' के स्थान पर 'प्यार-डूबी तितलियों' का प्रयोग किया गया है। हर दूसरी पंक्ति का अंतिम शब्द मिलती-जुलती ध्वनि वाला यानी 'तुकांत' है आदि।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। आप कविता की पंक्तियों में एक से अधिक विशेषताएँ भी ढूँढ सकते हैं।

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले दो शब्द एक ही पंक्ति में साथ-साथ आए हैं।	1. किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
2. मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	2. भौंर को अपना अनूठा रस पिला
3. प्रश्न पूछा गया है।	3. फाड़ देता है किसी का वर बसन
4. प्राकृतिक वस्तुओं जैसे– पेड़-पौधों में मानवीय कार्यों और भावनाओं का वर्णन किया गया है।	4. है खटकता एक सब की आँख में, दूसरा है सोहता सुर शीश पर
5. एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।	5. है सदा देता कली का जी खिला
	6. फूल लेकर तितलियों को गोद में

कविता का सौंदर्य

(क) आगे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ शब्द हटा दिए गए हैं और साथ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द भी दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द से वह पंक्ति पूरी करके देखिए जो शब्द उस पंक्ति में जँच रहे हैं, उन पर घेरा बनाइए।

1. हैं जनम लेते जगह में एक ही,

एक ही पौधा उन्हें है पालता।

______ में उन पर चमकता ______ भी, (रात, रात्रि, रजनी, निशा) (शशि, चंद्रमा, चाँद, राकेश, इंदु)

एक ही सी चाँदनी है डालता।

2. ______ उन पर है बरसता एक सा, (मेह, बादल, मेघ, जलद)

एक सी उन पर ______ हैं बही। (वायु, पवन, समीर, मारुत, बयारें, हवाएँ)

पर सदा ही यह दिखाता है हमें,

ढंग उनके एक से होते नहीं।

(ख) अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि कौन-सा शब्द रिक्त स्थानों में सबसे अधिक साथियों को जँच रहा है और क्यों?

विशेषण

"भौंर का है बेध देता श्याम तन।"

'श्याम तन' का अर्थ है– काला शरीर। यहाँ 'श्याम' शब्द भँवरे के 'शरीर' की विशेषता बता रहा है, अर्थात् 'श्याम' 'विशेषण' है। 'तन' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है अर्थात् 'तन' 'विशेष्य' शब्द है।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों की पहचान करके लिखिए –

	पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1.	भौंर का है बेध देता श्याम तन	श्याम	तन
2.	फाड़ देता है किसी का वर बसन	______	______
3.	भौंर को अपना अनूठा रस पिला	______	______
4.	निज सुगंधों औ निराले ढंग से	______	______

(ख) नीचे दिए गए विशेष्यों के लिए अपने मन से विशेषण सोचकर लिखिए –

1. फूल ______________ ______________
2. काँटा ______________ ______________
3. मेह ______________ ______________
4. चाँद ______________ ______________
5. रात ______________ ______________

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) अगर आपको फूल और काँटे में से किसी एक को चुनना हो तो आप किसे चुनेंगे और क्यों?

(ख) कविता में बताया गया है कि फूल अपनी सुगंध और व्यवहार से चारों ओर प्रसन्नता और आनंद फैला देता है। आप अपने मित्रों या परिवार के जीवन में प्रसन्नता और आनंद लाने के लिए क्या-क्या करते हैं और क्या-क्या कर सकते हैं?

(ग) 'फूल' और 'काँटे' एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं फिर भी साथ-साथ पाए जाते हैं। अपने आस-पास से ऐसे अन्य उदाहरण दीजिए।

(संकेत— वस्तुएँ जैसे– नमक और चीनी, स्वभाव जैसे– शांत और क्रोधी, स्वाद जैसे– खट्टा-मीठा, रंग जैसे– काला-सफेद, अनुभव जैसे– सुख-दुख आदि)

(घ) "छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ, फाड़ देता है किसी का वर बसन।" आप अपने आस-पास की किसी समस्या का वर्णन कीजिए जिसे आप 'काँटे' के समान महसूस करते हैं। उस समस्या का समाधान भी सुझाइए।

सृजन

(क) इस कविता के बारे में एक चित्र बनाइए। आप चित्र में जहाँ चाहें, अपने मनोनीत रंग भर सकते हैं। आप बिना रंगों या केवल उपलब्ध रंगों की सहायता से भी चित्र बना सकते हैं। चित्र बिलकुल मौलिक लगे इसकी चिंता करने की भी आवश्यकता नहीं है। आप अपनी कल्पना को जैसे मन करे, वैसे साकार कर सकते हैं।

(ख) मान लीजिए कि फूल और काँटे के बीच बातचीत हो रही है। उनकी बातचीत या संवाद अपनी कल्पना से लिखिए।

संवाद का विषय निम्नलिखित हो सकता है–

- उनके गुणों और विशेषताओं पर चर्चा
- यह समझाना कि उनका जीवन में क्या योगदान है

उदाहरण—

- फूल– मैं दूसरों के जीवन में सुगंध और सुख फैलाने आया हूँ।
- काँटा– और मैं संघर्ष की याद दिलाने और सुरक्षा देने के लिए हूँ।

वाद-विवाद

विभिन्न समूह बनाकर कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसके लिए विषय है– ‘जीवन में फूल और काँटे, दोनों की आवश्यकता होती है’।

कक्षा में वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन करने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. आपकी कक्षा में पहले से 7–8 समूह बने होंगे। आधे समूह ‘फूल’ के पक्ष में तर्क देंगे। आधे समूह ‘काँटे’ के पक्ष में तर्क देंगे।
2. एक समूह निर्णायक मंडल की भूमिका निभाएगा। निर्णायक मंडल का काम होगा—
    - तर्कों को ध्यान से सुनना।
    - प्रस्तुति शैली और तर्कों की गहराई के आधार पर अंकों का निर्धारण करना।
3. प्रत्येक समूह को तैयारी के लिए 15 मिनट का समय मिलेगा ताकि वे अपने तर्क तैयार कर सकें। सभी समूह अपने-अपने तर्क मिलकर सोचेंगे और लिखेंगे।
4. प्रत्येक समूह को अपने पक्ष में बोलने के लिए 3–4 मिनट का समय मिलेगा। दूसरा समूह पहले समूह के तर्कों पर 1–2 मिनट में उत्तर देगा या उनसे प्रश्न पूछेगा।
5. सभी प्रतिभागियों को एक-दूसरे की बात ध्यान से सुननी होगी। बीच में टोकने की अनुमति किसी को नहीं होगी।
6. सभी समूहों का क्रम तय किया जाएगा। वाद-विवाद के लिए क्रम इस प्रकार हो सकता है—
    - समूह 1 *(फूल के पक्ष में)*
    - समूह 2 *(काँटे के पक्ष में)*
    - समूह 3 *(फूल के पक्ष में)*
    - समूह 4 *(काँटे के पक्ष में)*
    - और इसी क्रम से आगे बढ़ें।

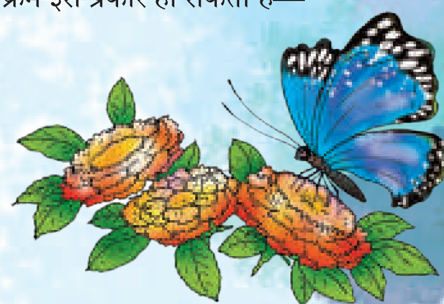

7. जो समूह निर्णायक मंडल का कार्य कर रहा है, वह वाद-विवाद के अंतराल में तर्क, भाषा कौशल और प्रस्तुति शैली के आधार पर अंकों का निर्धारण करेगा।
8. निर्णायक मंडल अंकों के आधार पर विजेता समूह का निर्णय करेगा।
9. समूहों के प्रयासों के लिए तालियाँ बजाएँ और उनकी प्रशंसा करें। संभव हो तो विजेता समूह को कोई पुरस्कार या प्रमाणपत्र दिया जा सकता है।

- विद्यार्थी वाद-विवाद गतिविधि के अनुभवों पर एक अनुच्छेद भी लिख सकते हैं।

आज की पहेली

नीचे कुछ ऐसे पेड़-पौधों के चित्र दिए गए हैं जिनमें फूल और काँटे साथ-साथ पाए जाते हैं। चित्रों को सही नामों के साथ रेखा खींचकर जोड़िए –

वर्णन	चित्र

1. **बबूल**

फूल– पीले या सफेद छोटे गुच्छेदार।
काँटे– लंबे और नुकीले।
विशेषता– इसका उपयोग ईंधन, चारा और औषधियों में किया जाता है।

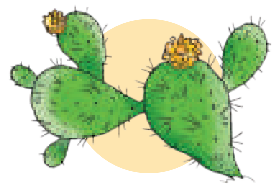

2. **गुलाब**

फूल– विभिन्न रंगों में, विशेष रूप से लाल, सफेद, और गुलाबी।
काँटे– तने पर छोटे और तीखे।
विशेषता– सजावटी पौधा और इत्र बनाने के लिए प्रसिद्ध।

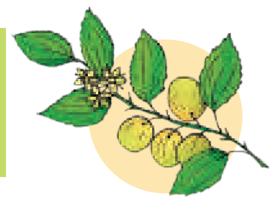

3. **नागफनी**

फूल– रंग-बिरंगे, पीले, नारंगी या गुलाबी।
काँटे– पूरी सतह पर छोटे या लंबे।
विशेषता– सूखे क्षेत्रों में पाया जाता है और सजावटी पौधे के रूप में भी उगाया जाता है।

4. **बेर**

फूल– छोटे और हल्के पीले।
काँटे– शाखाओं पर छोटे-छोटे।
विशेषता– इसके फल खाद्य और औषधीय होते हैं।

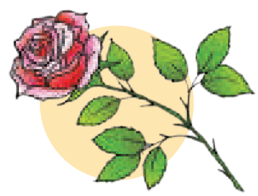

5. **करौंदा**

फूल– छोटे, सफेद और सुगंधित।
काँटे– शाखाओं पर छोटे-छोटे और तीखे।
विशेषता– फूल सजावटी और मधुर सुगंध वाले होते हैं। इसके फल से अचार, जैम और जेली बनाई जाती है। यह शुष्क और पहाड़ी क्षेत्रों में उगता है।

6. **नीबू**

फूल– छोटे, सफेद और हल्की गुलाबी छाया लिए हुए। सुगंधित और गुच्छेदार।
काँटे– शाखाओं पर छोटे और तीखे काँटे।
विशेषता– फल खट्टे और विटामिन सी से भरपूर होते हैं। इनका उपयोग पेय पदार्थ, अचार, औषधियों और खाना बनाने में किया जाता है।

खोजबीन के लिए

- **रंग-बिरंगे फूलों से**

  https://www.youtube.com/watch?v=rIXpoQy4sHc

- **फूलों की घाटी में - कविता**

  https://www.youtube.com/watch?v=yyrbxCtbgWg

8 बिरजू महाराज से साक्षात्कार

कथक की जब भी बात होती है तो हमारे मस्तिष्क में एक नाम अवश्य आता है— बिरजू महाराज। कथक की कला उन्हें विरासत में मिली थी, भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बिरजू महाराज का स्मरण उनकी मनमोहक प्रस्तुतियों के लिए किया जाता है। बिरजू महाराज का जीवन शास्त्रीय संगीत के रागों के समान ही उतार-चढ़ाव भरा था। अपने जीवन में प्राप्त सफलताओं के लिए उन्होंने कठिन साधना की थी। आइए, आज हम पद्‌मविभूषण श्री बिरजू महाराज से मिलें। इनसे हमारा परिचय करवा रहे हैं आपके जैसे ही कुछ बच्चे।

0771CH08

श्रेया सुना है कि आपका बचपन संघर्षों से भरा हुआ था। अपने बचपन के बारे में कुछ बताएँगे?

बिरजू महाराज एक जमाना था जब हमलोग छोटे नवाब कहलाते थे। हवेली के दरवाजे पर आठ-आठ सिपाहियों का पहरा होता था। मेरे बाबूजी के देहांत के बाद आर्थिक परेशानियाँ बढ़ने लगीं। जिन डिब्बों में कभी तीन-चार लाख की कीमत के हार हुआ करते थे वे अब खाली पड़े थे। जीवन में उतार-चढ़ाव

तो होता ही है। सब समय का चक्र है। संघर्षों के दौर में मेरी सबसे बड़ी सहयोगी मेरी माँ थीं। कभी कर्ज लेते थे तो कभी पुरानी ज़री की साड़ियाँ जलाकर उनके सोने-चाँदी के तार बेचते थे और गुजारा करते थे। नृत्य के कार्यक्रमों से भी कभी-कभी पैसा आ जाता था। दिन में खाना खाते थे तो रात को कई बार नहीं भी खाते थे। अम्मा बार-बार यही कहा करती थीं, "खाने को भले ही चना मिले या कुछ भी न मिले पर अभ्यास जरूर करो।"

तनुश्री आपने कथक किससे सीखा?

बिरजू महाराज मेरे गुरु थे मेरे पिता अच्छन महाराज और चाचा शंभू महाराज और लच्छू महाराज। घर में चूँकि कथक का माहौल था, अत: औपचारिक प्रशिक्षण शुरू होने से पहले ही मैं देख-देखकर कथक सीख गया था और नवाब के दरबार में नाचने भी लगा था। कथक की तालीम शुरू करते समय गुरु शिष्यों को गंडा (ताबीज़) बाँधते हैं और शिष्य गुरु को भेंट देता है। जब मेरी तालीम शुरू होने की बात आई तो बाबूजी ने कहा, "भेंट मिलने पर ही गंडा बाँधूँगा।" इस पर अम्मा ने मेरे दो कार्यक्रमों की कमाई बाबूजी को भेंट के रूप में दे दी। 'गंडा' गुरु और शिष्य के बीच पवित्र रिश्ता होता है। मैंने अब इस रस्म

को उल्टा कर दिया है। कई वर्षों तक नृत्य सिखाने के बाद जब देखता हूँ कि शिष्य में सच्ची लगन है तभी गंडा बाँधता हूँ।

तनुश्री क्या पढ़ाई या दूसरे कामों के साथ-साथ संगीत और नृत्य जारी रखना संभव है?

बिरजू महाराज यह तो अपने सामर्थ्य पर निर्भर करता है। मेरी शिष्या शोभना नारायण आई.ए.एस. अफसर हैं और अच्छी नर्तकी भी। मैं नृत्य के साथ-साथ बजाता और गाता भी हूँ। इसके अतिरिक्त नृत्य नाटिकाएँ और उनके लिए संगीत भी तैयार करता हूँ। मैंने जब नौकरी शुरू की तो मेरे चाचा ने कहा, "तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।" पर मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि 'महाराज' बनना है तो उसके लिए मेहनत भी करनी होगी।

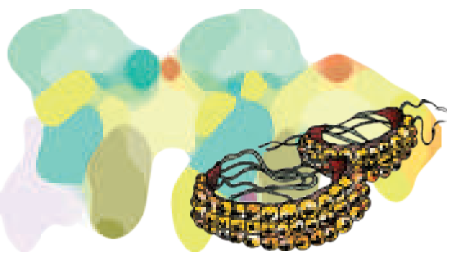

माणिक कथक की शुरुआत कब हुई?

बिरजू महाराज कथक की परंपरा बहुत पुरानी है। 'महाभारत' के आदिपर्व और 'रामायण' में इसकी चर्चा मिलती है। पहले कथक रोचक और अनौपचारिक रूप से कथा कहने का ढंग होता था। तब यह मंदिरों तक ही सीमित था। हमारे लखनऊ घराने के लोग मूलत: बनारस-इलाहाबाद के बीच हरिया गाँव के रहने वाले थे। वहाँ 989 कथिकों के घर हुआ करते थे। कथिकों का एक तालाब अभी भी है। गाँव में एक बैरगिया नाला है, जिसके साथ यह कहानी जुड़ी हुई है— एक बार नौ कथिक नाले के पास से गुजर रहे थे कि तीन डाकू वहाँ आ पहुँचे। कुछ कथिक डर गए, किंतु उन कथिकों की कला में इतना दम था कि डाकू सब कुछ भूलकर उन कथिकों के कथक में मग्न हो गए। तब से यह पद लोगों में प्रचलित हो गया—

बैरगिया नाला जुलुम जोर,
नौ कथिक नचावें तीन चोर।
जब तबला बोले धीन-धीन,
तब एक-एक पर तीन-तीन।

लखनऊ घराने के बाद जयपुर घराने और फिर बनारस घराने का विकास हुआ। इसके अलावा रायगढ़ के महाराज चक्रधर की भी अपनी अलग शैली थी।

श्रेया क्या नृत्य सीखने के लिए संगीत जानना जरूरी होता है?

बिरजू महाराज गाना, बजाना और नाचना— ये तीनों संगीत का हिस्सा हैं। संगीत में लय होती है। उसका ज्ञान आवश्यक है। नृत्य में शरीर, ध्यान और तपस्या का साधन होता है। नृत्य करना एक तरह से अदृश्य शक्ति को निमंत्रण देना है— कृष्ण, मेरे अंदर समाओ और नाचो। नृत्य ही नहीं, हमारी हर गतिविधि में लय होती है। घसियारा घास को हाथ से पकड़ कर उस पर हँसिया मारता है और फिर घास हटाता है। मारने और हटाने की इस लय में जरा भी गड़बड़ी हुई नहीं कि उसका हाथ गया। लय हर काम में, नृत्य में, जीवन में संतुलन बनाए रखती है। लय एक तरह का आवरण है, जो नृत्य को सुंदरता प्रदान करती है। अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है तो वह जान पाएगा कि यह लहरा ठीक नहीं है। इसके माध्यम से नृत्य अंगों में प्रवेश नहीं करेगा।

तनुश्री आपने कथक में कई नई चीजें भी जोड़ी हैं न?

बिरजू महाराज कथक की पुरानी परंपरा को तो कायम रखा है। हाँ, उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए हैं। हमने गौर किया कि हमारे चाचा लोग और बाबूजी नाचते तो खूबसूरत थे ही, उनके खड़े होने का अंदाज भी निराला होता था। हमने उन भाव-भंगिमाओं को भी कथक में शामिल कर लिया। चाचा लोग और बाबूजी हमारे लिए ब्रह्मा, विष्णु,

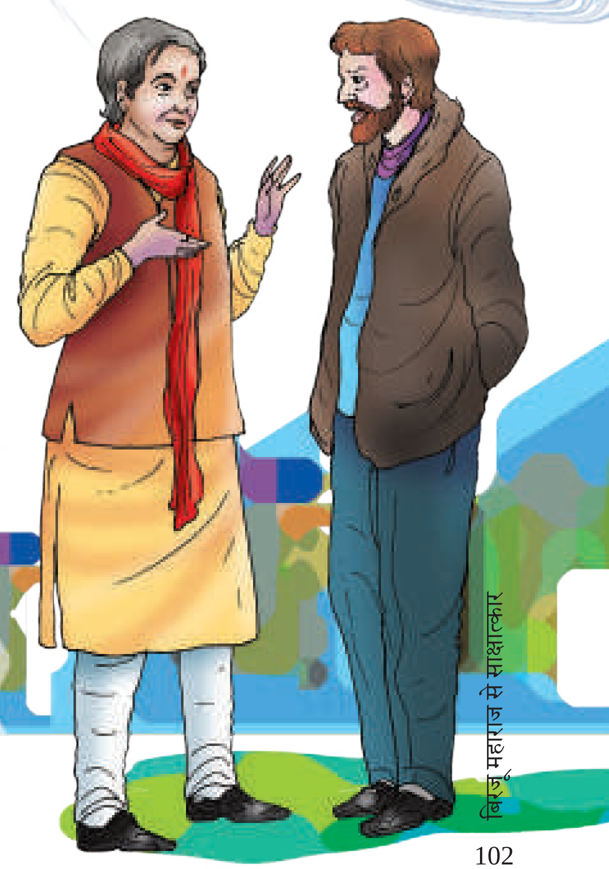

महेश थे। हमने तीनों की शिक्षा को इकट्ठा करके एक नया रूप तैयार किया। इसी प्रकार टैगोर, त्यागराज आदि कई आधुनिक कवियों की रचनाओं को लेकर भी कथक रचनाएँ तैयार कीं।

तनुश्री पर ये लोग तो अलग-अलग भाषाओं के कवि थे।

बिरजू महाराज भाषाएँ अलग-अलग होती हैं पर इंसान तो सब जगह एक-से होते हैं। फ्रांस में एक दर्शक ने कहा, "मैं नहीं जानता कि यशोदा कौन है?" मैंने उन्हें बताया कि इस धरती पर सब माँएँ यशोदा हैं और सब नन्हें बच्चे कृष्ण। बच्चे की जिद, रोना, उठना, बैठना, सब जगह एक जैसा होता है। धीरे-धीरे हमें अलग-अलग भाषा, संस्कार और तौर-तरीके मिलते हैं। चाहे नृत्य हो या कुछ और, परंपरा एक वृक्ष के समान होती है, जो सबको एक जैसी छाया और आश्रय देती है। उसके नीचे बैठने वाले अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। वृक्ष से लिए बीज को बोएँ तो समय आने पर ही एक और वृक्ष फलेगा। वह नया वृक्ष कैसा होगा, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उसे कैसी हवा, पानी और खाद मिला है।

माणिक आपने जब सीखना शुरू किया था, तब से अब तक कथक की दुनिया में क्या-क्या बदलाव आए हैं?

बिरजू महाराज पहले मंच नहीं होते थे। फर्श पर चाँदनी (बिछाने की बड़ी सफेद चादर) बिछी होती थी जिस पर कथक होता था और दर्शक चारों ओर बैठते थे। शृंगार के लिए चंदनलेप और होंठ रंगने के लिए पान होता था।

पहले नर्तक कथा के दृश्यों का ऐसा विस्तृत वर्णन करते थे कि दर्शक के सामने पूरा दृश्य खिंच जाता था — कि कैसे गोपियों ने घड़ा उठाया, धीमी चाल से पनघट की ओर चलीं, पीछे से कृष्ण चुपचाप आए, कंकड़ उठाया और दे मारा। अब सिर्फ 'पनघट की गत देखो' कहकर बाकी दर्शक की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है।

श्रेया आपने गाना, बजाना और नाचना कब शुरू किया?

बिरजू महाराज बहुत छुटपन से ही तबला पीटना शुरू कर दिया था। चाचा ने कहा, "लड़के के हाथ में लय है।" पाँच साल का होते-होते हारमोनियम पर लहरा बजाने लगा। सबको खुश करने के लिए फिल्मी गाने भी खूब गाता था। एक बार सबकी फरमाइश पर सुरैया के एक गाने पर देर तक नाचा। बहनों ने बड़े शौक से बिंदी-चुन्नी से सजा दिया था। तब तक चाचा आ गए। बस डर के मारे तुरंत सब कुछ उतार फेंका और छिप गया।

माणिक शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य में क्या अंतर है?

बिरजू महाराज लोक नृत्य सामूहिक होता है। दिनभर की मेहनत के बाद लोग थकान दूर करने और मनोरंजन के लिए इकट्ठा मिलकर नाचते हैं। दूसरी ओर शास्त्रीय नृत्य में एक नर्तक अकेला ही काफ़ी होता है। लोक नृत्य नाचने वालों के अपने मन बहलाव और संतुष्टि के लिए होता है जबकि शास्त्रीय नृत्य दर्शकों के लिए होता है। शुरू में कथावाचक भी लोक नर्तक हुआ करता था। धीरे-धीरे जब उसकी खास शैली व रूप निश्चित होता गया तो वह शास्त्रीय नृत्य हो गया।

श्रेया इस समय भारत में शास्त्रीय नृत्य की क्या स्थिति है?

बिरजू महाराज कुछ वर्ष पहले तक स्थिति दयनीय थी। अब इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है पर शोर वाले संगीत-नृत्य का भी खूब प्रचलन है। मैं सबसे यही कहता हूँ, वह संगीत सुनो-देखो, लेकिन अपनी परंपरा की गहराई को भी समझो, अनुभव करो।

तनुश्री कर्नाटक और हिन्दुस्तानी शैली के संगीत की तरह क्या दक्षिण और उत्तर के नृत्य में भी अंतर है?

बिरजू महाराज कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, कथकली, मोहिनीअट्टम, ओडिसी, मणिपुरी — ये शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख शैलियाँ हैं। संगीत और गाने के ढंग का अंतर तो है ही, इसके अतिरिक्त भी हर नृत्य की अपनी लय और

भाव-भंगिमा है। कथक की भाव-भंगिमा दैनिक जीवन से ली गई होती है और भरतनाट्यम में मूर्तिकला से। भरतनाट्यम में दोनों भावों का इकट्ठा प्रयोग होता है और कथक में बारी-बारी से। ओडिसी और मणिपुरी में कोमलता है, कथकली में ओज है। कथक में दोनों हैं। कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है, चिराग की लौ के समान। इसी प्रकार उँगलियाँ भी बहुत धीरे-से हिलाई जाती हैं, जैसे घूँघट पकड़ने में या घूँघट उठाने में। उँगलियाँ ज़रा जोर से हिलीं नहीं कि चाचा जी तुरंत टोकते थे, "घूँघट उठा रहे हो या तंबू?"

माणिक खाली समय में आप क्या करते हैं?

बिरजू महाराज खाली तो होता ही नहीं हूँ। नींद में भी हाथ चलता रहता है। मशीनों में मन खूब लगता है। अगर मैं नर्तक न होता तो शायद इंजीनियर होता। कोई भी मशीन या यंत्र खोलकर उसके कल-पुर्जे देखने की जिज्ञासा होती है। तुम्हें जानकर हैरानी होगी कि मैं अपने ब्रीफकेस में हरदम पेचकस और दूसरे छोटे-मोटे औजार रखता हूँ। कभी अपना पंखा-फ्रिज ठीक किया तो कभी और मशीनें। बेटी-दामाद चित्रकार हैं, उन्हें देख-देखकर पेंटिंग बनाने का भी शौक हो गया है। प्राय: रात बारह बजे के बाद चित्र बनाने बैठता हूँ। जब नींद से आँखें बंद होने लगती हैं तो ब्रश एक तरफ रख देता हूँ और सो जाता हूँ। पिछले दो वर्षों में लगभग सत्तर चित्र बनाए हैं।

श्रेया अगर कोई बच्चा गाना, बजाना या नृत्य सीखना चाहे पर घर के लोग न चाहते हों तो ऐसे में क्या करना चाहिए?

बिरजू महाराज आजकल के माँ-बाप से मेरी विनती है कि यदि बच्चे की रुचि है तो उसे लय के साथ खेलने दें। जैसे अन्य खेल हैं वैसे ही यह भी एक खेल है, जिसमें बहुत-कुछ सीखने को मिलता है। इस खेल की दुनिया में संतुलन, समय का अंदाजा व सदुपयोग बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

तनुश्री क्या आपके परिवार में लड़कियों ने कथक नहीं सीखा?

बिरजू महाराज मेरी बहनों को कथक नहीं सिखाया गया पर मैंने अपनी बेटियों को खूब सिखाया। लड़कियों के पास शिक्षा या कोई-न-कोई हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें। हुनर ऐसा खज़ाना है, जिसे कोई नहीं छीन सकता और वक्त पड़ने पर काम आता है। बच्चो, तुम लोग संगीत सीखते हो? यदि नहीं तो ज़रूर सीखो। मन की शांति के लिए यह बहुत जरूरी है। लय हमें अनुशासन सिखाती है, संतुलन सिखाती है। नाचने, गाने और बजाने वाले एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाकर एक नई रचना करते हैं। सुर और लय से हमें एक-दूसरे का सहयोगी बनकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

पाठ से

आइए, अब हम बिरजू महाराज से पूछे गए प्रश्नों और उनसे मिले उत्तरों को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) बिरजू महाराज ने गंडा बाँधने की परंपरा में परिवर्तन क्यों किया होगा?

- वे गुरु के प्रति शिष्य के निष्ठा भाव को परखना चाहते थे।
- वे नृत्य शिक्षण के लिए इस परंपरा को महत्वपूर्ण नहीं मानते थे।
- वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे।
- वे शिष्य की भेंट देने की सामर्थ्य को परखना चाहते थे।

(2) "जीवन में उतार चढ़ाव तो होता ही है।" बिरजू महाराज के जीवन में किस तरह के उतार-चढ़ाव आए?

- पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा।
- कोई भी संस्था नृत्य प्रस्तुतियों के लिए आमंत्रित नहीं करती थी।
- किसी समय विशेष में घर में सुख-समृद्धि थी।
- नृत्य के औपचारिक प्रशिक्षण के अवसर बहुत ही सीमित हो गए थे।

(3) बिरजू महाराज के अनुसार बच्चों को लय के साथ खेलने की अनुशंसा क्यों की जानी चाहिए?

- संगीत, नृत्य, नाटक और सभी कलाएँ बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास नहीं करती हैं।
- कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- कला भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।
- वर्तमान समय में कला भी एक सफल माध्यम नहीं है।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

मिलकर करें मिलान

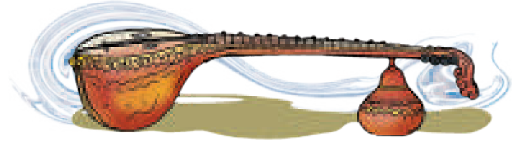

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द एवं शब्द समूह नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही संदर्भों या अवधारणाओं से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	संदर्भ या अवधारणा
1. कर्नाटक संगीत शैली	1. भारत की प्राचीन गायन-वादन गीत-नृत्य अभिनय परंपरा का अभिन्न अंग है। इसमें शब्दों की अपेक्षा सुरों का महत्व होता है। इसमें नियमों की प्रधानता होती है।
2. घराना	2. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत के राज्यों में प्रचलित है। इसमें स्वर शैली की प्रधानता होती है। जल तरंगम, वीणा, मृदंग, मंडोलिन वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है।
3. शास्त्रीय संगीत	3. हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में एक है, यह कान में सोने या चाँदी का तार पहनाने से संबंधित है।
4. हिंदुस्तानी संगीत शैली	4. हिंदुस्तानी संगीत में कलाकारों का एक समुदाय या कुटुंब, जो संगीत नृत्य की विशिष्ट शैली साझा करते हैं। संगीत या नृत्य की परंपरा, जिसमें सिद्धांत और शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रशिक्षण के द्वारा आगे बढ़ती है।
5. कनछेदन	5. किसी क्षेत्र विशेष में लोक द्वारा किए जाने वाले पारंपरिक नृत्य। लोक नृत्य, क्षेत्र विशेष की संस्कृति एवं रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं। ये विशेष रूप से फसल कटाई, उत्सवों आदि के अवसर पर किए जाते हैं।
6. लोक नृत्य	6. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत के राज्यों में प्रचलित है। तबला, सारंगी, सितार, संतूर वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है। इसके प्रमुख रागों की संख्या छह है।

शीर्षक

इस पाठ का शीर्षक 'बिरजू महाराज से साक्षात्कार' है। यदि आप इस साक्षात्कार को कोई अन्य नाम देना चाहते हैं तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? लिखिए।

पंक्तियों पर चर्चा

साक्षात्कार में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए।

- "तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।"
- "नृत्य में शरीर, ध्यान और तपस्या का साधन होता है।"
- "कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है, चिराग की लौ के समान।"

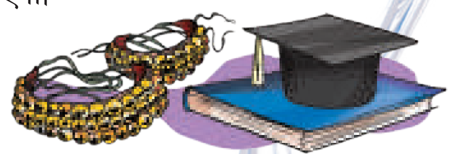

सोच-विचार के लिए

साक्षात्कार को एक बार पुन: पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बिरजू महाराज नृत्य का औपचारिक प्रशिक्षण आरंभ होने से पहले ही कथक कैसे सीख गए थे?

(ख) नृत्य सीखने के लिए संगीत की समझ होना क्यों अनिवार्य है?

(ग) नृत्य के अतिरिक्त बिरजू महाराज को और किन-किन कार्यों में रुचि थी?

(घ) बिरजू महाराज ने बच्चों की शिक्षा और रुचियों के बारे में अभिभावकों से क्या कहा है?

2. पाठ में से उन प्रसंगों की पहचानकर उन पर चर्चा कीजिए, जिनसे पता चलता है कि—

(क) बिरजू महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

(ख) बिरजू महाराज को नृत्य की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उनकी माँ का बहुत योगदान रहा।

(ग) बिरजू महाराज महिलाओं के लिए समानता के पक्षधर थे।

शब्दों की बात

पाठ में आए हुए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, इन्हें ध्यान से पढ़िए—

आजीविका, सीमित, प्रशिक्षण, सुंदरता, आधुनिक, पारंपरिक, भारतीय, सामूहिक, शास्त्रीय

आपने इन शब्दों पर ध्यान दिया होगा कि मूल शब्द के आगे या पीछे कोई शब्दांश जोड़कर नया शब्द बना है। इससे शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ गया है। शब्द के आगे जुड़ने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे कि—

अदृश्य – अ + दृश्य

आवरण – आ + वरण

प्रशिक्षण – प्र + शिक्षण

यहाँ पर 'अ', 'आ', 'प्र' उपसर्ग हैं।

शब्द के पीछे जुड़ने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में नवीनता, परिवर्तन या विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं, जैसे कि—

सीमित – सीमा + इत

सुंदरता – सुंदर + ता

भारतीय – भारत + इय

सामूहिक – समूह + इक

यहाँ पर 'इत' , 'ता' , 'ईय' , और 'इक' प्रत्यय हैं।

(ख) नीचे दो तबले हैं, एक में कुछ शब्दांश (उपसर्ग व प्रत्यय) हैं, दूसरे तबले में मूल शब्द हैं। इनकी सहायता से नए शब्द बनाइए—

(ग) इस पाठ में से उपसर्ग व प्रत्यय की सहायता से बने कुछ और शब्द छाँटकर उनसे वाक्य बनाइए।

शब्दों का प्रभाव

पाठ में आए नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए—

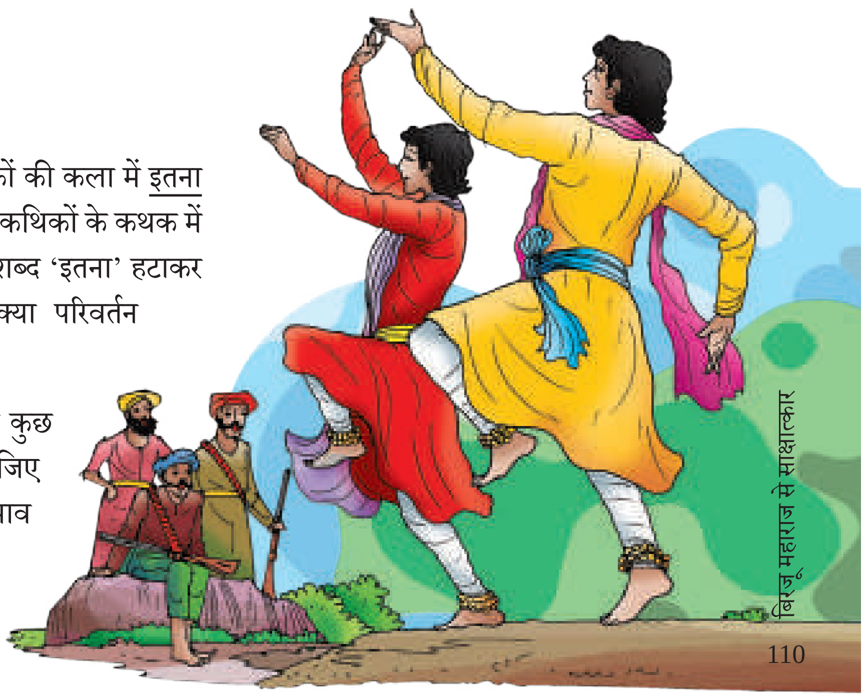

1. "कुछ कथिक डर गए किंतु उन कथिकों की कला में इतना दम था कि डाकू सब कुछ भूलकर उन कथिकों के कथक में मग्न हो गए।" इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'इतना' हटाकर वाक्य पढ़िए और पहचानिए कि क्या परिवर्तन आया है?

   पाठ में आए हुए वाक्यों में से ऐसे ही कुछ और शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित कीजिए जिनके प्रयोग से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है?

पाठ से आगे

कला का संसार

(क) बिरजू महाराज— "कथक की पुरानी परंपरा को तो कायम रखा है। हाँ, उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए हैं।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए लिखिए कि कथक की प्रस्तुतियों में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं?

(ख) लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य में क्या अंतर है? लिखिए।

(इस प्रश्न के उत्तर के लिए आप अपने सहपाठियों, अभिभावकों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।)

(ग) "बैरगिया नाला जुलुम जोर,

नौ कथिक नचावें तीन चोर।

जब तबला बोले धीन–धीन,

तब एक-एक पर तीन-तीन।"

इस पाठ में हरिया गाँव में गाए जाने वाले उपर्युक्त पद का उल्लेख है। आप अपने क्षेत्र में गाए जाने वाले किसी लोकगीत को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

साक्षात्कार की रचना

प्रस्तुत पाठ की विधा 'साक्षात्कार' है। सामान्यत: इसे बातचीत या भेंटवार्ता का पर्याय मान लिया जाता है, लेकिन यह भेंटवार्ता से इस संदर्भ में भिन्न है कि इसका एक निश्चित उद्देश्य और ढाँचा होता है। यह साक्षात्कार किसी नौकरी या पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए होने वाले साक्षात्कार से बिल्कुल भिन्न है। प्रस्तुत साक्षात्कार एक प्रकार से व्यक्तिपरक साक्षात्कार है। इसका उद्देश्य साक्षात्कारदाता के निजी जीवन, उनके कामकाज, उपलब्धियों, रुचि-अरुचि, विचारों आदि को पाठकों के सामने लाना है। किसी भी प्रकार के साक्षात्कार के लिए पर्याप्त तैयारी, संवेदनशीलता और धैर्य की आवश्यकता होती है। साक्षात्कार की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि साक्षात्कारदाता के संदर्भ में कितना शोध किया गया है और प्रश्न किस प्रकार के बनाए गए हैं।

प्रस्तुत 'साक्षात्कार' के आधार पर बताइए—

(क) साक्षात्कार से पहले क्या-क्या तैयारियाँ की गई होंगी?

(ख) आप इस साक्षात्कार में और क्या-क्या प्रश्न जोड़ना चाहेंगे?

(ग) यह साक्षात्कार एक सुप्रसिद्ध कलाकार का है। यदि आपको किसी सब्जी विक्रेता, रिक्शा चालक, घरेलू सहायक या सहायिका का साक्षात्कार लेना हो तो आपके प्रश्न किस प्रकार के होंगे?

सृजन

आपके विद्यालय में कथक नृत्य का आयोजन होने जा रहा है।

(क) आप दर्शकों को कथक नृत्यकला के बारे में क्या-क्या बताएँगे? लिखिए।

(ख) इस कार्यक्रम की सूचना देने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

(ग) यदि इस नृत्य कार्यक्रम में कोई दृष्टिबाधित दर्शक है और वह नृत्य का आनंद लेना चाहे तो इसके लिए विद्यालय की ओर से क्या व्यवस्था की जानी चाहिए?

आज की पहेली

"अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है तो वह जान पाएगा कि यह लहरा ठीक नहीं है, इसके माध्यम से नृत्य अंगों में प्रवेश नहीं करेगा।" संगीत में लय को प्रदर्शित करने के लिए ताल का सहारा लिया जाता है। किसी भी गीत की पंक्तियों में लगने वाले समय को मात्राओं द्वारा ठीक उसी प्रकार मापा जाता है, जैसे दैनिक जीवन में व्यतीत हो रहे समय को हम सेकेंड के द्वारा मापते हैं। ताल कई मात्रा समूहों का संयुक्त रूप होता है। संगीत के समय को मापने की सबसे छोटी इकाई मात्रा है और ताल कई मात्राओं का संयुक्त रूप है। जिस तरह घंटे में मिनट और मिनट में सेकेंड होते हैं, उसी तरह ताल में मात्रा होती है। आज हम आपके लिए ताल से जुड़ी एक अनोखी पहेली लाए हैं।

एक विद्यार्थी ने अपनी डायरी में अपने विद्यालय के किसी एक दिन का उल्लेख किया है। उस उल्लेख में संगीत की कुछ तालों के नाम आए हैं। आप उन तालों के नाम ढूँढ़िए—

कल हमारे विद्यालय में संगीत और नृत्य सभा का आयोजन हुआ था। उसमें एक-दो नहीं बल्कि चार कलाकार आए थे। उन कलाकारों में एक का नाम रूपक और दूसरे का नाम लक्ष्मी था। शेष दो कलाकारों के नाम पता नहीं चल पाए। वे दोनों जब अपनी प्रस्तुति के लिए मंच पर आए तो दर्शकों से पूछने लगे— "तिलवाड़ा, दादरा या झूमरा?" दर्शक बोले— "तीनों में से कोई नहीं। हमें दीपचंदी और कहरवा पसंद है।" दर्शकों की यह बात सुनते ही कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति प्रारंभ कर दी।

अब नीचे दी गई शब्द पहेली में से संगीत की उन तालों के नाम ढूँढ़कर लिखिए—

ती	झ	रू	ल	भ	ति
न	च	प	क्ष्मी	क	ल
म	ल	क	ह	र	वा
ल	इ	झू	म	रा	ड़ा
दी	प	चं	दी	दा	त
ड़	च	क	र	द	ढ़
ए	म	ल	घ	रा	क

झरोखे से

नृत्य की छटाएँ

बिरजू महाराज ने भारत के विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय नृत्यों का उल्लेख किया है। आइए, इनके बारे में अपनी समझ बढ़ाते हैं—

भरतनाट्यम— यह नृत्य विधा का सर्वाधिक प्राचीन रूप है। इसका नाम 'भरतमुनि' तथा 'नाट्यम' शब्द से मिलकर बना है। कुछ विद्वान 'भरत' शब्द को राग ताल, भाव से भी जोड़ते हैं। इस नृत्य विद्या की उत्पत्ति का संबंध तमिलनाडु में मंदिर नर्तकों की एकल नृत्य प्रस्तुति 'सादिर' से है।

कथकली— दक्षिण भारत के एक राज्य के मंदिरों में रामायण तथा महाभारत की कहानियाँ प्रस्तुत करने वाली दो लोक नाट्य परंपराएँ, रामानाट्टम तथा कृष्णानाट्टम कथकली के उद्‌भव का स्रोत हैं। यह संगीत, नृत्य और नाटक का अद्‌भुत संयोजन है। सुप्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन. मेनन के द्वारा राजा मुकुंद के संरक्षण में इसका प्रचार-प्रसार हुआ। यह नृत्य पुरूष मंडली द्वारा किया जाता है। इसकी विषयवस्तु महाकाव्यों और पुराणों में वर्णित कहानियाँ होती हैं। पूरे नृत्य नाटक का अनमोल आभूषण हैं भाव-भंगिमाएँ। आँखों और भौहों का लय संचालन बहुत महत्वपूर्ण है।

कथक— ब्रजभूमि की रासलीला से उत्पन्न, कथक एक परंपरागत नृत्य विद्या है। कथक का नाम 'कथिक' से लिया गया है, जिसे कथावाचक भी कहते हैं। ये कथिक महाकाव्यों के पदों व छंदों को संगीत तथा भाव-भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत करते थे। कथक की महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न घरानों का विकास है। जुगलबंदी कथक प्रस्तुति का मुख्य आकर्षण है, जिसमें तबलावादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्धात्मक खेल होता है।

कुचिपुड़ी— आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक पारंपरिक शैली है। कुचिपुड़ी नृत्य प्रस्तुति प्रार्थना से आरंभ होती है, तत्पश्चात नृत्य-अभिनय को प्रस्तुत किया जाता है। नृत्य प्रस्तुति के साथ कर्नाटक संगीत की संगत दी जाती है। कुचिपुड़ी नृत्य का समापन तरंगम प्रस्तुति के पश्चात होता है।

मणिपुरी नृत्य— पौराणिक आख्यानों के अनुसार मणिपुरी नृत्य का स्रोत भारत के एक उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर की घाटियों में स्थानीय गंधर्वों के साथ शिव और पार्वती का दैवीय नृत्य है। इस राज्य के प्रमुख त्योहार 'लाई हरोबा' में इस नृत्य को करने का प्रचलन है। सामान्यत: यह नृत्य स्त्रियों द्वारा किया जाता है। इसमें चेहरे की अभिव्यक्ति के स्थान पर हाथ के हाव-भाव व पैरों की गति महत्वपूर्ण होती है।

ओडिसी नृत्य— नाट्यशास्त्र में उल्लिखित 'सोदा नृत्य' से ओडिसी नृत्य रूप को नाम मिला है। कुछ भाव-मुद्राएँ भरतनाट्यम् से मिलती-जुलती हैं। इस नृत्य रूप का मुख्य आकर्षण है। त्रिभंग मुद्रा अर्थात शरीर का तीन मोड़ वाला रूप। नृत्य के दौरान शरीर का निचला हिस्सा काफी सीमा तक स्थिर रहता है और धड़ लय-ताल के साथ गति करता है।

मोहिनीअट्टम— भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में से एक मोहिनीअट्टम का उद्भव केरल राज्य में हुआ। मोहिनीअट्टम की विशेषता घुमावदार कोमल भाव वाले आंगिक अभिनय हैं। इस नृत्य के अंतर्गत अभिनय पर बल दिया जाता है। इस नृत्य शैली में मुख की अभिव्यक्ति और हस्त-मुद्राओं को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। नर्तकियाँ पारंपरिक पोशाक पहनती हैं जिसे 'मुंडू' कहा जाता है। पारंपरिक रूप से मोहिनीअट्टम केवल स्त्रियों द्वारा ही किया जाता है, जबकि कथकली केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।

साझी समझ

अभी आपने शास्त्रीय नृत्यों को निकटता से जाना समझा। पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह में भारत के लोक नृत्यों की सूची बनाइए और उनकी विशिष्टताओं का पता लगाइए।

नीचे दिए गए भारत के मानचित्र में राज्यानुसार शास्त्रीय एवं लोक नृत्य दर्शाइए।

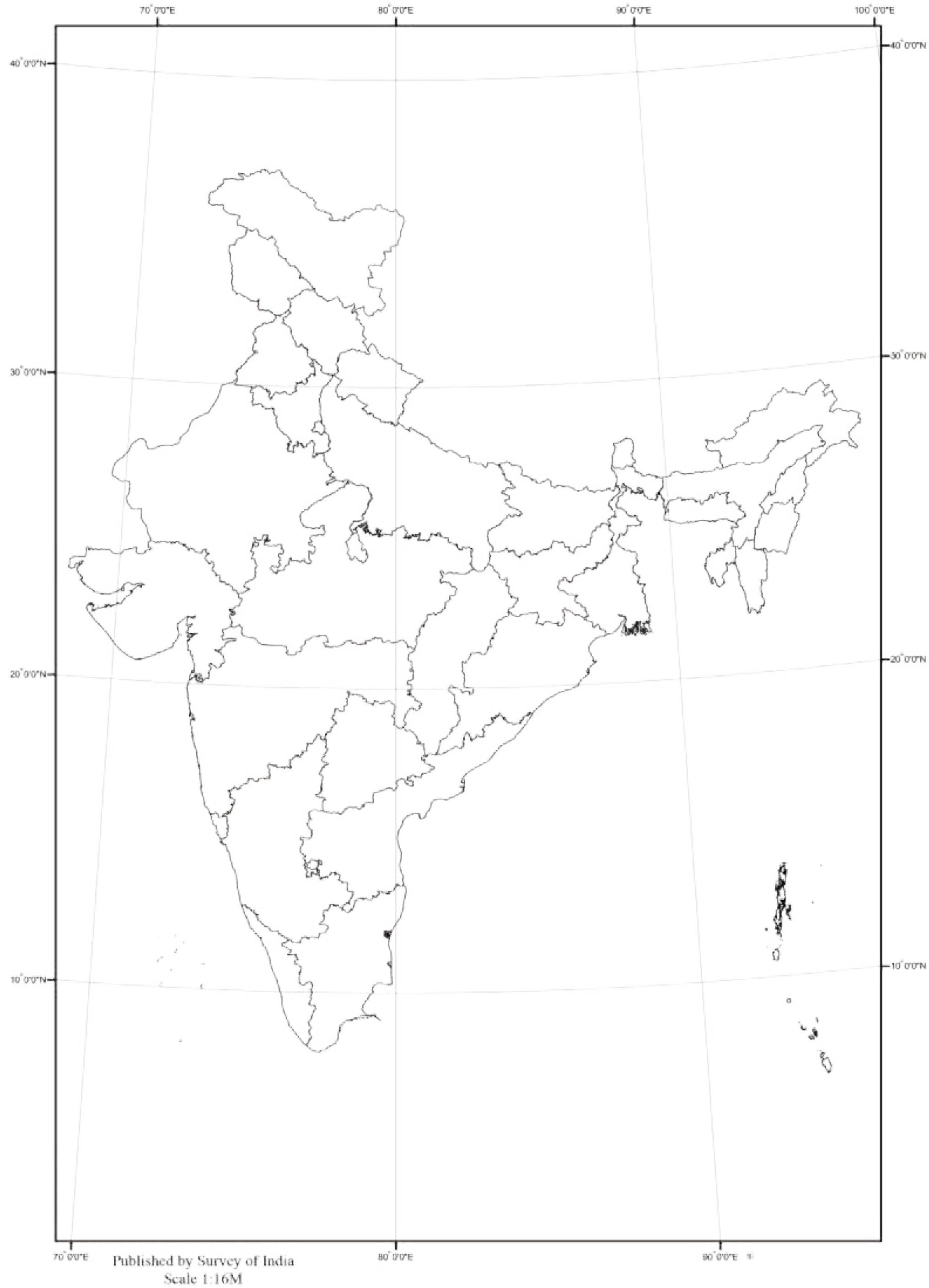

स्रोत—https://surveyofindia.gov.in/webroot/UserFiles/files/1_16-state%20boundary.pdf

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों की सहायता से आप भारतीय नृत्य, संगीत और बिरजू महाराज के बारे में जान-समझ सकते हैं—

- भारतीय शास्त्रीय संगीत में नृत्य संगत

  https://www.youtube.com/watch?v=W1ZXCUgi848

- कथक परिचय भाग 7

  https://www.youtube.com/watch?v=Dprj69iAM24

- पंडित बिरजू महाराज

  https://www.youtube.com/watch?v=0r3M8D2eAGg&list=PLqtVCj5iilH6BnMc4hIRzV
  yJ_wtPgky9B

पढ़ने के लिए

नृत्यांगना सुधा चंद्रन

जीवन के किसी भी क्षेत्र में शिखर तक पहुँचने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। कई लोग ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने शारीरिक अक्षमता के बावजूद संघर्ष किया है और लक्ष्य प्राप्त किया है। ऐसा ही एक नाम है- सुधा चंद्रन। पैर खराब होने के बावजूद वह चोटी की नृत्यांगना बनी।

सुधा चंद्रन की माता श्रीमती थंगम एवं पिता श्री के. डी. चंद्रन की हार्दिक इच्छा थी कि उनकी पुत्री राष्ट्रीय ख्याति की नृत्यांगना बने। इसीलिए चंद्रन दंपत्ति ने सुधा को पाँच वर्ष की अल्पायु में ही मुंबई के प्रसिद्ध नृत्य विद्यालय 'कला-सदन' में प्रवेश दिलवाया। पहले-पहल तो नृत्य विद्यालय के शिक्षकों ने इतनी छोटी उम्र की बच्ची के दाखिले में हिचकिचाहट महसूस की, किंतु सुधा की प्रतिभा देखकर सुप्रसिद्ध नृत्य शिक्षक श्री के.एस. रामास्वामी भागवतार ने उसे शिष्या के रूप में स्वीकार कर लिया और सुधा उनसे नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करने लगी। जल्द ही सुधा के नृत्य कार्यक्रम विद्यालय के आयोजनों में होने लगे। नृत्य के साथ-साथ, अध्ययन में भी सुधा ने अपनी प्रतिभा दिखाई, लेकिन सुधा के स्वप्नों की इंद्रधनुषी दुनिया में एकाएक 2 मई, 1981 को अँधेरा छा गया।

2 मई को तिरूचिरापल्ली से मद्रास (चेन्नई) जाते समय उनकी बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस दुर्घटना में सुधा के बाएँ पाँव की एड़ी टूट गई और दायाँ पाँव बुरी तरह जख्मी हो गया। प्लास्टर लगने पर बायाँ पाँव तो ठीक हो गया, किंतु दायें पैर में 'गैंग्रीन' (एक प्रकार का कैंसर) हो गया। ऐसे में डॉक्टरों के पास सुधा का दायाँ पैर काट देने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। अंततः दुर्घटना के एक महीने बाद सुधा का दायाँ पैर घुटने के साढ़े सात इंच नीचे से काट दिया गया। एक पैर का कट जाना संभवतः किसी भी नृत्यांगना के जीवन का अंत ही होता। सुधा के साथ भी यही हुआ। सुधा ने लकड़ी के गुटके के पाँव और बैसाखियों के सहारे चलना शुरू कर दिया और मुंबई आकर वह पुनः अपनी पढ़ाई में जुट गई।

इसी बीच सुधा ने मैग्सेसे पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध कृत्रिम अंग विशेषज्ञ डॉ. पी.सी. सेठी के बारे में सुना। वह जयपुर गई और डॉ. सेठी से मिली। डॉ. सेठी ने सुधा को आश्वस्त किया कि वह दुबारा सामान्य ढंग से चल सकेगी। इस पर सुधा ने पूछा- "क्या मैं नाच सकूँगी?" डॉ. सेठी ने कहा- "क्यों नहीं, प्रयास करो तो सब कुछ संभव है।" डॉ. सेठी ने सुधा के लिए एक विशेष प्रकार का पैर बनाया, जो अल्यूमिनियम का था और इसमें ऐसी व्यवस्था थी कि वह पैर को आसानी से घुमा सकती थी। सुधा एक नए विश्वास के साथ मुंबई लौटी और उसने नृत्य का अभ्यास शुरू करना चाहा, किंतु इस प्रयास में कटे हुए पैर से खून निकलने लगा। कोई भी सामान्य व्यक्ति इस तरह की घटना के बाद दुबारा नाचने की हिम्मत कतई नहीं करता, किंतु सुधा साधारण मिट्टी की नहीं बनी थी। जल्दी ही उसने अपनी निराशा पर काबू प्राप्त किया और अपने नृत्य प्रशिक्षक को साथ लेकर डॉ. सेठी से पुनः मिली।

डॉ. सेठी ने सुधा के नृत्य प्रशिक्षक से नृत्य हेतु पाँवों की विभिन्न मुद्राओं को गंभीरता से देखा-परखा और एक नया पैर बनवाया, जो नृत्य की विशेष जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। पैर लगाते समय डॉ. सेठी ने सुधा से कहा- "मैं जो कुछ कर सकता था मैंने कर दिया, अब तुम्हारी बारी है।" सुधा ने पुनः नृत्य का अभ्यास प्रारंभ किया। शुरूआत बहुत अच्छी नहीं रही। कटे हुए पाँव के ठूंठ से खून रिसने लगा, किंतु सुधा ने कड़ा अभ्यास जारी रखा। कठिन अभ्यास से सुधा जल्द ही सामान्य नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करने में सफल हो हो गई। 28 जनवरी, 1984 को मुंबई के 'साउथ इंडिया वेलफेयर सोसायटी' के हाल में एक अन्य नृत्यांगना प्रीति के साथ सुधा ने दुबारा नृत्य के सार्वजनिक प्रदर्शन का आमंत्रण स्वीकार कर लिया। यह दिन सुधा की जिदंगी का संभवतः सबसे कठिन दिन था, उस दिन से भी ज्यादा जबकि उसका पाँव काट दिया गया था। सुधा का यह प्रदर्शन बेहद सफल रहा। चहेतों ने उसे देखते-देखते पलकों पर उठा लिया और वह रातों-रात एक ऐतिहासिक महत्व की व्यक्तित्व हो गई।

उसकी अद्भुत जीवन-यात्रा से प्रभावित होकर तेलुगु के फिल्मकार ने उसकी जिंदगी को आधार बनाकर एक कहानी लिखवाई और 'मयूरी' नाम से तेलुगु में एक फिल्म बनाई। अपने पात्र को सुधा ने स्वयं परदे पर जीवंत कर दिया। फिल्म को अद्भुत सफलता मिली और इस फिल्म में अभिनय के लिए सुधा को भारत के 33वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। 'मयूरी' की सफलता को देखते हुए इसके निर्माता ने यह फिल्म हिंदी में भी 'नाचे मयूरी' नाम से प्रदर्शित की और सुधा ने पूरे भारत को अपनी प्रतिभा का मुरीद कर दिया। आज सुधा एक नृत्यांगना ही नहीं, फिल्म कलाकार भी है। सुधा को उसके असामान्य साहस और श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं।

- रामाज्ञा तिवारी

पढ़ने के लिए

पंडवानी गायिका- पद्मविभूषण श्रीमती तीजनबाई

दुनिया की सबसे चर्चित कथाओं में से एक महाभारत की कथा को पूरे वेग और संप्रेषणियता के साथ मंच पर उतारने वाली तीजनबाई पंडवानी गायिका के रूप में पूरी दुनिया में जानी पहचानी जाती हैं।

तीजनबाई का जन्म 8 अगस्त,1956 में ग्राम-अटारी (पाटन) जिला-दुर्ग में हुआ था। इनकी माता श्रीमती सुखबती व पिता श्री झुनुक लाल पारधी ने इनका लालन-पालन ग्राम गनियारी में किया। छत्तीसगढ़ की लोककला को, विशेषत: पंडवानी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने का श्रेय तीजनबाई को जाता है। वे देश-विदेशों में 'पंडवानी' का सफल प्रस्तुतीकरण कर चुकी हैं।

श्रीमती तीजनबाई को पंडवानी गायन का शौक बचपन से ही था। तीजन ने पंडवानी का औपचारिक प्रशिक्षण श्री उमेंद सिंह देशमुख से पाया। जब वह अपने गुरु झाडूराम देवांगन जी को देखतीं, तो सोचा करती थीं कि वह भी ऐसी ही पंडवानी गायिका बनेंगी। तीजन के घर में इसका काफी विरोध भी हुआ। घरवालों का विरोध सहकर भी तीजन ने पंडवानी गायन को अपना क्षेत्र चुना।

तीजन बाई ने पहला कार्यक्रम तेरह वर्ष की अवस्था में ग्राम-चंदखुरी (दुर्ग) में दिया। तत्पश्चात् इन्हें आदिवासी लोककला परिषद भोपाल के द्वारा भारत भवन, भोपाल में कार्यक्रम देने का अवसर मिला। इन्होंने पहली विदेश यात्रा सन् 1985-86 में पेरिस के भारत महोत्सव के दौरान की। अपने दल के हारमोनियम वादक तुलसीराम देशमुख से इन्होंने विवाह किया। तीजन बाई ने नृत्य, अभिनय और लोकतत्व के बहुरंगी मिश्रण से पंडवानी को इतना प्रभावशाली और लोकप्रिय बनाया है कि आज पंडवानी पूरे भारत में ही नहीं, अपितु समूचे विश्व में भी पहचानी जाती है।

तीजन बाई कापालिक शैली की गायिका हैं। इस शैली में गाने वाला कभी खड़े होकर, कभी घुटनों का सहारा लेकर गाता है। इसमें अंग संचालन व स्वरों के तीव्र आरोह-अवरोह के साथ संगीत का प्रयोग होता है। तंबूरे का बजाया जाना पंडवानी का अभिन्न अंग है। तंबूरे को धनुष,गदा और बाँसुरी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है| कथा को लयात्मकता देने वाला एक साथी, जो हुंकारें देता रहता है, रागी कहलाता है। बीच-बीच में रोचक प्रश्नों के माध्यम से रागी व्याख्या की तात्कालिक पृष्ठभूमि तैयार करता है।

पंडवानी का मूलाधार ''महाभारत'' की कथा है। यह महाभारत की शाश्वत कथा का छत्तीसगढ़ी संस्करण है। पंडवानी लोक साहित्य की विशुद्ध वाचिक परंपरा है। यह वादन एवं आंगिक अभिव्यक्ति की लोकतात्विक विधा है|

तीजनबाई को भारत सरकार ने 1988 में ''पद्मश्री'' सम्मान प्रदान किया। उन्हें 3 अप्रैल, 2003 को भारत के राष्ट्रपति डॉ॰ श्री अब्दुल कलाम द्वारा पद्म भूषण, संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली से सम्मान, 1994 में श्रेष्ठ कला आचार्य, 1996 में संगीत नाट्य अकादमी सम्मान, 1998 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा देवी अहिल्याबाई सम्मान, 1999 में इसुरी सम्मान प्रदान किया गया। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा उन्हें 27 मई, 2003 को 'डी॰लिट॰' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके अलावा महिला नौ रत्न, कला शिरोमणि सम्मान तथा 22 नवंबर, 2003 को मुंबई में आदित्य बिरला कला शिखर सम्मान प्रदान किया गया।

तीजन बाई ने पंडवानी को भारत ही नहीं, अपितु फ्रांस, इंग्लैंड, जापान, जर्मनी में भी प्रस्तुत किया है। वे अब तक भारत के बड़े शहरों के साथ मारीशस, बांग्लादेश, स्विटजरलैंड, तुर्की, माल्टा, साइप्रस, मेसिया, टर्की, रियुनियान आदि देशों में भ्रमण कर चुकी हैं। 2017 में वे भिलाई इस्पात संयंत्र से सेवानिवृत हुई हैं

— संकलन : लेखक मंडल

9 चिड़िया

0771CH09

पीपल की ऊँची डाली पर
बैठी चिड़िया गाती है!
तुम्हें ज्ञात क्या अपनी
बोली में संदेश सुनाती है?

चिड़िया बैठी प्रेम-प्रीति की
रीति हमें सिखलाती है!
वह जग के बंदी मानव को
मुक्ति-मंत्र बतलाती है!

वन में जितने पंछी हैं, खंजन,
कपोत, चातक, कोकिल;
काक, हंस, शुक आदि वास
करते सब आपस में हिलमिल!

सब मिल-जुलकर रहते हैं वे,
सब मिल-जुलकर खाते हैं;
आसमान ही उनका घर है;
जहाँ चाहते, जाते हैं!

रहते जहाँ, वहाँ वे अपनी
दुनिया एक बसाते हैं;
दिन भर करते काम, रात में
पेड़ों पर सो जाते हैं!

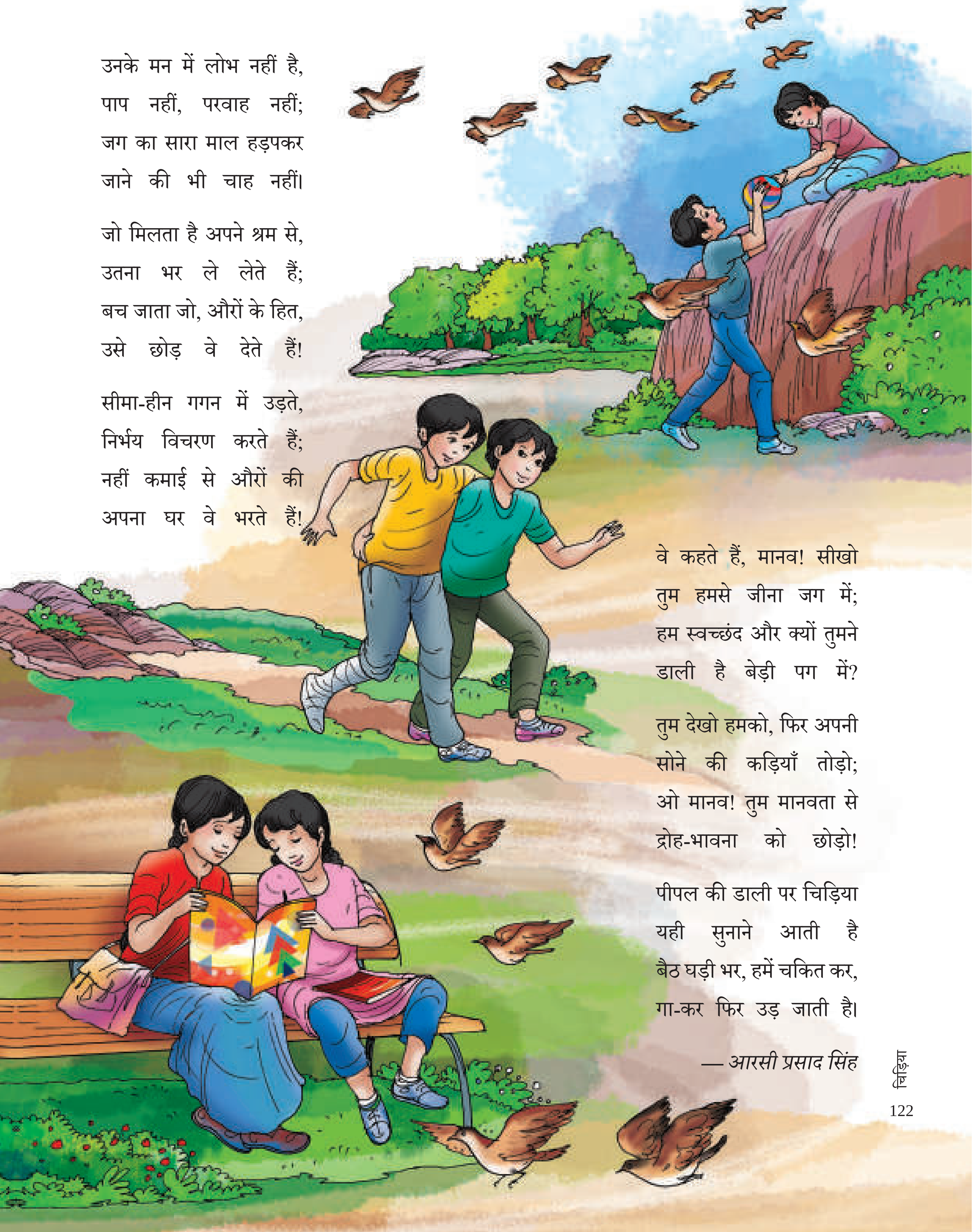

उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं;
जग का सारा माल हड़पकर
जाने की भी चाह नहीं।

जो मिलता है अपने श्रम से,
उतना भर ले लेते हैं;
बच जाता जो, औरों के हित,
उसे छोड़ वे देते हैं!

सीमा-हीन गगन में उड़ते,
निर्भय विचरण करते हैं;
नहीं कमाई से औरों की
अपना घर वे भरते हैं!

वे कहते हैं, मानव! सीखो
तुम हमसे जीना जग में;
हम स्वच्छंद और क्यों तुमने
डाली है बेड़ी पग में?

तुम देखो हमको, फिर अपनी
सोने की कड़ियाँ तोड़ो;
ओ मानव! तुम मानवता से
द्रोह-भावना को छोड़ो!

पीपल की डाली पर चिड़िया
यही सुनाने आती है
बैठ घड़ी भर, हमें चकित कर,
गा-कर फिर उड़ जाती है।

— *आरसी प्रसाद सिंह*

कवि से परिचय

(1911–1996)

आरसी प्रसाद सिंह प्रकृति और जीवन-संघर्षों को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से चित्रित करने वाले कवि हैं। वे अपनी रचनाओं में प्रेम, करुणा, त्याग-बलिदान, मुक्ति और मिल-जुलकर एक सुंदर संसार रचने की कल्पना करते रहे हैं। जैसा कि 'चिड़िया' कविता में भी आपने पढ़ा। उन्होंने चिड़िया के माध्यम से कितनी सुंदर बात कही है— "चिड़िया बैठी प्रेम-प्रीति की रीति हमें सिखलाती है! वह जग के बंदी मानव को मुक्ति-मंत्र बतलाती है!" *कलापी* और *आरसी* उनके चर्चित कविता संग्रह हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. कविता के आधार पर बताइए कि इनमें से कौन-सा गुण पक्षियों के जीवन में नहीं पाया जाता है?
   - प्रेम-प्रीति
   - मिल-जुलकर रहना
   - लोभ और पाप
   - निर्भय विचरण

2. "सब मिल-जुलकर रहते हैं वे, सब मिल-जुलकर खाते हैं" कविता की यह पंक्ति किन भावों की ओर संकेत करती है?
   - असमानता और विभाजन
   - प्रतिस्पर्धा और संघर्ष
   - समानता और एकता
   - स्वार्थ और ईर्ष्या

3. "वे कहते हैं, मानव! सीखो, तुम हमसे जीना जग में" कविता में पक्षी मनुष्य से कैसा जीवन जीने के लिए कहते हैं?

- आकाश में उड़ते रहना
- बंधन में रहना
- स्वच्छंद रहना
- संचय करना

(ख) अब अपने मित्रों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ संदर्भ नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर बातचीत कीजिए और इन्हें इनके सही भावों से मिलाइए। इनके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने परिजनों और शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

संदर्भ	भाव
1. चिड़िया की बोली	1. बंधन और लालच
2. सोने की कड़ियाँ	2. श्रम और संतोष
3. निर्भय विचरण	3. बंधन से मुक्ति
4. मुक्ति-मंत्र	4. स्वतंत्रता और निर्बाध जीवन
5. दिनभर काम	5. प्रेम और स्वतंत्रता का संदेश

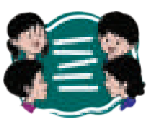

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं, इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "चिड़िया बैठी प्रेम-प्रीति की
रीति हमें सिखलाती है!"

(ख) "उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं"

(ग) "सीमा-हीन गगन में उड़ते,
निर्भय विचरण करते हैं"

सोच-विचार के लिए

नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ और उनसे संबंधित प्रश्न दिए गए हैं। कविता पढ़ने के बाद अपनी समझ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) "सब मिल-जुलकर रहते हैं वे, सब मिल-जुलकर खाते हैं" पक्षियों के आपसी सहयोग की यह भावना हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) "जो मिलता है, अपने श्रम से उतना भर ले लेते हैं" पक्षी अपनी आवश्यकता भर ही संचय करते हैं। मनुष्य का स्वभाव इससे भिन्न कैसे है?

(ग) "हम स्वच्छंद और क्यों तुमने, डाली है बेड़ी पग में?" पक्षी को स्वच्छंद और मनुष्य को बेड़ियों में क्यों बताया गया है?

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर संवाद कीजिए—

1. चिड़िया मनुष्य को स्वतंत्रता का संदेश देती है, आपके अनुसार मनुष्य के पास किन कार्यों को करने की स्वतंत्रता है और किन कार्यों को करने की स्वतंत्रता नहीं है?
2. चिड़िया और मनुष्य का जीवन एक-दूसरे से कैसे भिन्न है?
3. चिड़िया कहीं भी अपना घर बना सकती है, यदि आपके पास चिड़िया जैसी सुविधा हो तो आप अपना घर कहाँ बनाना चाहेंगे और क्यों?
4. यदि आप चिड़िया की भाषा समझ सकते तो आप चिड़िया से क्या बातें करते?

कविता की रचना

"सब मिल-जुलकर रहते हैं वे
सब मिल-जुलकर खाते हैं"

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द लिखने-बोलने में एक जैसे हैं। इस तरह की शैली प्राय: कविता में आती है। अब आप सब मिल-जुलकर नीचे दी गई कविता को आगे बढ़ाइए—

संकेत— सब मिल-जुलकर हँसते हैं वे
सब मिल-जुलकर गाते हैं......
....
....

भाषा की बात

"पीपल की ऊँची डाली पर
बैठी चिड़िया **गाती** है!
तुम्हें ज्ञात क्या अपनी
बोली में संदेश **सुनाती** है?"

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'गाती' और 'सुनाती' रेखांकित शब्दों से चिड़िया के गाने और सुनाने के कार्य का बोध होता है। वे शब्द जिनसे कार्य करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं। कविता में ऐसे क्रिया शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

पाठ से आगे

भावों की बात

(क) जब आप नीचे दिए गए दृश्य देखते हैं तो आपको कैसा महसूस होता है? अपने उत्तर के कारण भी सोचिए और बताइए। आप नीचे दिए गए भावों में से शब्द चुन सकते हैं। आप किसी भी दृश्य के लिए एक से अधिक शब्द भी चुन सकते हैं।

प्रेम, वीरता, दया, करुणा, क्रोध, हँसी, आनंद, डर, घृणा, आश्चर्य, ममता, शांति, सुख, दुख, ईर्ष्या, गर्व, निराशा, आभार, उत्साह, चिंता, आत्मविश्वास, सहानुभूति, उदासीनता, शंका

	दृश्य	भाव
1.	आपको कहीं से किसी पक्षी के चहचहाने की आवाज सुनाई देती है।	
2.	शाम के समय किसी पेड़ पर अनगिनत पक्षी एक साथ चहचहा रहे हैं।	
3.	कोई गाय अपने बच्चे को दूध पिला रही है।	
4.	कोई व्यक्ति अपने वाहन की खिड़की से कूड़ा बाहर फेंक देता है।	
5.	कोई बच्चा किसी व्यर्थ कागज को कूड़ेदान में डाल देता है।	
6.	कोई व्यक्ति बिना हेलमेट पहने बहुत तेज बाइक चला रहा है।	
7.	दो प्राणी किसी कारण लड़ रहे हैं।	
8.	एक व्यक्ति जिसके पैर नहीं हैं, वह विशेष रूप से बनाई गई तिपहिया गाड़ी पर यात्रा कर रहा है।	
9.	किसी स्थान पर नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए भारती (ब्रेल) लिपि में सूचनाओं के बोर्ड लगे हैं।	
10.	कोई व्यक्ति किसी को अपशब्द कह रहा है।	
11.	कोई व्यक्ति किसी जरूरतमंद भूखे को भोजन दे रहा है।	
12.	कोई लड़का स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपनी बहन को खिला रहा है।	

(ख) उपर्युक्त भावों में से आप कौन-से भाव कब-कब अनुभव करते हैं? भावों के नाम लिखकर उन स्थितियों के लिए एक-एक वाक्य लिखिए।

(संकेत— आत्मविश्वास– जब मैं अकेले पड़ोस की दुकान से कुछ खरीदकर ले आता हूँ।)

आज की पहेली

कविता में आपने कई पक्षियों के नाम पढ़े। अब आपके सामने पक्षियों से जुड़ी कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। पक्षियों को पहचानकर सही चित्रों के साथ रेखा खींचकर जोड़िए—

दिखने में हूँ हरा-हरा
कहता हूँ सब खरा-खरा
खाता हूँ मैं मिर्ची लाल
कहते सब मुझे मिट्ठूलाल

सुंदर काले मेरे नैन
श्वेत श्याम है मेरे डैन
उड़ता रहता हूँ दिन-रैन
खेलूँ पानी में तो आए चैन

संदेश पहुँचाना मेरा काम
देता हूँ शांति का पैगाम
करता हूँ मैं गुटर-गूँ
आओगे पास तो हो जाऊँगा छू

पीता हूँ बारिश की बूँदें
रखता हूँ फिर आँखें मूँदे
देखो चकोर है मेरी साथी
बिन उसके घूमूँ ऊँघें ऊँघें

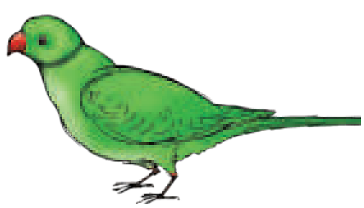

रहता है घर के आस-पास
रंग है उसका काला खास
जो भी दोगे खाता है वो
झुंड में आ जाता है वो

कूहू कूहू मधुर आवाज सुनाती
घर अपना मैं कहाँ बनाती
काली हूँ पर काक नहीं
बतलाओ मैं क्या कहलाती

तन मेरा सफेद
गर्दन मेरी लंबी
नाम बताओ सच्ची-सच्ची
कहलाता हूँ मैं जलपक्षी

चित्र की बात

इन तीनों चित्रों को ध्यान से देखिए और बताइए—

आप पक्षियों को इनमें से कहाँ देखना पसंद करेंगे और क्यों?

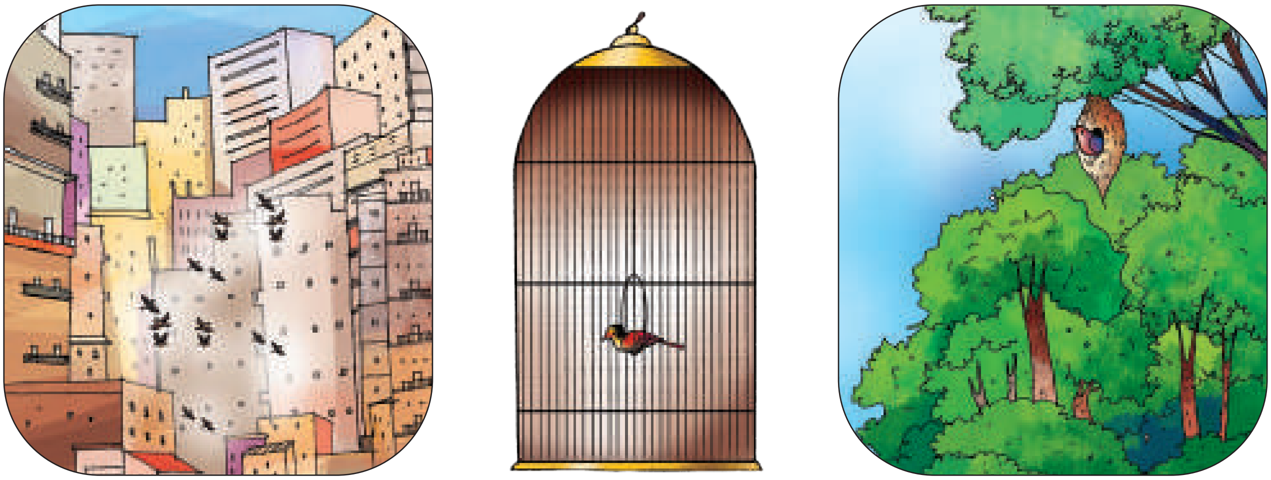

निर्भय विचरण

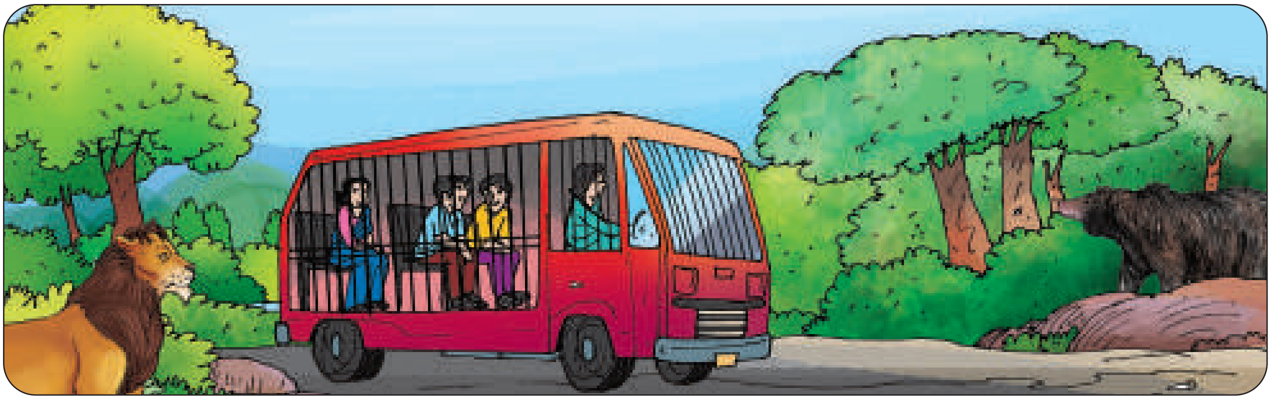

"सीमा-हीन गगन में उड़ते,
निर्भय विचरण करते हैं"

कविता की इन पंक्तियों को पढ़िए और इन चित्रों को देखिए। इन चित्रों को देखकर आपके मन में क्या विचार आ रहे हैं?

(संकेत— जैसे इन चित्रों में कौन निर्भय विचरण कर रहा है?)

साथ-साथ

"वन में जितने पंछी हैं, खंजन,
कपोत, चातक, कोकिल;
काक, हंस, शुक आदि वास
करते सब आपस में हिलमिल!"

1. वन में सारे पक्षी एक साथ रह रहे हैं, हमारे परिवेश में भी पशु-पक्षी साथ रहते हैं। आप विचार कीजिए कि हमारे परिवेश में उनका रहना क्यों आवश्यक है?
2. हम अपने आस-पास रहने वाले पशु-पक्षियों की सहायता कैसे कर सकते हैं?

शब्द एक अर्थ अनेक

"उनके मन में लोभ नहीं है", इस पंक्ति में 'मन' का अर्थ 'चित्त' (बुद्धि) है, किंतु 'मन' शब्द के अन्य अर्थ भी हो सकते हैं। अब नीचे कुछ और पंक्तियाँ दी गई हैं, उन्हें भी पढ़िए—

(क) आज मेरा <u>मन</u> पहाड़ों पर जाने का कर रहा है।

(ख) व्यापारी ने किसान से 10 <u>मन</u> अनाज खरीदा।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मन' शब्द का प्रयोग अलग-अलग अर्थों/संदर्भों में किया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ही शब्द दूसरे संदर्भ में अलग-अलग अर्थ दे रहा है। आइए, इससे संबंधित एक और रोचक उदाहरण देखते हैं—

"मंगल ने मंगल से कहा कि मंगल को मंगल पर मंगल होगा।"

(संकेत— इस वाक्य में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से दिन, ग्रह और शुभ कार्य की चर्चा कर रहा है।)

आगे कुछ और ऐसे ही शब्द दिए गए हैं। दिए गए शब्दों का अलग-अलग अर्थों या संदर्भों में प्रयोग कीजिए—

(क) कर

(ख) जल

(ग) अर्थ

(घ) फल

(ङ) आम

रचनात्मकता

(क) खुले आसमान में, पेड़ों की टहनियों, छतों और भवनों आदि पर बैठे या उड़ते पक्षी बहुत मनमोहक लगते हैं। अपनी पसंद के ऐसे कुछ दृश्यों का कोलाज बनाकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

(ख) "स्वतंत्रता और प्रेम" का संदेश देने वाला एक पोस्टर बनाइए। इसमें इस कविता की कोई पंक्ति या संदेश भी सम्मिलित कीजिए।

हमारा पर्यावरण

मनुष्य बिना सोचे-समझे जंगलों की लगातार कटाई कर रहा है, जिससे पशु-पक्षियों का जीवन प्रभावित हो रहा है। मनुष्य द्वारा किए जा रहे ऐसे कार्यों की एक सूची बनाइए, जिनसे पर्यावरण व हमारे परिवेश के पशु-पक्षियों के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस संकट की स्थिति से बचने के लिए क्या-क्या उपाय किए जा सकते हैं? लिखिए। आप इस कार्य में शिक्षक, इंटरनेट और पुस्तकालय की सहायता भी ले सकते हैं।

(संकेत— जैसे– ऊँचे भवनों का निर्माण.......)

परियोजना कार्य

(क) पर्यावरण संरक्षण के लिए हम अपने स्तर पर कुछ प्रयास कर सकते हैं। आप अपने विद्यालय, आस-पास और घरों में देखिए कि किन-किन कार्यों में प्लास्टिक के थैले का प्रयोग किया जाता है? उन कार्यों की सूची बनाइए। अब इनमें प्रयोग किए जा रहे प्लास्टिक के थैलों के विकल्पों पर विचार कीजिए और लिखिए।

(संकेत— जैसे– हम प्लास्टिक के थैले की जगह कागज या कपड़े के थैले का प्रयोग किन-किन कार्यों में कर सकते हैं।)

(ख) सभी विद्यार्थी 'पर्यावरण बचाओ' विषय पर एक नुक्कड़ नाटक तैयार करें और उसकी प्रस्तुति विद्यालय प्रांगण में करें।

झरोखे से

कविता में पक्षियों के 'सीमा-हीन गगन में उड़ने' की बात कही गई है। पक्षियों का आकाश में उड़ना उद्देश्यपूर्ण है। पक्षियों की उड़ान से जुड़ी एक रोचक जानकारी आगे दी गई है। इसे पढ़कर आप पक्षियों की उड़ान से जुड़े कुछ नए तथ्यों को जान पाएँगे।

पक्षियों की प्रवास यात्राएँ

पक्षियों की प्रवास यात्राएँ सब से विचित्र और रहस्यपूर्ण होती हैं। हर साल शरद ऋतु और शुरू जाड़ों में अनेक पक्षी एशिया, यूरोप तथा अमरीका के उत्तरी भागों में स्थित अपने स्थानों से चलकर गरम देशों में आ जाते हैं। वसंत तथा गरमियों में वे फिर वापस उत्तर में पहुँच जाते हैं।

वे समय के इतने पक्के होते हैं कि इनके आने-जाने के एक-एक दिन की ठीक गणना की जा सकती है। हाँ, प्रतिकूल मौसम के कारण कभी देर हो जाए तो बात दूसरी है।

कुछ प्रजातियों के पक्षी थोड़े ही दूरी पर जाते हैं। हर पक्षी थोड़ा बहुत तो इधर-उधर जाता-आता है ही। कभी रहन-सहन के कष्टों के कारण तो कभी खाना कम हो जाने के कारण इस प्रकार का आवागमन मुख्यतः उत्तर भारत में देखने को मिलता है जहाँ पर मौसम भिन्न-भिन्न और तीव्रता लिए हुए होते हैं।

जो पक्षी ऊँचे पहाड़ों पर गरमियाँ बिताते हैं वे जाड़ों में निचली पहाड़ियों, तराई अथवा मैदानों में चले आते हैं। इस प्रकार का आवागमन भारत में बहुत अधिक पाया जाता है, जहाँ गंगा के क्षेत्र के बराबर में ही विशाल हिमालय है।

इन छोटे-छोटे वीर यात्रियों को अपनी समस्त लंबी-लंबी यात्राओं के बीच भारी कष्ट झेलने पड़ते हैं और बड़े-बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी जंगलों, कभी मैदानों और कभी समुद्र के ऊपर से गुजरना होता है। कभी भयंकर तूफ़ान आ जाते हैं और वे अपने मार्ग से भटक जाते हैं। बहुधा वे आँधियों के थपेड़ों से समुद्र की ओर पहुँच जाते हैं और फिर एकदम नीचे पठारों में समा जाते हैं। रात को नगर का तीव्र प्रकाश इन्हें भटका देता है।

कुछ पक्षी बीच में रुक-रुक कर यात्रा करते हैं ताकि थकान न हो। कुछ ऐसे पक्षी भी हैं जो खाने और आराम करने के लिए बिना रुके लगातार बहुत लंबी-लंबी यात्राएँ पूरी कर लेते हैं। कुछ पक्षी केवल दिन में उड़ते हैं तो कुछ दिन और रात दोनों समय। किंतु अधिकतर पक्षी सूर्यास्त के बाद अपनी यात्रा पर बढ़ते जाते हैं।

पक्षी प्रायः दल बनाकर उड़ते हैं। सारस और हंस जब आकाश में 'वी' (V) की आकृति में उड़ते जाते हैं तब तुरंत हमारा ध्यान उधर खिंचा चला जाता है। अबाबील, चकदिल, फुदकी, समुद्रतटीय पक्षी तथा जलपक्षी दलों में इकट्ठे हो जाते हैं। प्रत्येक दल में एक ही प्रकार के पक्षी होते हैं। हर दल में परों की तेज फड़फड़ाहट और चहचहाहट होती है। उसके बाद वे धरती से हवा में उठ जाते हैं और आकाश को चीरते हुए आगे ही आगे बढ़ते जाते हैं।

—पक्षी-जगत, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली

साझी समझ

आप इंटरनेट या किसी अन्य माध्यम की सहायता से अन्य प्रवासी पक्षियों के बारे में रोचक जानकारी एकत्रित कीजिए और प्रवासी पक्षियों पर लेख लिखिए।

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप जीव-जगत के बारे में और भी जान-समझ सकते हैं—

- हमारा पर्यावरण

  https://youtu.be/gKvAoGtZY1I?si=3Z9zHAxMzeosnm7L

- वह चिड़िया जो

  https://youtu.be/T93aUA1jHkI?feature=shared

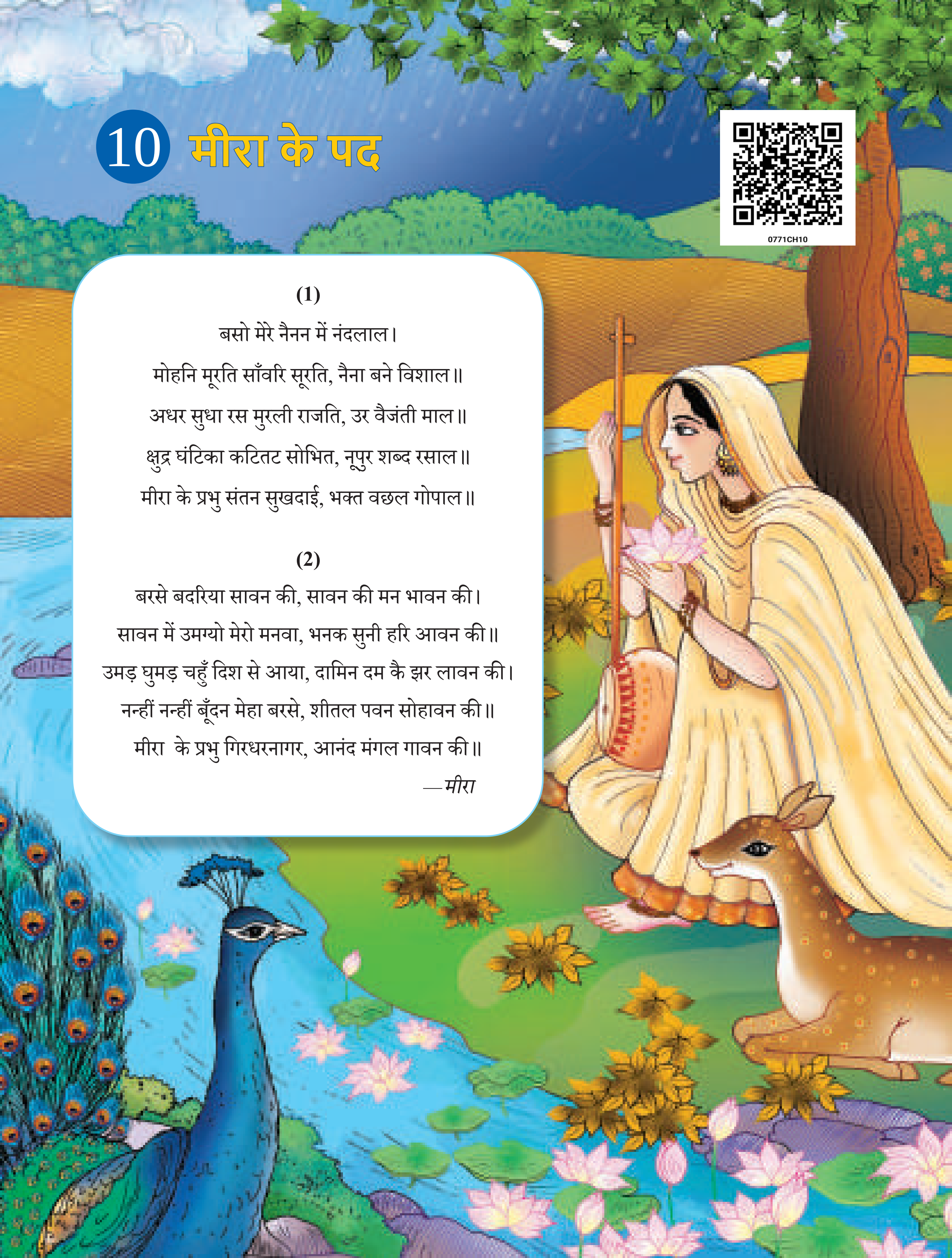

10 मीरा के पद

0771CH10

(1)

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल॥
अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजंती माल॥
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल॥
मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल॥

(2)

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिश से आया, दामिन दम कै झर लावन की।
नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की॥
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, आनंद मंगल गावन की॥

—*मीरा*

कवयित्री से परिचय

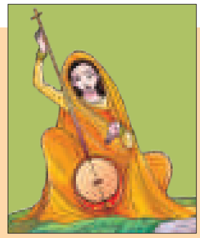

आपने जो रचना अभी पढ़ी है, उसे आज से लगभग 500 वर्ष पहले रचा गया था। इसे हिंदी की महान कवयित्री, कृष्ण भक्त और संत मीरा ने रचा था। यह माना जाता है कि मीरा बचपन से ही कृष्ण की भक्ति में मगन रहती थीं। एक राजकुमारी होते हुए भी उन्होंने संतों का जीवन चुना और महलों को त्यागकर तीर्थों की यात्राएँ करने लगीं। उन्होंने मंदिरों में भजन गाना और सत्संग करना प्रारंभ कर दिया। उनके गाए हुए भजन लोग आज भी श्रद्धा और प्रेम से गाते, पढ़ते और सुनते-सुनाते हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) "बसो मेरे नैनन में नंदलाल" पद में मीरा किनसे विनती कर रही हैं?

- संतों से
- भक्तों से
- वैजंती से
- श्रीकृष्ण से

(2) "बसो मेरे नैनन में नंदलाल" पद का मुख्य विषय क्या है?

- प्रेम और भक्ति
- प्रकृति की सुंदरता
- युद्ध और शांति
- ज्ञान और शिक्षा

(3) "बरसे बदरिया सावन की" पद में कौन-सी ऋतु का वर्णन किया गया है?

- सर्दी
- गरमी
- वर्षा
- वसंत

(4) "बरसे बदरिया सावन की" पद को पढ़कर ऐसा लगता है, जैसे मीरा—

- प्रसन्न हैं।
- दुखी हैं।
- उदास हैं।
- चिंतित हैं।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ/संदर्भ
1. नंदलाल	1. पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण
2. वैजंती माल	2. श्रावण का महीना, आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद के पहले का महीना
3. सावन	3. वैजयंती पौधे के बीजों से बनने वाली माला
4. गिरधर	4. नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें पढ़कर आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की॥"

(ख) "मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल॥"

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) पहले पद में श्रीकृष्ण के बारे में क्या-क्या बताया गया है?

(ख) दूसरे पद में सावन के बारे में क्या-क्या बताया गया है?

कविता की रचना

"मीरा के प्रभु संतन सुखदाई"

"मीरा के प्रभु गिरधरनागर"

इन दोनों पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों में मीरा ने अपने नाम का उल्लेख किया है। मीरा के समय के अनेक कवि अपनी रचना के अंत में अपने नाम को सम्मिलित कर दिया करते थे। आज भी कुछ कवि अपना नाम कविता में जोड़ देते हैं।

आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। (जैसे— कविता में छोटी-छोटी पंक्तियाँ हैं। श्रीकृष्ण के लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग किया गया है आदि।)

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस पाठ की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

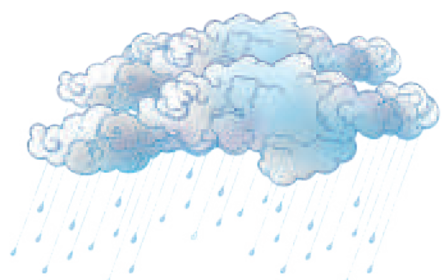

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) मान लीजिए कि बादलों ने मीरा को श्रीकृष्ण के आने का संदेश सुनाया है। आपको क्या लगता है कि उन्होंने क्या कहा होगा? कैसे कहा होगा?

(ख) यदि आपको मीरा से बातचीत करने का अवसर मिल जाए तो आप उनसे क्या-क्या कहेंगे और क्या-क्या पूछेंगे?

शब्दों के रूप

अगले पृष्ठ पर शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

(क) "मोहनि मूरति <u>साँवरि</u> सूरति, नैना बने विशाल।"

इस पंक्ति में 'साँवरि' शब्द आया है। इसके स्थान पर अधिकतर 'साँवली' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस पद में ऐसे कुछ और शब्द हैं, जिन्हें आप कुछ अलग रूप में लिखते और बोलते होंगे। नीचे ऐसे ही कुछ अन्य शब्द दिए गए हैं। इन्हें आप जिस रूप में बोलते-लिखते हैं, उस तरह से लिखिए।

- नैनन ____________
- सोभित ____________
- भक्त वछल ____________
- बदरिया ____________
- मेरो मनवा ____________
- आवन ____________
- दिश ____________
- मेहा ____________

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में श्रीकृष्ण से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए—

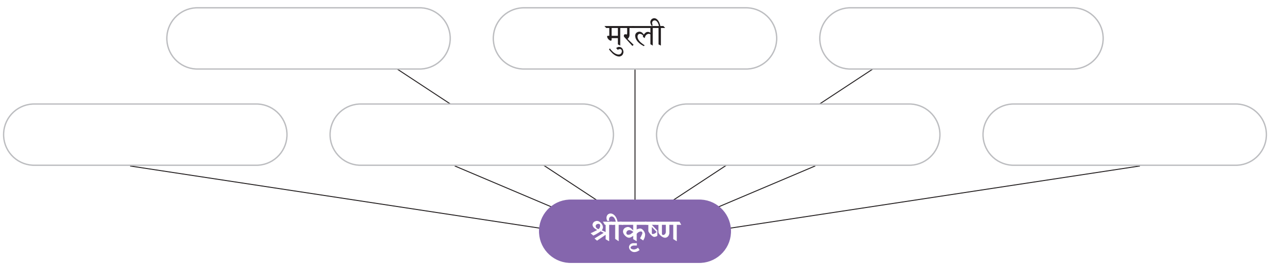

पंक्ति से पंक्ति

नीचे स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलती-जुलती पंक्तियों को रेखा खींचकर मिलाइए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजंती माल	1. चारों दिशाओं से बादल उमड़-घुमड़ कर बरस रहे हैं, बिजली चमक रही है, वर्षा की झड़ी लग गई है।
2. क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल	2. होंठों पर सुरीली धुनों से भरी हुई बाँसुरी और सीने पर वैजयंती माला सजी हुई है।
3. मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल	3. सावन के महीने में मेरे मन में बहुत-सी उमंगें उठ रही हैं, क्योंकि मैंने श्रीकृष्ण के आने की चर्चा सुनी है।
4. सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की	4. हे मीरा के प्रभु! तुम संतों को सुख देने वाले हो और अपने भक्तों से स्नेह करने वाले हो।
5. उमड़ घुमड़ चहुँ दिश से आया, दामिन दमकै झर लावन की	5. कमर पर छोटी-छोटी घंटियाँ सजी हुई हैं और पैरों में बँधे हुए नूपुर मीठी आवाज में बोल रहे हैं।

कविता का सौंदर्य

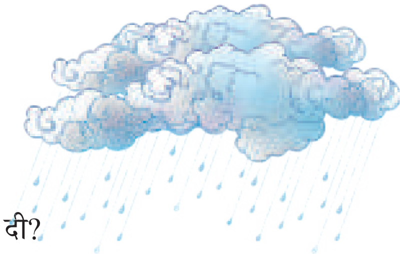

"बरसे बदरिया सावन की।"

इस पंक्ति में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। क्या आपको कोई विशेष बात दिखाई दी?

इस पंक्ति में 'बरसे' और 'बदरिया' दोनों शब्द साथ-साथ आए हैं और दोनों 'ब' वर्ण से शुरू हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इस पंक्ति में 'ब' वर्ण की आवृत्ति हो रही है। इस कारण यह पंक्ति और भी अधिक सुंदर बन गई है। पाठ में से इस प्रकार के अन्य उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

रूप बदलकर

पाठ के किसी एक पद को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए। उदाहरण के लिए— 'सावन के बादल बरस रहे हैं..' या 'सावन की बदरिया बरसती है...' आदि।

मुहावरे

"बसो मेरे नैनन में नंदलाल।"

नैनों या आँखों में बस जाना एक मुहावरा है, जब हमें कोई व्यक्ति या वस्तु इतनी अधिक प्रिय लगने लगती है कि उसका ध्यान हर समय मन में बना रहने लगता है तब हम इस मुहावरे का प्रयोग करते हैं, जैसे — उसकी छवि मेरी आँखों में बस गई है। ऐसा ही एक अन्य मुहावरा है— आँखों में घर करना।

नीचे आँखों से जुड़े कुछ और मुहावरे दिए गए हैं। अपने परिजनों, साथियों, शिक्षकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से इनके अर्थ समझिए और इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. आँखों का तारा
2. आँखों पर पर्दा पड़ना
3. आँखों के आगे अँधेरा छाना
4. आँख दिखाना
5. आँख का काँटा
6. आँखें फेरना
7. आँख भर आना
8. आँखें चुराना
9. आँखों से उतारना
10. आँखों में खटकना

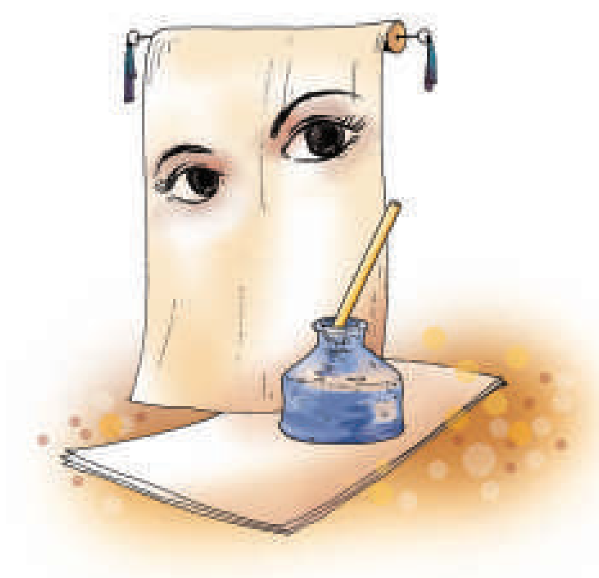

सबकी प्रस्तुति

पाठ के किसी एक पद को चुनकर अपने समूह के साथ मिलकर अलग-अलग तरीके से कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए, उदाहरण के लिए—

- गायन करना।
- भाव-नृत्य प्रस्तुति करना।
- कविता पाठ करना आदि।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "बरसे बदरिया सावन की"

1. इस पद में सावन का सुंदर चित्रण किया गया है। जब आपके गाँव या नगर में सावन आता है तो मौसम में क्या परिवर्तन आते हैं? वर्णन कीजिए।

2. सावन की ऋतु में किस-किस प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई देती हैं? इन ध्वनियों को सुनकर आपके मन में कौन-कौन सी भावनाएँ उठती हैं? आप कैसा अनुभव करते हैं? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए। (उदाहरण के लिए — बिजली के कड़कने या बूँदों के टपकने की ध्वनियाँ।)

3. वर्षा ऋतु में आपको कौन-कौन सी गतिविधियाँ करने या खेल खेलने में आनंद आता है?

4. सावन के महीने में हमारे देश में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। आपके घर, परिसर या गाँव में सावन में कौन-कौन से त्योहार मनाए जाते हैं? किसी एक के विषय में अपने अनुभव बताइए।

(ख) "बसो मेरे नैनन में नंदलाल"

इस पद में मीरा श्रीकृष्ण को 'संतों को सुख देने वाला' और 'भक्तों का पालन करने वाला' कहती हैं।

1. क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जो सदैव आपकी सहायता करता है और आपको आनंदित करता है? विस्तार से बताइए।

2. कवयित्री ने पाठ में 'नूपुर' और 'क्षुद्र घंटिका' जैसे उदाहरणों का प्रयोग किया है। किसी का वर्णन करने के लिए हम केवल बड़ी-बड़ी ही नहीं, बल्कि उससे जुड़ी छोटी-छोटी बातें भी बता सकते हैं। आप भी अपने आस-पास के किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करते हुए उससे जुड़ी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दीजिए और उन्हें लिखिए।

विशेषताएँ

"मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।"

(क) इस पंक्ति में कवयित्री ने श्रीकृष्ण की मोहनी मूरत, साँवरी सूरत और विशाल नैनों की बात की है। आपको श्रीकृष्ण की कौन-कौन सी बातों ने सबसे अधिक आकर्षित किया?

(ख) किसी व्यक्ति या वस्तु का कौन-सा गुण आपको सबसे अधिक आकर्षित करता है? क्यों? अपने जीवन से जुड़े किसी व्यक्ति या वस्तु के उदाहरण से बताइए।

(ग) हम सबकी कुछ विशेषताएँ बाह्य तो कुछ आंतरिक होती हैं। बाह्य विशेषताएँ तो हमें दिखाई दे जाती हैं, लेकिन आंतरिक विशेषताएँ व्यक्ति के व्यवहार से पता चलती हैं। आप अपनी दोनों प्रकार की विशेषताओं के दो-दो उदाहरण दीजिए।

मधुर ध्वनियाँ

"अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजंती माल।।

क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।।"

इन पंक्तियों में तीन ऐसी वस्तुओं के नाम आए हैं, जिनसे मधुर ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। उन वस्तुओं के नाम पहचानिए और उनके नीचे रेखा खींचिए।

आगे मधुर ध्वनियाँ उत्पन्न करने वाले कुछ वाद्ययंत्रों के विषय में पहेलियाँ दी गई हैं। इन्हें पहचानकर सही चित्रों के साथ रेखा खींचकर मिलाइए—

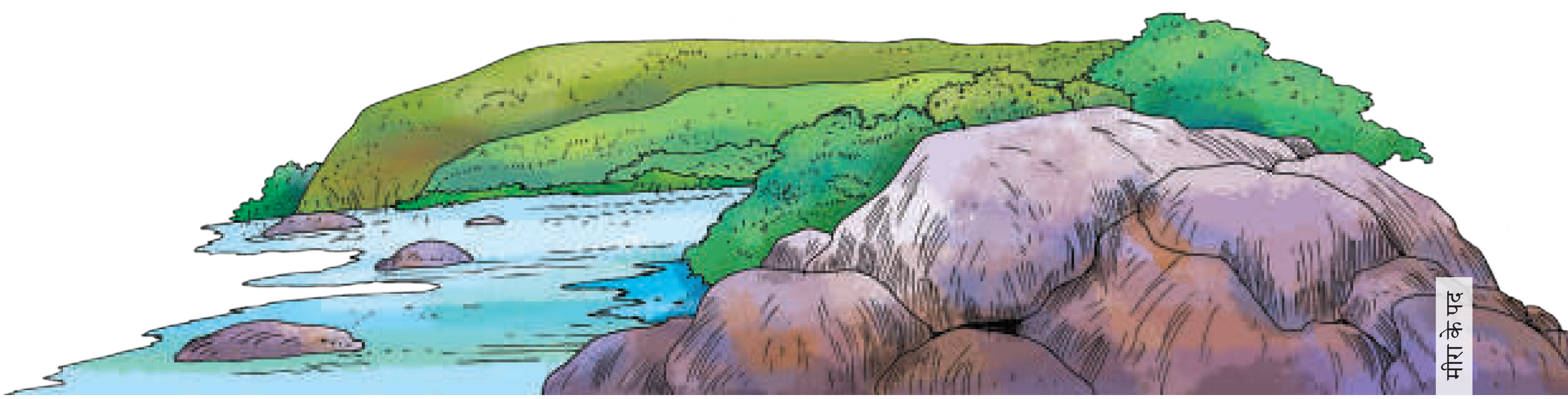

पहेली	उत्तर
हवा से बोलती है, सुर में गीत सुनाती है, होठों से छू जाए, तो मन को लुभाती है।	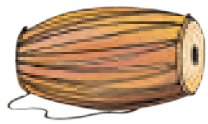
दो साथियों का जोड़ा, हाथों से है बजता, ताल मिलाए ताल से, हर संगत में सजता।	
शाहों में शामिल होती, फूँकों से संगीत सुनाती, सुख के सारे काम सजाती, दुख में भी ये साथ निभाती।	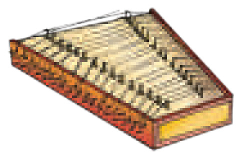
तारों में छिपा संगीत, माँ सरस्वती का गहना, छेड़े जब अँगुलियाँ, बहे रागों का झरना।	
दो हाथों से बजती है ये, ताल से थिरकें पैर, हर उत्सव की है ये साथी, लटक गले ये करती सैर।	
नागिन-सी लहराती है जो, बड़ी खास आवाज है जिसकी, तीन, चीन, रंगीन, हीन से मिली-जुली पहचान है इसकी।	
सौ तारों का जादू, डंडियों से जो गाए, कश्मीर की वादियों जैसा मधुर संगीत लाए।	
छोटा-सा यंत्र है, हाथों से बजता जाए, घर-मंदिर का साथी, झंकार से मन बहलाए।	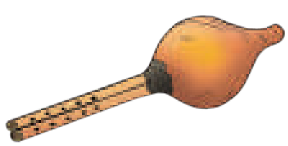

चित्र करते हैं बातें

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए—

यह मीरा का काँगड़ा शैली में बना चित्र है। इस चित्र के आधार पर मीरा के संबंध में एक अनुच्छेद लिखिए।

सावन से जुड़े गीत

अपने परिजनों, मित्रों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से सावन में गाए जाने वाले गीतों को ढूँढ़िए और किसी एक गीत को अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। आप सावन से जुड़ा कोई भी लोकगीत, खेलगीत, कविता आदि लिख सकते हैं। कक्षा के सभी समूहों द्वारा एकत्रित गीतों को जोड़कर एक पुस्तिका बनाइए और कक्षा के पुस्तकालय में उसे सम्मिलित कीजिए।

खोजबीन

आपने पढ़ा कि मीरा श्रीकृष्ण की आराधना करती थीं। आपने कक्षा 6 की पुस्तक *मल्हार* में पढ़ा था कि सूरदास भी श्रीकृष्ण के भक्त थे। अपने समूह के साथ मिलकर सूरदास की कुछ रचनाएँ ढूँढ़कर कक्षा में सुनाइए। इसके लिए आप पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

आज की पहेली

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनकी अंतिम ध्वनि से मिलती-जुलती ध्वनि वाले शब्द वर्ग में से खोजिए और लिखिए—

	शब्द	समान ध्वनि वाले शब्द
1.	मूरति	सूरति
2.	सावन	________
3.	उमड़	________
4.	नागर	________
5.	नंदलाल	________

आ	घु	म	ड़
व	अ	सू	गो
न	ग	र	पा
सो	भि	ति	ल

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप कवयित्री मीरा के बारे में और जान-समझ सकते हैं —

- मीरा
  https://www.youtube.com/watch?v=KWKtPM8c-PA&ab_channel=NCERTOFFICIAL
- मीरा के भजन
  https://www.youtube.com/watch?v=86Z-AA2vBQM&ab_channel=NCERTOFFICIAL
- मीराबाई
  https://www.youtube.com/watch?v=O2GsmVi37sA&ab_channel=NCERTOFFICIAL
- मीरा के भजन— एम एस सुब्बु लक्ष्मी
  https://www.youtube.com/watch?v=EhhOcNJXJeI&ab_channel=PrasarBharatiArchives
- मीरा फिल्म 1945 भाग एक
  https://www.youtube.com/watch?v=O05QUww2u7Q&ab_channel=PrasarBharatiArchives
- मेरे तो गिरधर गोपाल
  https://www.youtube.com/watch?v=P8q9-cJK0dg&ab_channel=NCERTOFFICIAL

पढ़ने के लिए

स्वामिभक्त सुमुख

पुराने समय में, महिंसक राज्य में जब सकुल नामक राजा का शासन था, चित्रकूट पर्वत पर एक गुफा में हंसों का बहुत बड़ा झुंड निवास करता था। एक दिन कुछ हंस आहार की तलाश में निकल पड़े।

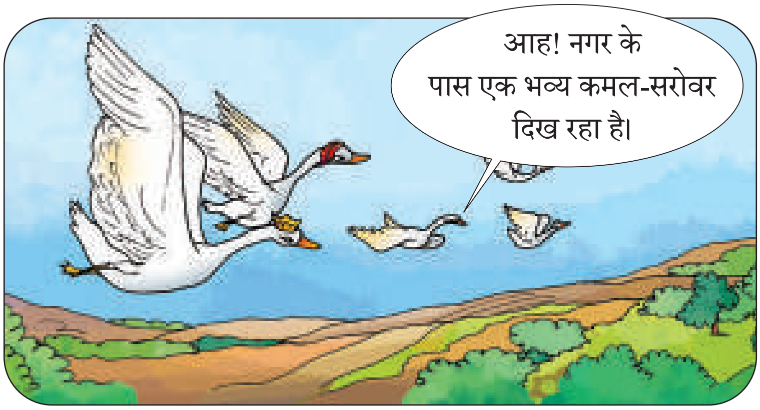

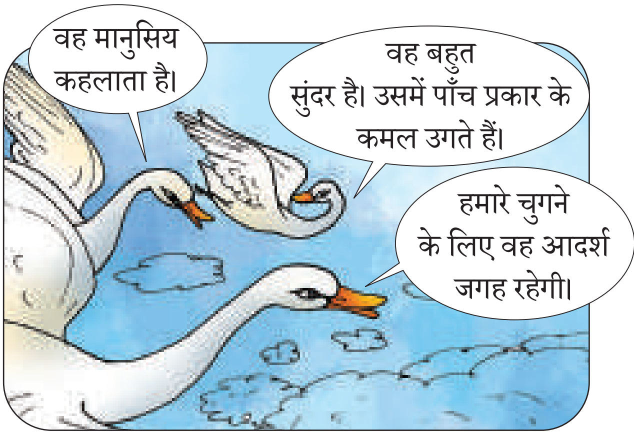

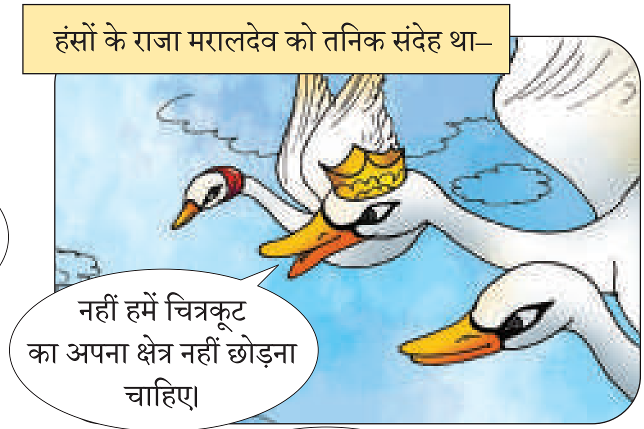

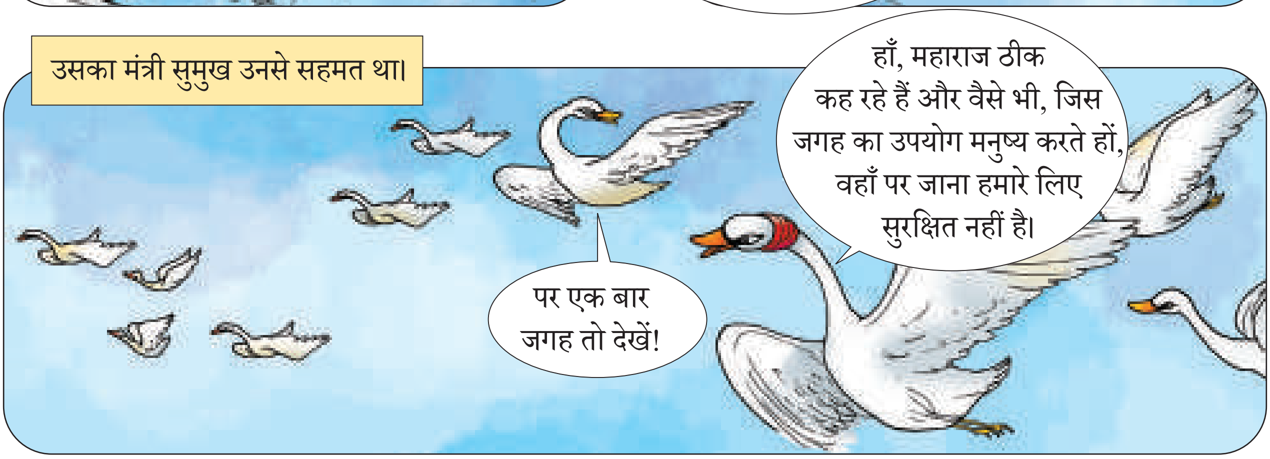

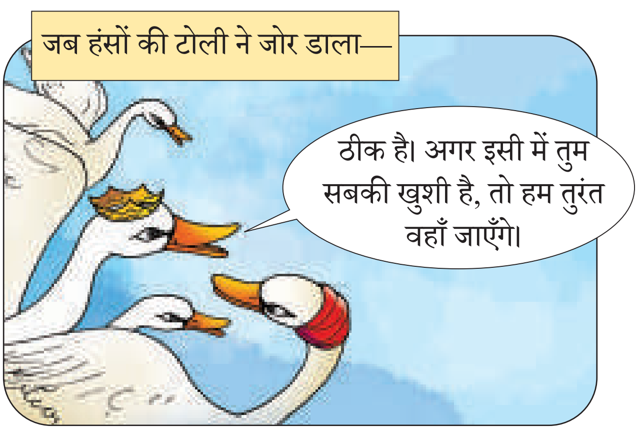

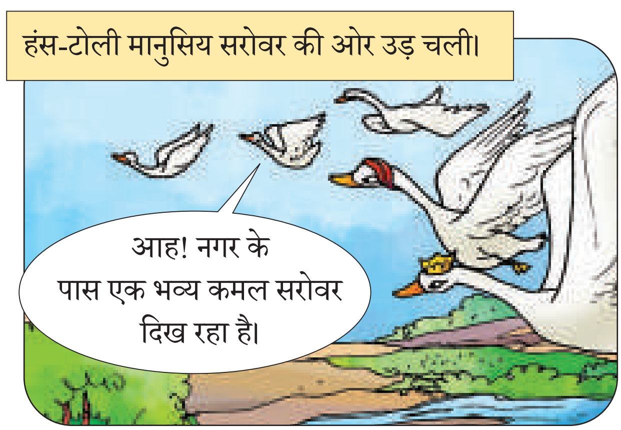

चूँकि अनेक पक्षी उस सरोवर पर आते-जाते थे, इसलिए शिकारियों का वह मनपसंद स्थान बन गया था। जब हंस-टोली सरोवर पर उतरी तो हंसों के राजा के पाँव आखेटक के जाल में फंस गए।
ओह! मैं तो फंस गया!
अगर मैं अभी ही चिल्ला पड़ा तो मेरे साथी बिना कुछ चुगे ही उड़ जाएँगे। बेचारे! यहाँ पहुँचने के लिए उन्होंने कितनी लंबी उड़ान भरी है।
और चुपचाप ही अपने पाँव छुड़ाने का प्रयास करने लगा—
मैं जितना खींचता हूँ, जाल की रस्सी मेरे शरीर में उतनी ही अधिक फंसती जाती है।
उसने शांति से इंतजार किया।
आह! अब वे पानी में क्रीड़ा और उछल-कूद कर रहे हैं। उन्होंने पेट-भर चुग लिया होगा।
तब हंसों को संकट का संकेत सुनाई दिया—
आह!
खतरे का संकेत! चलो, जल्दी वापस चित्रकूट चलते हैं!
लेकिन पुकारा किसने था?
यह पता लगाने का समय नहीं है। हमें अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए यहाँ से उड़ जाना चाहिए।
पूरी टोली में केवल एक हंस ऐसा था, जो उड़ जाने को तैयार न था। और वह था— मंत्री सुमुख।
मुझे महाराज मरालदेव दिखाई नहीं दे रहे। कहीं वही तो घायल नहीं हो गए?
चिंताग्रस्त, सुमुख सरोवर पर लौट कर गया और उसने राजा को घायल और लहूलुहान अवस्था में पाया।

चिंता न करें, महाराज। मैं अपनी जान देकर भी आपको बंधन से छुड़ाऊँगा।
लेकिन तुम क्यों चिंता करते हो, देखो, शेष सबके सब उड़ गए हैं। मेरे जैसे फँसे हुए पक्षी के लिए आशा ही क्या बचती है भला?
मैं आपको इस स्थिति में छोड़ने की अपेक्षा आपके साथ मर जाना अधिक पंसद करूँगा।
लेकिन तुम्हारे इस बलिदान से हमारा या किसी और का कौन-सा प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?
हे पक्षियों में श्रेष्ठ, संकट की इस घड़ी में आपके साथ रहना मेरा परम कर्तव्य है।
सचमुच, ऐसा करना तुम्हारी महानता का प्रमाण है। मैं तुम्हारी स्वामीभक्ति की प्रंशसा करता हूँ। फिर भी, मैं तुम्हें जाने की अनुमति देता हूँ।
तभी...
देखो! आखेटक इसी ओर आ रहा है।
वाह! क्या सौभाग्य है! आज मेरे जाल में एक साथ दो हंस फँसे हैं!
लेकिन जब वह निकट गया–
अरे, तुम तो मुक्त हो! फिर दूसरे हंस की भाँति उड़ क्यों नहीं जाते?
मैं इन्हें नहीं छोड़ सकता। ये मेरे राजा होने के साथ-साथ प्रिय मित्र भी हैं। इन्हें मुक्त कर दो और हमें जाने दो।
लेकिन तुम तो जब चाहो जा सकते हो!
नहीं, मैं अकेले अपनी मुक्ति की कामना नहीं करता। सचमुच मैं तुमसे विनती करता हूँ, महाराज को छोड़ दो और बदले में मुझे पकड़ लो।
मैं इनके समान ही आकार में बड़ा और मोटा-ताजा हूँ। इनके स्थान पर अगर तुम मुझे पकड़ लो तो तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।
इस प्रकार सौम्यता से किंतु दृढ़तापूर्वक बातचीत करके सुमुख आखेटक का हृदय परिवर्तन करने में सफल हो गया।
मैं तुम्हारी स्वामीभक्ति देख कर अत्यंत प्रभावित हूँ। जाओ, मैं तुम्हारे राजा को मुक्त कर देता हूँ।
धन्यवाद! तुम भी सदा सुखी रहो।
बड़ी कोमलता से आखेटक ने हंस के फँसे हुए पाँव को छुड़ाया और उसके जख्मों को धोकर साफ किया।

हे महाराज इस आखेटक ने हमें छोड़ कर हम पर बहुत उपकार किया है।
यह चाहता तो हमें क्रीड़ा हंस बनाकर यहाँ के राजा को भेंट करके पुरस्कार पा सकता था या हमें मारकर हमारा माँस बेच सकता था। आप इस आखेटक की ओर से यहाँ के राजा से बात क्यों नहीं करते।
हमें अपने राजा के पास ले चलो!
लेकिन ऐसा करना संकट से खाली नहीं है। राजा तुम्हें पालतू बनाकर बंधन में रख सकते हैं या मरवा भी सकते हैं।
तुम्हारा हृदय परिवर्तन हो गया। हो सकता है कि तुम्हारे राजा भी कठोर हृदय वाले न हों।
आखेटक दोनों हंसों को राजा सकुल के पास ले गया।
ये दोनों उत्तम हंस हैं, महाराज यह हंसों के राजा और उनके सेनापति हैं।
ये तुम्हारे हाथ कैसे लगे?
तब आखेटक ने सारा किस्सा सुनाया—
जब हंसों का खाना हो गया
हे राजा, इस आखेटक ने कृपापूर्वक हमें मुक्त किया। हम आपके पास इसे पुरस्कार दिलवाने के लिए आए हैं।
इन्हें सोने के आसन पर बैठाया जाए। इनके लिए शहद और मिसरी का प्रबंध किया जाए।
हंसों मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?
राजा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।
मैं तुम्हें एक घर, रथ, भरपूर सोना दे रहा हूँ और तुम्हारे लिए एक लाख की आय की व्यवस्था करता हूँ।
राजा सकुल की अनुमति लेकर हंसों का राजा मरालदेव और सुमुख अपने झुंड में वापस आ गए।
आप कैसे मुक्त हुए?
यह सब मेरे सेनापति सुमुख की समझदारी और निष्ठा के कारण संभव हुआ। उसने मुझे बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

पढ़ने के लिए

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरसाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा।।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लख कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में।
काँपें शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा।।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।
इस झंडे के नीचे निर्भय, ले स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत-माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा।।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।।

—श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

11 सड़क चिह्न एवं सड़क संकेत

सड़क चिह्न (ROAD SIGNS) सड़क पर अंकित सभी

लाईने एवं नमूने व रंग जिनका प्रयोग सड़क पर या सड़क के किनारों पर किया जाता है वे सड़क चिह्न कहलाते हैं। ये यातायात को नियंत्रित व नियोजित करने तथा सड़क उपयोगकर्ता को सतर्क व सावधान करने के उद्देश्य से बनाए जाते हैं। ये चिह्न सड़क की भाषा को प्रदर्शित करते हैं। जैसे:

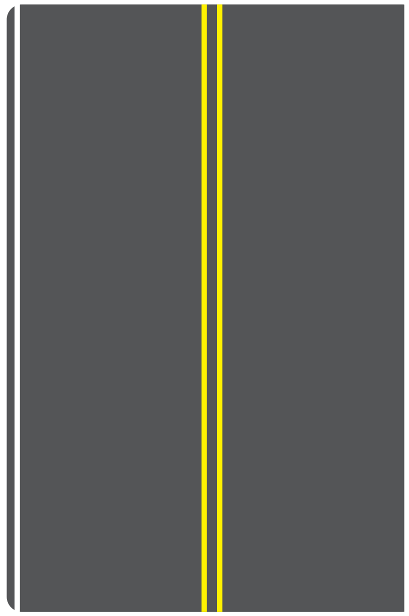

मध्य रेखा (CENTER LINE) अविभाजित सड़क पर मध्य

रेखा आने-जाने वाली यातायात को अलग करती है एवं आवागमन को आसान बनाती है। यदि रेखा लगातार है तो ओव्हर टेक करने से बचना चाहिए। मध्य रेखा खण्डित हो तथा सामने से किसी प्रकार की गाड़ी नहीं आ रही हो, तो ध्यानपूर्वक ओव्हरटेक करना चाहिए।

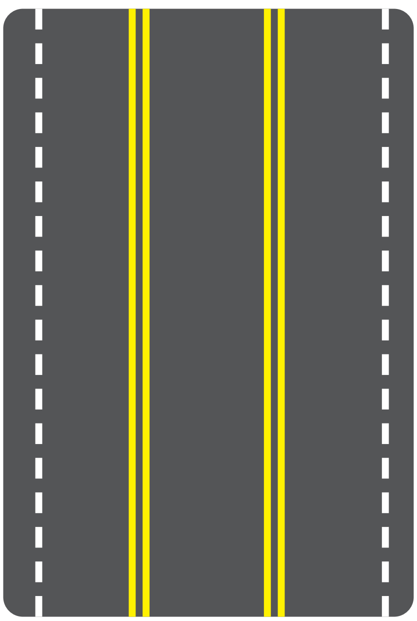

छोटी खण्डित सफेद रेखाएँ
(LANE MARKING LINE)

सड़क को लेन में विभाजित करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। वाहनों को इन लेन में ही चलना चाहिए। बाँयी ओर की अंतिम लेन भारी वाहन एवं धीमी गति के वाहनों के लिए होती है तथा तेज गति के वाहनों के लिए दाँयी ओर की लेन होती है।

दिशा सूचक मार्किंग (DIRECTION INDICATOR MARKING)-

रोड पर जंक्शन/ इंटर सेक्शन में लेन मार्किंग किया गया होता है। दाँयी ओर जाने वाली यातायात के लिए दाँयी लेन, सीधे जाने वाली यातायात के लिए मध्य लेन एवं बाँयी ओर जाने वाली यातायात के लिए बाँयी लेन बनाया जाता है।

उत्तर दीजिए -

प्रश्न - 01 मध्य रेखा (CENTER LINE) क्या महत्व है ?

प्रश्न - 02 मध्य में छोटी खण्डित सफेद रेखाएँ का क्या महत्व है ?

प्रश्न - 03 बाँयी दिशा में जाने के लिए कौन-से लेन का उपयोग करना चाहिए ?

प्रश्न - 04 ओव्हरटेक कब नही करना चाहिए ?

ooo

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं, जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में सहायता करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं. – अंग्रेज़ी	अ. – अव्यय	अ. – अरबी	अ.क्रि. – अकर्मक क्रिया
पु. – पुंलिंग	फा. – फारसी	वि. – विशेषण	सं. – संस्कृत
स.क्रि. – सकर्मक क्रिया	सर्व. – सर्वनाम	स्त्री. – स्त्रीलिंग	

अ

- अकाल [पु.सं.] – सूखा, अयोग्य या अनियत काल, कुसमय, अनवसर, परमात्मा
- अदृश्य [वि.सं.] – जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर, लुप्त, गायब
- अधर [वि.सं.] – होंठ, नीचे का ओठ, अंतरिक्ष, पाताल, दक्षिण दिशा
- अनोखी [वि.] – अनूठा, अद्भुत, अपूर्व, नया, सुंदर
- अनौपचारिक [वि.सं.] – नियम आदि का पालन न किया गया हो
- अभिवादन [पु.सं.] – प्रणाम करना, छोटे की ओर से बड़े को नमस्कार, स्तुति
- असफल [वि.सं.] – विफल, नाकामयाब

आ

- आखेटक [पु.सं.] – शिकारी, शिकार
- आग्रही [वि.सं.] – आग्रह करने वाला
- आजीविका [स्त्री.सं.] – रोजगार, रोजी, धंधा
- आमोद [पु.सं.] – हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, बिखरने और फैलने वाली सुगंध, सुरभि
- आवन [पु.] – आगमन

- आवरण [पु.सं.] – ढकना, छिपाना, घेरना, ढक्कन, परदा, बचाव, ढाल, चहारदीवारी
- आवेश [पु.सं.] – प्रवेश, दबा लेना, हावी हो जाना, गुस्सा, जोश, घमंड, लगन
- आश्चर्य [पु.सं.] – अचरज, अचंभा, विस्मय, अद्‌भुत रस का स्थायी भाव
- आश्रय [पु.सं.] – आधार, विषय, शरण, ठिकाना, घर, सहायता
- आहत [वि.सं.] – घायल, आघात किया गया हो, जिस पर प्रहार, मारा हुआ, हटाया

उ

- उपवन [पु.सं.] – उद्यान, बगीचा
- उभय [वि.सं.] – दोनों, दो में से प्रत्येक
- उमग्यो [स्त्री.] – उमंग, उल्लास, मौज, जोश, उभार, उमड़ा, आकांक्षा
- उमड़ [स्त्री.] – बाढ़, धावा, घिराव
- उर [वि.सं.] – हृदय, मन

औ

- औपचारिक [वि.सं.] – गौण, उपचार संबंधी, दिखाऊ

क

- कटितट [पु.सं.] – कमर
- कतार [स्त्री.(अ.)] – पंक्ति, पाँत, क्रम, सिलसिला, समूह
- कपोत [पु.सं.] – कबूतर, पंडुक, चिड़िया
- कसर [स्त्री.(अ.)] – कमी, न्यूनता, घाटा, वैर, विकार
- काक [पु.सं.] – कौआ, एक द्वीप, एक माप, कान
- कुंज [पु.सं.] – लता आदि से घिरा या ढका हुआ स्थान, हाथी का दाँत, नीचे का जबड़ा, गुफा
- कुढ़न [स्त्री.] – खीझ, कुढ़ने का भाव, जलन, विवशता आदि की अनुभूति से होने वाला मनस्ताप
- कुल [पु.सं.]– वंश, घराना, गोत्र, समुदाय, श्रेणी, घर, आवास, जनपद, सब, सारा
- कोकिल [पु.सं.] – कोयल, अंगारा, एक तरह का साँप

क्ष

- क्षुद्र [वि.सं.] – नन्हा, छोटा, तुच्छ, खोटा, ओछा

ख

- खंजन [पु.सं.] –एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, जो मैदानी प्रदेशों में केवल जाड़े में दिखाई देती है, खँडरिच, लँगड़ाते हुए चलना

- खग [पु.सं.] – पक्षी, सूर्य, ग्रह, वायु, बादल, चंद्रमा, बाण, देवता
- खता [पु.] – क्षत, घाव

ग

- गावन [स्त्री.] – गाने का ढंग
- गुजारा [पु.फा.] – निर्वाह, रास्ता, घाट, पुल या नाव से नदी पार करना

घ

- घंटिका [स्त्री.सं.] – छोटी घंटी, घुँघरू
- घनघोर [वि.सं.] – बहुत घना, जबरदस्त, गहरा, भयंकर
- घसियारा [पु.] – घास खोदने वाला, घास काटने वाला, घास बेचने वाला
- घुमड़ [अ.क्रि.] – बादलों का इधर-उधर से आकर जमा होना

च

- चकित [वि.सं.] – विस्मित, हैरान, शंकित, घबराया हुआ, भीत
- चहुँ [वि.] – चारों ओर, चार
- चातक [पु.सं.] – पपीहा, सारंग (कवि-संप्रदाय के अनुसार यह पक्षी केवल वर्षा, बल्कि स्वाती नक्षत्र में होने वाली वर्षा का जल पीता है, फलत: सदैव बादलों की ओर टकटकी लगाए रहता है।)
- चापलूस [वि.फा.] – चाटुकार, खुशामदी
- चित्त [पु.सं.] – अंत:करण, मन, अंतरिंद्रिय
- चेटी [स्त्री.सं.] – दासी, सेविका, सेवा-टहल करने वाली स्त्री

छ

- छटा [स्त्री.सं.] – शोभा, छवि, झलक, दीप्ति, पंरपरा, बिजली
- छुटपन [पु.अ.] – छोटापन, बचपन

ज

- जलाशय [पु.सं.] – झील, तालाब, जलाधार, समुद्र
- जिय [पु.] – जी, मन, जान, चित्त, जीव

झ

- झर [पु.सं.] – झरना, सोता, जल प्रवाह की ध्वनि, ज्वाला, आँच, झुंड
- झलमल [पु.वि.] – झलमलाने का भाव, अस्थिर झलमलाता हुआ प्रकाश
- झुँझलाना [अ.क्रि.] – खीझना, चिढ़ना, बिगड़ना

ट

- ट्रैफिक [अं.] – यातायात

ठ

- ठाठ [पु.] – शान, सजधज, सितार का तार

ढ

- ढाल [स्त्री. सं.] – तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे या गैंडे के चमड़े का बना कछुवे की पीठ जैसा एक साधन, आगे की ओर क्रमशः नीची होती गई जमीन, उतार, ढंग, प्रकार

त

- तात [पु.सं.] – पिता, आदरणीय व्यक्ति
- ताप [पु.सं.] – गरमी, ज्वर, दुःख, मानसिक व्यथा, आधि, ऊष्णता, गर्माहट के लिहाज से किसी वस्तु की दशा– वह दशा जो एक वस्तु से दूसरी वस्तु में ऊष्मा के प्रवाह की दिशा निर्धारित करती है।
- तालीम [स्त्री.(अ.)] – शिक्षा
- ताहि [सर्व.] – उसे, उसको

द

- दम [पु.फा.] – साँस, श्वास, पल, लहजा, क्षण, ताकत, जिंदगी, जोर
- दामिन [स्त्री.] – दामिनी, बिजली
- दुर्जन [पु.सं.] – दुष्ट मनुष्य, खल
- द्रोह [पु.सं.] – दूसरे का अनिष्ट चाहना, हिंसा, अपराध, वैर, विद्रोह

न

- नभ [पु.सं.] – आकाश, आसमान, मेघ, जल, पृथ्वी आदि पाँच तत्वों में से एक
- निर्भय [वि.सं.] – निडर, निरापद, जो किसी से भय न खाय

- नूपुर [पु.सं.] – घुँघरू, पैर का एक गहना
- नैना [पु.] – नेत्र, आँख

प

- पनघट [पु.] – पानी भरने का घाट
- परतीती – प्रतीति, ज्ञान, बोध, हर्ष, विश्वास
- पवन [पु.सं.] – हवा, छलनी, पानी
- पैनी [वि.स्त्री.] – जो भीतर की वस्तु को देख सके, जिसकी धार बहुत तेज हो
- प्रशिक्षण [पु.] – किसी व्यवसाय, कला, दौड़ आदि की व्यावहारिक रूप में लगातार कुछ समय तक दी जाने वाली शिक्षा, ट्रेनिंग

फ

- फरमाइश [स्त्री.फा.] – आज्ञा रूप में कुछ माँगना, आज्ञा, कोई चीज भेजने की आज्ञा, आर्डर
- फौरन [अ.(अ.)] – तुरंत, अभी, झटपट

ब

- बघारना [स.क्रि.] – छौंकना, तड़का देना, हींग, जीरा, प्याज आदि घी में कड़कड़ाकर दाल, तरकारी आदि में डालना
- बसन [पु.सं.] – वस्त्र, आवरण, ढकने की वस्तु, निवास
- बानी [स्त्री.] – वाणी, सरस्वती, सार्थक शब्द, वचन, जीभ, स्वर, प्रशंसा
- बिद्ध [वि.] – बिंधा हुआ, छेदा हुआ
- बिसारि [स.क्रि.] – बिसराना, भुला देना
- बेड़ी [स्त्री.] – बंधन, कैदियों, हाथी-घोड़ों आदि के पावों में पहनाई जाने वाली लोहे की जंजीर
- बेध [पु.] – छेद, मूँगे आदि में किया हुआ छेद, मोती
- बेवक्त [पु.(अ.)]– कुसमय, किसी समय, हमेशा

भ

- भक्तवछल– [वि.] – भक्त को प्यार करने वाला, भक्त के प्रति स्नेहयुक्त
- भक्षक [वि.सं.] – खाने वाला, भक्षण करने वाला
- भनक [स्त्री.] – धीमी, अस्पष्ट ध्वनि, उड़ती हुई खबर
- भावन [पु.सं.] – निमित्त, कारण, उत्पादन, रुचि-वर्धन, चिंतन, कल्पना, स्मरण
- भाव–भंगिमा [स्त्री.सं.] – मन के विकार को व्यक्त करने वाला अंग चालन या क्रिया

- भौंर [पु.] – भ्रमर, भौंरा, मधुप, जलावर्त
- भ्रमण [पु.सं.] – घूमना, फिरना, यात्रा, अस्थिरता, चक्कर

म

- मंत्र [पु.सं.] – सलाह, राय, गुप्त वार्ता, कान में कही जाने वाली बात, कार्य सिद्धि का गुर, [स्त्री.] – समक्ष, बुद्धि
- मनहर [वि.सं.] – मन को हरने-चुराने वाला, सुंदर
- मानधन [पु.सं.वि.] – मान का धनी, प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो
- मुक्ति [स्त्री.सं.] – आजादी, छुटकारा, मोक्ष
- मूरति [स्त्री.सं.] – मूर्ति, शरीर, स्वरूप या शक्ल, प्रतिमा
- मेह [पु.] – वर्षा, बरसात, झड़ी (पड़ना, बरसना)

र

- रस [पु.सं.] – स्वाद, आनंद, प्रेम, द्रव, जल, मन में उत्पन होने वाला वह भाव, जो काव्य पाठ, अभिनय-दर्शन आदि से होता है
- रसाल [वि.सं.] – रसीला, मीठा, मधुर, सुंदर, शुद्ध
- राजति [अ.क्रि.] – राजना, रहना, शोभित होना, विराजना
- रिसेस [अं.] – अल्पावकाश, मध्यावकाश
- रीति [स्त्री.सं.] – नियम, झरना, टपकना, ढंग, प्रकार, तरीका, चलन
- रेवड़ [पु.] – भेड़ों का समूह, पशुओं का झुंड, गल्ला

ल

- लहरा [पु.] – लहर, मजा, आनंद, बाजों की संगत, जिसमें ताल–स्वरों की केवल लय होती हैं, बादलों का कुछ देर जोर से बरसना, एक घास
- लावन [स्त्री.] – लावनि, लावण्य, सुंदरता

व

- वर्ण [पु.सं.] – रंग, भेद, अक्षर, शब्द, स्वर
- वादक [पु.सं.] – बजाने वाला, बोलने वाला, शास्त्रार्थ करने वाला
- विकार [पु.सं.] – परिवर्तन, भावना, वासना, क्षोभ, रूप, धर्म आदि स्वाभाविक अवस्था का परिवर्तित होना
- विचरण [पु.सं.] – घूमना-फिरना, चलना, भ्रमण करना
- व्यापक [वि.सं.] – सर्वत्र फैला हुआ, दूर तक, जो किसी चीज के सारे विस्तार में हो

श

- शाखा [स्त्री.सं.] – पेड़ की डाल, दरवाजे की चौखट, बाहु, संप्रदाय
- शुक [पु.सं.] – सुग्गा, तोता, वस्त्र, पोशाक
- शैली [स्त्री.सं.] – रीति, किसी काम के करने का ढंग, तरीका, पद्धति
- श्याम [वि.सं.] – साँवला, काला, कृष्ण

स

- सदय [वि.सं.] – दयालु, रहम दिल
- समुझि [स्त्री.] – समझ, बुद्धि, प्रज्ञा, विचार
- साजिंदे [पु.फा.] – साज बजाने वाला [सारंगिया, तबलची]
- सिद्धि [स्त्री.सं.वि.] – सफलता, अभ्युदय, अनुमान, दक्षता, निपुणता, मोक्ष, लाभ
- सुखदाई [पु.सं.] – सुख देने वाला
- सुधा [स्त्री.सं.] – अमृत, रक्त, रस, दूध, जल, शहद, गंगा, बिजली, पृथ्वी
- सुधि [स्त्री.] – याद, होश, चेत, खबर
- सुर [पु.सं.] – स्वर, आवाज, देवता, सूर्य
- सुरभि [वि.सं.] – सुगंधित, खुशबूदार, प्रिय, मनोरम, प्रसिद्ध, बुद्धिमान, विद्वान
- सूरति [स्त्री.] – शक्ल, रूप, याद, स्मरण
- सोहता [वि.]– मोहक, सुंदर
- सोहावन [अ.क्रि.] – अच्छा लगना, भला मालूम, सुन्दर, शोभित होना
- स्वच्छंद [पु.सं.] – अपनी इच्छा, पसंद

ह

- हँसिया [पु.] – लोहे का धनुषाकार औजार जिससे फसल, तरकारी आदि काटते हैं
- हठी [वि.सं.] – हठ करने वाला, जिद्दी

‘ब्रेल भारती’ हिंदी वर्ण व गिनती

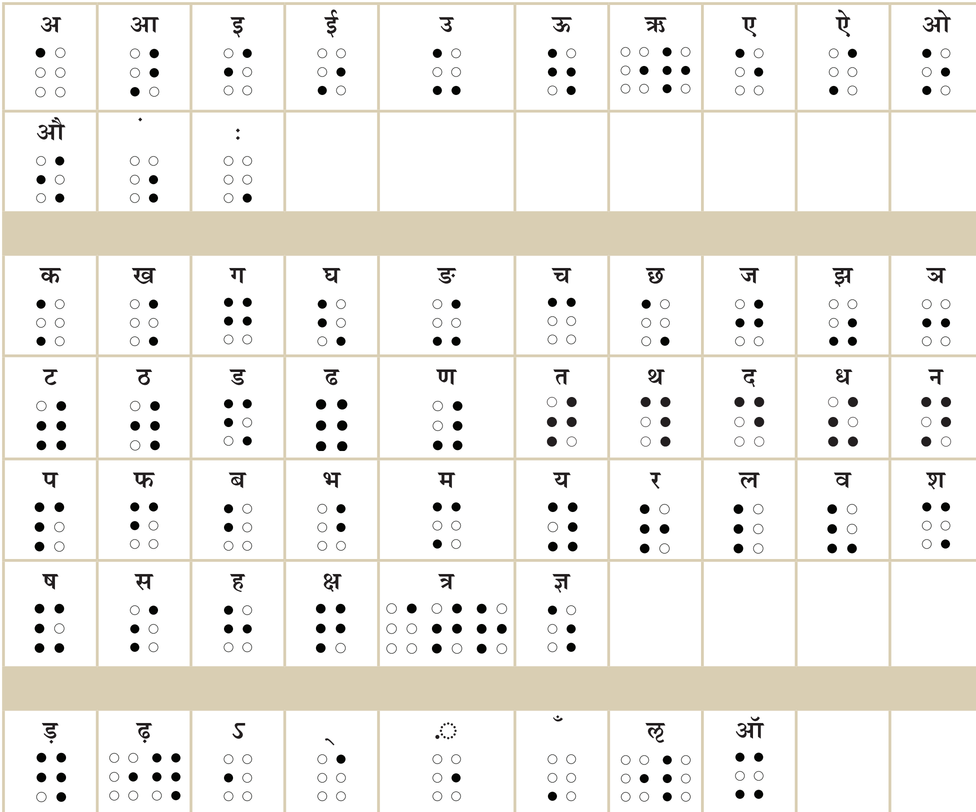

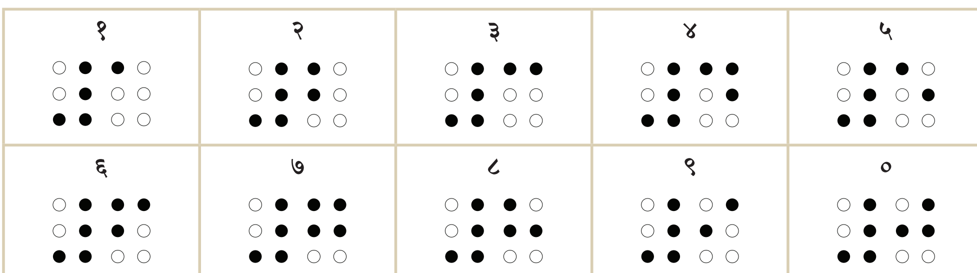

पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
1.	माँ, कह एक कहानी	आज की पहेली	माँ, पक्षी, सुरभि
2.	तीन बुद्धिमान	आज की पहेली	गिरगिट, नीला डिब्बा
4.	पानी रे पानी	आज की पहेली	मेह, जलाशय, नीर, अंबु, सर, सरोवर, सलिल, ताल, तटिनी, बारिश, प्रवाहिनी, तरंगिणी
5.	नहीं होना बीमार	आज की पहेली	आलू का पराठा, मसाला डोसा, वड़ा पाव, ढोकला, पानी पूरी, मक्के की रोटी, बाटी, रसगुल्ला
7.	वर्षा बहार	आज की पहेली	ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, वसंत ऋतु, शीत ऋतु, पतझड़
8.	बिरजू महाराज से साक्षात्कार	आज की पहेली	रूपक, लक्ष्मी, तिलवाड़ा, कहरवा, झूमरा, दीपचंदी, दादरा
9.	चिड़िया	आज की पहेली	तोता, कौवा, खंजन, कोयल, कबूतर, चातक, हंस
10.	मीरा के पद	मधुर ध्वनियाँ	बाँसुरी, तबला, शहनाई, वीणा, ढोलक, बीन, संतूर, मजीरा
		आज की पहेली	आवन, घुमड़, नगर, गोपाल

मेरी अभिव्यक्ति